

NAAM RAKHNE KE AHKAM (HINDI)

बच्चों के नाम रखने के लिये इस किताब में सेंकड़ों अच्छे नामों की  
फ़ेहरिस्त भी शामिल है



# नाम रखने के अहंकार



حَسِيبٌ أُمّ الْأَخْيَرِ الْوَمْرِيمُ سُلَيْمَانُ مُحَمَّدٌ  
ابْنُ قَاسِمٍ عَبْدُ الرَّحْمَنِ عَبْدُ اللَّهِ الْأَخْرَجِ



**الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ النَّبِيِّنَ إِمَّا بَعْدَ فَاغْوَى اللّٰهُ مِنَ الشَّيْطَنِ الرَّجِيمِ سُمِّ اللّٰهُ الرَّحْمَنُ الرَّجِيمُ ط**

## ਕਿਤਾਬ ਪढਨੇ ਕੀ ਫੁਆ

ਅਜੁ : ਸ਼ੈਖੇ ਤਰੀਕਤ, ਅਮੀਰੇ ਅਹਲੇ ਸੁਨਤ, ਬਾਨਿਯੇ ਦਾ'ਵਤੇ ਇਸਲਾਮੀ, ਹਜ਼ਰਤੇ ਅਲਲਾਮਾ ਮੌਲਾਨਾ ਅਬੂ ਬਿਲਾਲ ਮੁਹੱਮਦ ਇਲਾਸ ਅੜਾਰ ਕਾਦਿਰੀ ਰ-ਜ਼ਕੀਵੀ

दीनी किताब या इस्लामी सबक पढ़ने से पहले जैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये إِنَّ شَاءَ اللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ यह है:

اللَّهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَإِذْشِرْ عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْأَكْرَامِ

**तर्जमा :** ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلُّ ! हम पर इस्मो हिक्मत के दरवाजे खोल दे

और हम पर अपनी रहमत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुजुर्गी वाले ।

(المُسْتَطْرِق ج ١ ص ٢٠ دار الفكر بيروت)

**नोट :** अव्वल आखिर एक एक बार दुर्घट शरीफ पढ़ लीजिये।

तालिबे गुमे मदीन

ਕੁਝ ਗੁਰੂ

व मग़ाफिरत



13 शब्वालुल मुकर्म 1428 हि.

## क्रियामत के रोज़ हसरत

फरमाने मुस्तकः : صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ सब से ज़ियादा हँसरत कियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इल्म हासिल करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने हासिल न किया और उस शख्स को होगी जिस ने इल्म हासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़अ़ उठाया लेकिन उस ने न उठाया (या'नी उस इल्म पर अमल न किया)

(تاریخ دمشق لابن عساکر، ج ٥١ ص ١٣٨ دار الفکر بیروت)

• किताब के खरीदार मूलवज्जेह हों

किताब की तबाअ़त में नुमायाँ ख़राबी हो या सफ़हात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो मक्कलतुल मदीना से रुजूअ़ फरमाइये।

## મજાલિસે તરાજિમ (હિન્દી-ગુજરાતી) દા'વતે ડુખલામી

तब्लीगे कुरआनो सुन्नत की आलमगीर गैर सियासी तहरीक दा 'वते इस्लामी की मजलिस "अल मदीनतुल इल्मय्या" ने येह किताब "नाम रखने के अवधारणा" उर्दू ज़बान में पेश की है।

मजलिसे तराजिम, बरोडा (हिन्दी-गुजराती) ने इस किताब को हिन्दू की राष्ट्रिय भाषा “हिन्दी” में रस्मुल ख़त् (लीपियांतर) करने की सआदत हासिल की है [भाषांतर (TRANSLATION) नहीं बल्कि सिर्फ़ लीपियांतर (TRANSLITERATION) या’नी ज़बान (बोली) तो उर्दू ही है जब कि लीपि (लिखाई) हिन्दी रखी है] और मक्तबतल मदीना से शाएए करवाया है।

इस किताब का हिन्दी रस्मुल ख़त् करते हुवे दर्जे जैल मुआमलात को पेशे नजर रखने की कोशिश की गई है :-

﴿1﴾ कमो बेश दस<sup>(10)</sup> मराहिल सर अन्जाम दिये गए हैं, जो येह है :-

(1) कम्पोर्जिंग (2) सेटिंग (3) कम्पयूटर तकाबुल (4) तकाबुल बिल किताब  
(5) सिंगल रीडिंग (6) कम्पयूटर करेक्शन (7) करेक्शन चेर्किंग (8) फ़ाइनल  
रीडिंग (9) फ़ाइनल करेक्शन (10) फ़ाइनल करेक्शन चेर्किंग।

② करीबुस्सौत् (या'नी मिलती झुलती आवाज़ वाले) हुरूफ़ के आपसी इमतियाज़ (या'नी फ़र्क़) को वाजेह करने के लिये हिन्दी के चन्द मख्सूस हुरूफ़ के नीचे डोट (.) लगाने का खुसूसी एहतिमाम किया गया है जिस की तप्सीली मा'लमात के लिये तशजिम चार्ट का बगौर मतालआ फरमाएं।

**(3)** हिन्दी पढ़ने वालों को सही ह उर्दू तलफ़ुज़ भी हिन्दी पढ़ने ही में हासिल हो जाएँ इस लिये आसान मगर अस्ल उर्दू लुग़त के तलफ़ुज़ के ऐन मुताबिक ही हिन्दी-जोड़णी रखी गई है और बतौरे ज़रूरत ब्रेकेट में उर्दू लफ़्ज़ हिज्जे के साथ ऐ'राब लगा कर रखा गया है। नीज़ उर्दू के मफ़्तूह (ज़बर वाले) हर्फ़ को वाज़ेह करने के लिये हिन्दी के अक्षर (हर्फ़) के पहले डेश (-) और साकिन (ज़ज़म वाले) हर्फ़ को वाज़ेह करने के लिये हिन्दी के अक्षर (हर्फ़) के नीचे खोड़ा (۔) इस्ति'माल किया गया है। मषलन ڈ़-लमा (لِمَاء) में “-ल” मफ़्तूह और रहम (رَحْم) में “ह” साकिन है।

(4) उर्दू में लफ़्ज़ के बीच में जहां कहीं ऐन साकिन (۲) आता है उस की जगह पर हिन्दी में सिंगल इन्वर्टेड कोमा (') इस्ति'माल किया गया है।  
जैसे : दा'वत (دُعَوْت)

(5) अरबी-फ़ारसी मतन के साथ साथ अरबी किताबों के हवालाजात भी अरबी ही रखे गए हैं जब कि "عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَالْإِيمَانُ" "عَزَّوَجَلَّ" और "رَغْفَى اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ" वग़ैरा को भी अरबी ही में रखा गया है।

इस किताब में अगर किसी जगह कमी-बेशी या ग़लती पाएं तो **مजलिसे तरजिम** को (ब ज़रीअ़ मक्तूब, e-mail या sms) मुत्तलअ़ फ़रमा कर षवाब कमाइये।

### उर्दू से हिन्दी (२स्मुल ख़त) का तरजिम चार्ट

ت = ت	ف = ف	پ = پ	भ = بھ	ب = ب	ا = ا
ڈ = ڈ	ج = ج	ष = ٿ	ڻ = ڻ	ट = ٿ	थ = ٿ
ڏ = ڏ	ٺ = ٺ	ڏ = ڏ	ڏ = ڏ	خ = خ	ه = ه
ڙ = ڙ	ڙ = ڙ	ڙ = ڙ	ڙ = ڙ	ڙ = ڙ	ڙ = ڙ
ا = ا	ج = ظ	ت = ط	ج = ض	س = ص	ش = ش
گ = گ	خ = کھ	ک = ک	ک = ق	ف = ف	غ = غ
ي = ي	ہ = ه	و = و	ن = ن	م = م	ل = ل
۱ = ۱	۹ = ۹	۷ = ۷	۵ = ۵	۳ = ۳	۰ = ۰

-: राबिता :-

मजलिसे तरजिम, मक्तबतुल मदीना (दा'वते इस्लामी)

मदनी मर्कज़, क़ासिम हाला मस्जिद, सेकन्ड फ़्लोर,  
नागर वाड़ा मेन रोड, बरोडा, गुजरात, अल हिन्द

Mo. + 91 9327776311

E-mail : [translation.baroda@dawateislami.net](mailto:translation.baroda@dawateislami.net)

याद द्वाश्त

दौराने मुतालआ ज़रूरतन अन्डर लाइन कीजिये, इशारात लिख कर सफहा नम्बर नोट फुरमा लीजिये । **इल्म** में तरक्की होगी ।

کیا مات کے دین تु م اپنے اُبھر اپنے آبا کے  
ناموں سے پُکارے جاؤ گے لیہاڑا اپنے اُچھے نام رکھا کرو

(ابو داؤد، حدیث: ۳۷۴/۴)

# نام رکھنے کے احکام

- : پeshaksh :-

مجالیسے اُل مداری نتولِ اسلامیہ  
(شو'بائِ اسلامیہ کوئٹہ)

- : ناشر :-

**421**, عرب مارکیٹ, مटیا مہال, جامیع مسجد, دہلی-**110006**

فون : **011-23284560**

e-mail : [maktabadelhi@gmail.com](mailto:maktabadelhi@gmail.com)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

نامِ کتاب : نامِ رَخْنَةَ كَهُ الْأَحْكَام

پیشکش : مجالیسے اعلیٰ مداری نتولِ اسلامیہ (شو'بادِ اسلامیہ کوتوب)

ہندی رسمیل خٹ : مجالیسے تراجمی، بارڈا

ناشر : مکتبتُ الْمَدِيْنَةِ، دہلی - 6

سینے تباہ اُت : شاہزادی علیل مُوکَرَّم، سی. 1435ھ.

کیمیت : - - -

### تَسْدِيقُ الْنَّامَةِ

تاریخ : 7 سفیر 1435ھ.      حوالہ : 192

الحمد لله رب العالمين والصلوة والسلام على سيد المرسلين وعلى آله واصحاه به اجمعين

تَسْدِيقُ الْنَّامَةِ

“نامِ رَخْنَةَ كَهُ الْأَحْكَام” (لَدْبُع)

(مات بُو عَلِیٰ مکتبتُ الْمَدِيْنَةِ) پر مجالیسے تَضْمِنَةَ کوتوبِ رساۓ ایل کی جانیب سے نجڑے پانی کی کوشش کی گई ہے۔ مجالیس نے اسے اُکاؤنٹ، کُونٹری ڈیوارات، اخْلَاقِ اکیلیۃ، فیکھی مسائیل اور اُرُبی ڈیوارات وغیرہ کے حوالے سے مکہم بھر مُلَاہِ جا کر لیا ہے، اُلَّا بَتْتَہ کامپویزینگ یا کیتابت کی گلتریوں کا جیمما مجالیس پر نہیں۔



مجالیسے تَضْمِنَةَ کوتوبِ رساۓ ایل  
(دا'وَتِ اسلامی)

12-11-2013

E-mail : ilmiapak@dawateislami.net

مَدْنَى إِلْتِजَاءُ : كِسَيْ أَوْرَ كَوْ يَهُ كِتَابَ قَاهَنَنَهُ كَيْ إِجَاجَتَ نَهَيْنَ !

الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلٰوٰةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ النُّبُوٰسِلِينَ  
أَمَّا بَعْدُ! فَاعُوذُ بِاللّٰهِ مِنَ السَّيِّطِنِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ

## “ब्रकत वाले नाम” के व्याख्या हुस्तफ़ की निखत से इस किताब के पढ़ने की “11 नियतें”

فَرَمَانَهُ مُسْتَفْكَهُ نَبِيُّهُ مُحَمَّدٌ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰيهِ وَسَلَّمَ عَلٰى مَنْ خَيْرٌ مِنْ عَمَلِهِ :

(معجم كبير، ۱/۵۸۱، حدیث: ۲۴۹۰)

दो मदनी फूल :

**﴿1﴾** बिगैर अच्छी नियत के किसी भी अमले ख़ेर का षवाब नहीं मिलता ।

**﴿2﴾** जितनी अच्छी नियतें ज़ियादा, उतना षवाब भी ज़ियादा ।

(1) हर बार हम्द व (2) सलात और (3) तअब्वुज़ व  
(4) तस्मिय्या से आग़ाज़ करूँगा (इसी सफ़हे पर ऊपर दी हुई दो अरबी इबारात पढ़ लेने से चारों नियतों पर अमल हो जाएगा )  
(5) हत्तल वस्थ इस का बा बुज़ और (6) क़िब्ला रू मुत्तलअ़ करूँगा (7) कुरआनी आयात और (8) अह़ादीषे मुबारका की ज़ियारत करूँगा (9) जहां जहां “**अल्लाह**” का नामे पाक आएगा वहां **غَرَّ جَل** और (10) जहां जहां “**सरकार**” का इस्मे मुबारक आएगा वहां **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰيهِ وَسَلَّمَ** पढ़ूँगा । (11) किताबत वगैरा में शरई ग़लती मिली तो नाशिरीन को तहरीरी तौर पर मुत्तलअ़ करूँगा । (मुसन्निफ़ या नाशिरीन वगैरा को किताबों की अगलात़ सिर्फ़ ज़बानी बताना ख़ास मुफीद नहीं होता )

الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ  
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَنِ الرَّجِيمِ طَبَسِمُ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ ط

## अल मदीनतुल इल्मया

अज़ : बानिये दा'वते इस्लामी, आशिके आ'ला हज़रत, शैखे  
त्रीकृत, अमीरे अहले सुन्नत हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल  
मुहम्मद इल्म्यास अन्तार कादिरी रज़वी ज़ियाई

الحمد لله على إحسانه وفضل رسوله صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ

तब्लीगे कुरआनो सुन्नत की आलमगीर गैर सियासी तहरीक  
“दा'वते इस्लामी” नेकी की दा'वत, इहयाए सुन्नत और इशाअते  
इल्मे शरीअत को दुन्या भर में आम करने का अऱ्जमे मुसम्मम  
रखती है, इन तमाम उम्र को ब हुस्नो खूबी सर अन्जाम देने के  
लिये मुतअ़द्दिद मजालिस का कियाम अमल में लाया गया है  
जिन में से एक मजालिस “अल मदीनतुल इल्मया” भी है  
जो दा'वते इस्लामी के ड़-लमा व मुफ्तियाने किराम كَفَرُهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰى  
पर मुश्तमिल है, जिस ने ख़ालिस इल्मी, तहकीकी और इशाअती  
काम का बीड़ा उठाया है। इस के मुन्दरिजए जैल छे शो'बे हैं :

- |                             |                         |
|-----------------------------|-------------------------|
| ﴿1﴾ शो'बए कुतुबे आ'ला हज़रत | ﴿2﴾ शो'बए दर्सी कुतुब   |
| ﴿3﴾ शो'बए इस्लाही कुतुब     | ﴿4﴾ शो'बए तराजिमे कुतुब |
| ﴿5﴾ शो'बए तफ़्तीशे कुतुब    | ﴿6﴾ शो'बए तख़रीज        |

## “ۃل مذہن تُولِّیلِمَّا” کی اُبُولیٰن ترجمہ

سراکارے آ’لہا هجڑت، امامے اہلے سُنّت، اُجھیں مول بارکت،  
 اُجھیں مول مرتبت، پر واپس شامِ ریسالت، مُعْجَدِ دینو میللت،  
 ہما میہ سُنّت، ماحیہ بید اُت، اُلیٰ می شری اُت، پیرے تریکت،  
 باڈیہے خیرے بارکت، هجڑتے اُلّاما مولانا اعلہا ج اُل  
 حافظ اُل کاری اششاہ ایم احمد رجاء خان  
 علیہ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن کی گیراں مایہ تسانیف کو اُسے ہاجیر کے  
 تکاچوں کے معتابیک ہتھ ل وس اُ سہل عسلوب میں پے ش کرنا ہے ।  
 تماام اسلامی باری اور اسلامی بہنے اس ایلمی، تھکنیکی  
 اور ایشا اُتری مدنی کام میں ہر مومکن تआکوں فرمائے اور  
 مجاہدیں کی ترک سے شاء اُ ہونے والی کو تکوں کا خود بھی  
 معتاً ایم فرمائے اور دوسروں کو بھی اس کی ترکیب دیتا ہے ।

**ۃل مذہن تُولِّیلِمَّا** کی تماام  
 مجاہدیں ب شمعوں “ۃل مذہن تُولِّیلِمَّا” کو دین  
 گیارہوں اور رات بارہوں ترکنی اُتھا فرمائے اور ہمارے  
 ہر اُملاخے خیر کو جو کرے ای خلسا سے آرائستا فرمائے کر دوئوں  
 جہاں کی بھلائی کا سبب بنائے । ہمے جو کرے گوئے خجڑا  
 شہادت، جنن تکوں بکنی اُ میں مدد فن اور جنن تکوں فیر دیس میں  
 جگہ نسیب فرمائے ।

اوین بجاک اللہی الامین ﷺ



رمضان نویں مبارک 1425ھ.

الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلٰوٰةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ النُّرُسُلِيْنَ  
أَمَّا بَعْدُ فَاعُوذُ بِاللّٰهِ مِنَ السَّيِّطِنِ الرَّجِيمِ طَبِّسِمُ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ

دُرُّد پढ़ने वाले का नाम बारगाहे रिसालत में पेश किया जाता है

سُلْطَانे दो जहान, मदीने के सुल्तान, रहमते आलमिय्यान,  
सरवरे ज़ीशान का فَرماने جनत निशान है :  
बेशक **अल्लाह** نے एक फ़िरिश्ता मेरी क़ब्र पर मुकर्रर  
फ़रमाया है जिसे तमाम मछ्लूक की आवाजें सुनने की ताकत  
अ़त़ा फ़रमाई है, पस कियामत तक जो कोई मुझ पर दुर्लदे पाक  
पढ़ता है तो वो ह मुझे उस का और उस के बाप का नाम पेश करता  
है कि फुलां बिन फुलां ने आप पर इस वकृत दुर्लदे पाक पढ़ा है।

(مسند البزار، ٤، حديث: ٢٥٥ / ٤)

سُبْحَانَ اللّٰهِ عَزَّوَجَلَّ دُرُّد شَرِيفٌ پَدَنَے واللّٰهِ عَزَّوَجَلَّ  
نَسَيْبٌ है कि उस का नाम मअ् वलदिय्यत बारगाहे रिसालत  
में پेश किया जाता है।

बे निशानों का निशां मिटता नहीं

मिटते मिटते नाम हो ही जाएगा

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلُّوا عَلَى مُحَمَّدٍ

سَرَكَارे مَدْبِيَنَا صَلُّوا عَلَى عَلَيِّهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ نَامَ پूछा کरतے

سरकारे मदीनए मुनव्वरा, सरदारे मक्कए मुकर्रमा

जब किसी को आमिल (ज़कात व उशर वगैरा  
हासिल करने वाला ज़िम्मेदार) बना कर भेजते तो उस का नाम

पूछते, अगर उस का नाम आप ﷺ को पसन्द आता तो खुश होते और उस की खुशी आप ﷺ के चेहरे पर देखी जाती और अगर उस का नाम नापसन्द होता तो उस की नापसन्दीदगी आप ﷺ के चेहरे पर देखी जाती । (ابو داؤد،كتاب الطلب،باب في الطيرة،٢٥/٤،Hadith: ٣٩٢٠)

मुफ़सिस्मिরे शहीर हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ इस हडीषे पाक के तहूत लिखते हैं : इस लिये ड़-लमा फ़रमाते हैं कि अपनी अवलाद के नाम अच्छे रखो, नाम का अघर नाम वाले पर पड़ता है । बुरे नाम वाले को लोग अपने पास नहीं बैठने देते । अच्छे नाम वाले के काम भी अच्छे होते हैं । (मिरआतुल मनाजीह, 6/263)

**صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ**  
**नाम बच्चे के लिये पहला तौहफ़ है**

नाम किसी भी आदमी की शरिक्यत का अहम हिस्सा होता है जिस से वोह पहचाना और पुकारा जाता है । घर, ख़ानदान, मह़ल्ले, स्कूल, मद्रसे, जामिअ़ा, बाज़ार और दफ़तर में नाम ही उस की शनाख़त होता है जिस त़रह कि किताब का नाम उस की शनाख़त होता है । कई मरतबा नाम घरेलू माहोल और तहज़ीबी रिवायात की अ़ककासी भी करता है । नाम अच्छा हो तो इन्सान का ज़मीर उसे काम भी अच्छा करने की तरगीब देता रहता है । बच्चे के पैदा होते ही उस का नाम रखने के लिये गौरो फ़िक्र शुरूअ़ हो जाता है, ऐसे में बाप को चाहिये कि अपने बच्चे का

अच्छा नाम रखे कि येह उस की तरफ़ से अपने बच्चे के लिये पहला और बुनयादी तोहफ़ा होता है जिसे बच्चा उम्र भर अपने सीने से लगाए रखता है। सरकारे मदीनए मुनव्वरा, सरदारे मक्कए मुकर्मा औं मَا يُجِّعِلُ الرَّجُلُ وَلَدَهُ اسْمِهِ فَلَيُحِسِّنَ اسْمَهُ نे फ़रमाया : حَلَّ اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَاللَّهُ وَسَلَّمَ या'नी आदमी सब से पहला तोहफ़ा अपने बच्चे को नाम का देता है इस लिये चाहिये कि उस का नाम अच्छा रखे।

(جامعة الجواجم، ٢٨٥/٣، حديث: ٨٨٧٥)

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** किसी के हां बच्चा पैदा हो तो  
मुबारक बाद देने के बा'द वालिदैन से उम्रूमन येही सुवाल होता है कि  
**नाम क्या रखा ?** बसा अवक़ात बच्चे का वालिद अपने दोस्त  
अहंबाब और रिश्तेदारों से पूछता दिखाई देता है कि **नाम क्या रखें ?**

नाम कैसा होना चाहिये ? नाम कौन रखे ? कौन सा नाम रखना अपृज्ञल है ? कौन से नाम रखना नाजाइज़ है ? किसी का नाम बिगाड़ना कैसा ? कुन्यत किसे कहते हैं ? कुन्यत रखने की क्या अहम्मिय्यत है ? लक़्ब क्या होता है ? जेरे नज़र किताब “नाम रखने के अहकाम” (जिस का नाम शैख़े तरीक़त अमीरे अहले सुन्नत हज़रते अल्लामा मौलाना मुहम्मद इल्यास अन्तार क़ादिरी دامت برکاتُهُمُ الْعَالِيَةُ ने अन्ता फ़रमाया है) इस किताब में इसी नौइय्यत की मालूमात फ़राहम करने की कोशिश की गई है, बच्चों और बच्चियों के नाम रखने के लिये 538 अच्छे नामों की फ़ेहरिस भी शामिले किताब है। इस किताब को ख़ूब समझ कर कम अज़ कम तीन मरतबा पढ़िये और दूसरों को भी पढ़ने की तरगीब दीजिये। (शोबाए इस्लाही कतब अल मदीनतुल इल्मिय्या)

## कियामत के दिन नाम से पुकारा जाएगा

नाम का तअल्लुक़ सिफ़्र दुन्यावी जिन्दगी तक नहीं बल्कि जब मैदाने हऱ्हर क़ाइम होगा तो इन्सान को इसी नाम से मालिके काइनात **غَرْوَجَلٌ** के हुज़ूर बुलाया जाएगा जिस नाम से उसे दुन्या में पुकारा जाता है, जैसा कि हज़रते सच्चिदुना अबू दरदा **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** से मरवी है कि हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सच्चाहे अफ़्लाक **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَإِلَهَ وَسَلَّمَ** ने **فَرَمَّاَكُمْ** : कियामत के दिन तुम अपने और अपने आबा के नामों से पुकारे जाओगे लिहाज़ा अपने अच्छे नाम रखा करो । (ابو داؤد،كتاب الادب،باب في تغيير الأسماء،٣٧٤/٤،حدیث: ٤٩٤٨)

**صَلُّوا عَلَى الْحَكِيمِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ**  
**अपने कच्चे बच्चों का भी नाम रखें**

बच्चों का नाम रखना इतना अहम है कि जो बच्चे मां के पेट में ज़ाएँ अ़ हो जाएं उन का भी नाम रखने की ताकीद की गई है चुनान्चे, हज़रते सच्चिदुना अबू हुरैरा **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** से रिवायत है कि सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَإِلَهَ وَسَلَّمَ** ने इशाद **فَرَمَّاَكُمْ** : अपने कच्चे बच्चों का भी नाम रखो कि ये ह कच्चे बच्चे तुम्हारे पेशरव (आगे आगे चलने वाले या आगे गुज़रने वाले) हैं । (كنز العمال،كتاب النكاح،الباب السابع،الجزء ٦،حدیث: ٤٥٠٦)

एक हृदीषे पाक में तो यहां तक इशाद हुवा कि कच्चा बच्चा नाम न रखने की सूरत में बारगाहे इलाही **غَرْوَجَلٌ** में वालिदैन की शिकायत करेगा कि इन्हों ने मेरा नाम न रख कर मुझे ज़ाए़ अ़ कर दिया । चुनान्चे, हज़रते सच्चिदुना अनस **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** **فَرَمَّاَكُمْ** हैं कि मैं ने सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَإِلَهَ وَسَلَّمَ**

को फ़रमाते हुवे सुना : कच्चे बच्चे का भी नाम रखो कि इन के सबब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हारे मीज़ान के पलड़े को भारी करेगा, बेशक कच्चा बच्चा कियामत के दिन अर्जु करेगा : ऐ मेरे रब ! इन्हों ने मेरा नाम न रख कर मुझे जाएअू कर दिया ।

(كنز العمال، كتاب النكاح، الباب السابع، جزء ٦، ص ١٧٥، حديث: ٤٥٢٠٧)

‘‘सिक्त’’ या’नी कच्चे बच्चे की वज़ाहत करते हुवे मुफ्ती  
 अहमद यार ख़ान नईमी رحمهُ اللہِ تعالیٰ عَلَيْهِ ف़رماते हैं: अरबी में ‘‘सिक्त’’  
 वोह बच्चा कहलाता है जो छे माह पूरे होने से पहले शिकमे मादर  
 (या’नी मां के पेट) से खारिज हो जाए। (मिरआतुल मनाजीह, 2/519)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ!

## बच्चा फैत हो जाएँ तो ?

दा'वते इस्लामी के इशाअृती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत्बूआ **1250** सफ़हात पर मुश्तमिल किताब बहारे शरीअृत (जिल्द 1) सफ़हा **841** पर है : बच्चा ज़िन्दा पैदा हुवा या मुर्दा उस की ख़िल्क़त (या'नी पैदाइश) तमाम (या'नी मुकम्मल) हो या ना तमाम (ना मुकम्मल) बहर हाल उस का नाम रखा जाए और क़ियामत के दिन उस का ह़शर होगा (या'नी उठाया जाएगा) (बहारे शरीअृत, **3/659**, ١٥٣/٣) (لَدْرِ مُخْتَار، لَدْرِ) लड़का हो तो लड़कों का सा और लड़की हो तो लड़कियों का सा नाम रखा जाए और मा'लूम न हो सका कि लड़की है या लड़का तो ऐसा नाम रखा जाए जो मर्द व औरत दोनों के लिये हो सकता हो । (मषलन : राहत, नुस्त, तस्लीम वगैरा) (बहारे शरीअृत, **3/603**)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ!

## नाम कब रखें ?

अपन्नल येह है कि सातवें दिन बच्चे का अँकीका किया जाए और नाम रखा जाए, अँकीका करने से पहले भी नाम रखना जाइज है। (नुजहतुल कारी, 5/430), हजरते सच्चिदुना अम्प्र बिन शो'ऐब رضي الله تعالى عنه से रिवायत है : नबिये करीम, रऊफुरहीम صلى الله تعالى عليه وسلم ने बच्चे की पैदाइश के सातवें दिन उस का नाम रखने का हुक्म इरशाद फरमाया।

(ترمذى، كتاب الادب، باب ملائكة في تعجیل اسم المولود، ٣٨٠/٤، حدیث: ٢٨٤١)

صَلَوَاتُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ صَلَوَاتُ الْحَمْدِ!

## नाम कौन रखेगा ?

नाम रखने की ज़िम्मेदारी बुन्यादी तौर पर बच्चे के वालिद  
की बनती है, सरकारे मदीना ﷺ ने फ़रमाया :  
अवलाद का वालिद पर येह हक़्क़ है कि उस का अच्छा नाम रखे  
और अच्छा अदब सिखाए ।

(شعب اليمان، باب في حقوق الاولاد والاهلين، ٤٠٠/٦، حديث: ٨٦٥٨)

हज़रते اُल्लामा اُब्दुर्रऊफ़ मनावी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْبَارِى اس  
हृदीष के तहूत नक्ल करते हैं : उम्मत को अच्छा नाम रखने का  
हुक्म देने में इस बात पर तम्बीह है कि आदमी के काम उस के  
नाम के मुताबिक़ होने चाहियें क्योंकि नाम इन्सान की शख्सियत  
के लिये जिस्म की तरह होता और उस की शख्सियत की  
अवकासी करता है । **اعلیٰ جل جل** की हिक्मत इस बात का

तकाज़ा करती है कि नाम और काम में मुनासबत और तअल्लुक हो। नाम का अषर शख्स्यत पर और शख्स्यत का अषर नाम पर ज़ाहिर होता है। (فِيضُ الْقَدِيرِ، ٢٠٢٢/٥٢٤٥، تَحْتُ الْحَدِيثِ)

**मुफस्सिरे शहीर हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ्ती अहमद यार ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ इस हडीषे पाक के तहूत लिखते हैं : अच्छे नाम का अषर नाम वाले पर पड़ता है, अच्छा नाम वोह है जो बे मा'ना न हो जैसे बुधवा, तलवा वगैरा और फ़ख़्र व तकब्बुर न पाया जाए जैसे बादशाह, शहनशाह वगैरा और न बुरे मा'ना हों जैसे आसी वगैरा । बेहतर येह है कि अम्बियाएँ किराम عَلَيْهِنَّ الْكَلَمُوُدُ السَّلَامُ के सहाबए इज़ज़ाम, अहले बैते अत़हार رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمْ के नामों पर नाम रखे जैसे इब्राहीम व इस्माईल, उषमान, अ़ली, हुसैन व हसन वगैरा, औरतों के नाम आसिया, फ़तिमा, आइशा वगैरा और जो अपने बेटे का नाम मुहम्मद रखे वोह إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ بَرَخْشًا जाएगा और दुन्या में उस की बरकात देखेगा । (मिरआतुल मनाजीह, 5/30)

**صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلُّوا عَلَى مُحَمَّدٍ**  
**हमारे मुआशरे में नाम रखने के मुख्तलिफ़ अन्दाज़**

बच्चे या बच्ची (बिलखुसूस पहली अवलाद) की पैदाइश के बा'द उमूमन क़रीबी रिश्तेदारों मषलन दादी, नानी, फूफी, ख़ाला, ताया चचा वगैरा का इस्तार होता है कि इस का नाम मैं रखूँगा और हर एक अपनी पसन्द का नाम भी चुन कर ले आता है। अगर वालिद राज़ी हो तो इस में हरज नहीं लेकिन अहम बात येह है कि नाम रखने वाले बा'ज़ अवक़ात दीनी मा'लूमात की कमी की वजह से बच्चों के ऐसे नाम भी रख देते हैं जो शरअन

نا جاہجُ ہوتے ہیں یا جین کے مआنی اچھے نہیں ہوتے، اسے نام رکھنے سے باہر ہاٹل بچا جائے۔ والیدن کی بُخَاہیش ہوتی ہے کہ ان کے بیٹے یا بیٹی کا نام نیہایت ہی خوب سُورت ہو، مگر نام کے ہٹمی انٹیخاب کے وکٹ اُلْفَاجُ کی جاہیری خوب سُورتی کا خیال تو ہوتا ہے لیکن دیگر پہلے اُن پر تباہ ہ نہیں ہوتی چنانچہ، بآ'جُ اور کات لوگ اہلےِ اسلام سے اسے اسے ناموں کے مआنی پُڑتے ہیں جو ڈرد، اُربی یا فارسی کسی لुگت میں نہیں میلتے، جاہیر ہے اس ترہ کے بے ما'نا نام رکھنا بھی مُناسِب نہیں ।

### نام کیسا ہونا چاہیے؟

اس ہواں سے مدنی فُل اُٹا کرتے ہوئے سدھششانیا، بدرُتُریکا ہجُرے اُلّاما مولانا مُفْتی مُحَمَّد امجد اُلیٰ آ'جُمی عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ وَسَلَامٌ بہارے شری اُٹ میں لیکھتے ہیں : اسے نام رکھنا جس کا جِکر ن کروانے مجبود میں آیا ہے، ن ہدیش میں ہو، ن مُسالمانوں میں اسے نام مُسْتَمَل ہو، اس میں ڈلما کو ایکیلا ف ہے، بہتر یہ ہے کہ ن رکھے । (بہارے شری اُٹ، 3/603) مدنی مشکرا ہے کہ والید یا رشیددار بچے کا جو بھی نام مُنْتَخَب کرئے پہلے اس کے بارے میں مُفْتی یا نے کیرام یا ڈلما اہلے سُنْت دامت فیوضہم سے رہنُمرائی لئے اور اس پر اُمل بھی کرئے । (اپنے شاریٰ مسائیل کے ہل کے لیے دارُل ایضات اہلے سُنْت کے ان نامبُر ج پر بھی راہبیت کیا جا سکتا ہے : **03000220112-5** (وکٹ سُبھ **10** سے **4** بجے تک، **1** سے **2** بجے تک وکٹ باراے نماج و تَمَام اور جُمُعَاء کے دن تا'تیل ہے ।)

**صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلُّ اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ**

## کہیں ہुب्बے جاہ تو نہیں ?

با'جُ اَوْكَاتِ اَسَا نَامَ بَهِ تَلَاشَ كِيَا جَاتَاهُ جَوِيَّ  
घَر، خَانَدَان، مَهْلَلَهُ مَيْنَ دُورِ دُورِ تَكَ كِيسَيَّ كَاهَ نَاهَ، جَوِيَّ  
سُونَهُ فَعَرَنَ كَاهَ تَهَ كِيَ يَهَهُ نَامَ تَوِي پَهَلَيَّ بَارِ سُونَهُ، كَيَسَا  
جَبَرَدَسَتِ نَامَ رَخَاهُ ! يَهَهُ اَلْفَاجُ سُونَ كَاهَ نَامَ رَخَنَهُ وَالَّا  
فُولَهُ نَاهِيَّ سَمَاتَا، لَكِينَ اَسَوَهُ كَوِيَّ اَكَهَهُ كَيَلَيَ سَوَصَ  
لَيَنَهُ چَاهِيَّهُ كِيَ كَہِيَّ يَهَهُ خُوشِيَّ ہُبَّبَهُ جَاَهُ (يَا'نَيِّ تَهَ رَيَفُ كَيَّ  
خَواهِشَ) كَهَ مَرَجُ كَاهَ نَتَيَّجاً تَوِي نَاهِيَّ ?

**صَلَوَاتُ اللَّهِ عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَوَاتُ اللَّهِ عَالَى مُحَمَّدٍ**

## نَامَ رَخَتَهُ وَكَتَهُ اَصَّحَّيَّ نِيَّتَهُ وَلَيَّ

**فَرَمَانَهُ مُسْتَفَضًا**  
نَبَيُّ الْمُؤْمِنِينَ خَيْرُ مِنْ عَبْدِهِ : هُوَ صَلَوَاتُ اللَّهِ عَالَى عَنْيَهُ وَاللهُ وَسَلَّمَ  
مُسَلَّمَانَ كَاهَ نِيَّتَهُ تَسَعَتْ اَمْلَاهُ (مَعْجَمُ كَبِيرٍ، ٦، ٥٨١، حَدِيثٌ: ٢٤٩٥)

### دو مَدَنِيَّ فُولَ :

﴿1﴾ بِغَيْرِ اَصَّحَّيَّ نِيَّتَهُ كَهَ كِيسَيَّ بَهِ اَمْلَاهُ خَيْرِ اَمْلَاهُ نَاهِيَّ  
مِلَّاتَا ।

﴿2﴾ جِتَنَيِّ اَصَّحَّيَّ نِيَّتَهُ جِيَادَا، عَتَنَا بَهَافَابَ بَهِيَ جِيَادَا ।

مَيَّتَهُ مَيَّتَهُ اِسْلَامِيَّ بَهَافَيَوِيَّ ! كَوَيَّ بَهِ جَاَيَجُ كَاهَ اَصَّحَّيَّ  
نِيَّتَهُ سَهَ كِيَا جَاهَ تَهَهُ تَهَهُ اَمْلَاهُ مِلَّاتَا، لِهَاهَجَا اَكَهَهُ  
دَمَ نَامَ رَخَ دَنَهُ كَهَ بَجَاهَ پَهَلَهُ هَسَبَهُ هَاهَلَهُ نِيَّتَهُ تَهَهُ  
مَشَلَنَ ﴿شَرِيَّ اَعْتَدَتَهُ مُتَّابِكَهُ جَاَيَجُ نَامَ رَخَبَنَگا﴾ ﴿جِنَ نَامَهُ كَاهَ  
اَهَادِيَّهُ مُبَارَكَهُ مَيَّتَهُ تَهَهُ اَرَى هُيَّهُ وَهَهَهُ نَامَ رَخَبَنَگا﴾ ﴿نِسْبَتَهُ  
بَرَكَتَهُ تَهَهُ لَنَهُ كَهَ لِيَهُ اَمْبِيَّا اَهَهُ كِيرَامَ، سَهَابَهُ كِيرَامَ اَوَرَ  
دَيَّاَرَ بُوْجُوْرَنَهُ دَيَّاَرَ نَامَ رَخَبَنَگا﴾ ﴿نَامَهُ تَهَهُ لِتَمَّيَّزَهُ  
اِنْتِخَابَهُ كَهَ لِيَهُ اَمْبِيَّا اَهَهُ كِيرَامَ سَهَابَهُ مَشَرَّفَهُ لَوَنَگا﴾ ।

**صَلَوَاتُ اللَّهِ عَالَى مُحَمَّدٍ**

## اللَّٰہُ عَزُوجَلُ کے پاسندیدا نام

اگر کسی بچے کا نام ”ابد“ سے شروع کرنا ہے تو سب سے اپنے نام ابдуاللہ اور ابدرہم ان ہیں । تاجدارِ ریاست، شہنشاہ نبوبت نے ایرشاد فرمایا : ”تمہارے ناموں میں سے **اللَّٰہُ عَزُوجَلُ** کے نجاتیک سب سے جیسا پاسندیدا نام ابдуاللہ اور ابدرہم ان ہیں ।“

(مسلم، کتاب الاداب، باب النہی عن التکنی بابی القاسم... الخ، ص ۱۱۷۸، حدیث: ۲۱۳۲)

**سادھر شریا**، بادر تریکا مဖتی مۇھممەد ۋە مەجد ۋەلى آجاڭىمى لىخىتە ھىن : ئىن دۆنۈن مەن جىيادا اپنەلەن ابىدۇللاھ ھەي كى ابۇدىيىت (يَا'نى ابىد ھونە) كىيىنىڭتىرىت (يَا'نى نىسبتى) ئىلەمە جەت (يَا'نى **اللَّٰہُ عَزُوجَلُ**) كىيىنىڭتىرىت (يَا'نى تەرەف ھەي) । ئىنھىن (يَا'نى ابىدۇللاھ اور ابدرہم ان) كىيىنىڭتىرىت (يَا'نى نىسبتى) دىيەر ئىسما (يَا'نى نام) ھىن ئىن مەن ابۇدىيىت كىيىنىڭتىرىت (يَا'نى نىسبتى) دىيەر ئىسما ئىسفا تىرىتى (يَا'نى تەرەف ھەي)، مېھلەن ابدرہم، ابىدۇل مەلیك، ابىدۇل خەلیل كەنگەرەن । ھەدیە مەن جو ئىن دۆنۈن ناموں كىيىنىڭتىرىت (يَا'نى تەرەف ھەي) تەنەلەن ئىلەمە جەت (يَا'نى شەقىقەت) كىيىنىڭتىرىت (يَا'نى تەرەف ھەي) ।

(بھارے شاری ابىد، 3/601)

**”ابدرہم ان“ ۋە ”ابدۇللاھ“**

**نام مۇكەممەل بولۇنە كېيىنىڭتىرىت بىنادۇن**

**سادھر شریا** مەجید لىخىتە ھىن :

अब्दुल्लाह व अब्दुर्रहमान बहुत अच्छे नाम हैं मगर इस ज़माने में  
येह अकषर देखा जाता है कि बजाए अब्दुर्रहमान उस शख्स को बहुत  
से लोग रहमान कहते हैं और गैरे खुदा को रहमान कहना हराम है।  
इसी तरह अब्दुल ख़ालिक को ख़ालिक और अब्दुल मा'बूद को  
मा'बूद कहते हैं, इस किस्म के नामों में ऐसी नाजाइज़ तरमीम  
(तब्दीली) हरगिज़ न की जाए। इसी तरह बहुत कषरत से नामों में  
तसगीर का रवाज है या 'नी नाम को इस तरह बिगाड़ते हैं जिस से  
हक़्कारत निकलती है और ऐसे नामों में तसगीर हरगिज़ न की जाए  
लिहाज़। जहां येह गुमान हो कि नामों में तसगीर की जाएगी (वहां)  
येह नाम न रखे जाएं दूसरे नाम रखे जाएं। (बहारे शरीअत, 2/426)  
(एक और मकाम पर सदर्शशरीआ लिखते हैं : ) **अल्लाह**  
**عزوجل** के नाम की तसगीर करना कुफ्र है, जैसे किसी का नाम  
अब्दुल्लाह या अब्दुल ख़ालिक या अब्दुर्रहमान हो उसे पुकारने  
में आखिर में अलिफ़ वगैरा ऐसे हुरूफ़ मिला दें जिस से  
तसगीर समझी जाती है। (बहारे शरीअत, 2/426)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

## “અબ્દુલ્લાહ” નામ રખા

صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ سरकारे दो आलम, नूरे मुजस्सम

**19** से ज़ाइद खुश नसीब बच्चों का नाम “अब्दुल्लाह” रखा, ऐसी ही एक रिवायत मुलाहज़ा कीजिये, : चुनान्चे, हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन मुत्ती<sup>رَعِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا</sup> अ से मरवी है कि उन के वालिद ने ख़्वाब में देखा कि उन्हें खजूरों की थैली दी गई, उन्होंने ने नबिय्ये अकरम <sup>صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ</sup> से अपना ख़्वाब बयान किया,

آپ نے فرمایا : ک्या تुम्हारी कोई جौزا  
تم्मीد سے ہے ? ٹنھोں نے ارجمند کی : جی ہاں ! بُنُو لیس (کبیلے) سے  
تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ نے فرمایا : اُنکُریب ٹس کے ہاں تُم्हारा بُئتا پیدا ہوگا । جب  
بچوا پیدا ہوا تو وہ ٹسے نبییے اکرام  
کی خیدمت میں لاء، آپ نے ٹسے خجور کی  
بُعدی دی، ٹس کا نام اُبُدُللاہ رخوا اور ٹس کے لیے بارکات  
کی دُعا فرمائی । (الاصابة، ۲۱۰۷، رقم: ۲۱۰)

**صَلُّواعَلَى الْحَمِيدِ ! صَلُّواعَلَى مُحَمَّدِ !**

### ਇਕ “ਜਿੰਨ” ਕਾ ਨਾਮ “ਅਬੁਲਲਾਹ” ਰਖਾ

ਫرماتے رہے سنیبدونا اُਮیر بین ربی اُبی داؤد رضی اللہ تعالیٰ عنہما  
ہیں کہ ایک بیان میں ہم مککا مسجد میں مُکَرَّر مہمان رَادِهَا اللہُ شَرِفًا وَتَعْظِيْمًا  
سُلطانے اُنسوں جان، رہماتے اُلَّامِیَّان  
کے ساتھ ہے، ہم نے مککے کے اک پہاڑ سے اک گئی آواਜ سُونی جو  
مُشَارِکِ کوئی مسیل مانوں کے خیلے اُبھار رہی تھی । نبییے  
کریم نے فرمایا : یہ شہزادہ ہے اور جس سے  
شہزادہ نے کسی نبی کے خیلے اُسے اُلَّامِیَّان  
کے ہلکا کارکردگی کا ہلکا کارکردگی کا  
اندازہ ہے । بُنُو د میں آپ  
نے ہم سے فرمایا : “**أَبْلَاهُ** نے ٹسے  
اک تاکتवار جین کے جریئے ہلکا کارکردگی کا  
سماں ہے، میں نے ٹس کا نام اُبُدُللاہ رخوا دیا ہے ।” شام کو  
ہم نے ٹس جگہ سے گئی آواج میں یہ اشاعت سُونے :

نَحْنُ قَتْلَنَا مُسْعَرًا لَمَّا طَغَى وَاسْتَكْبَرَ  
وَصَفَرَ الْحَقَّ وَسَنَ الْمُنْكَرًا بِشَتْمِهِ تَبَيَّنَ الْمُظْفَرًا

या 'नी : हम ने मिस्थर (ख़बीष जिन) को क़त्ल कर दिया वोह सरकश और मुतकब्बर था, वोह हमारे कामयाब व कामरान नबी की बदगोई करता था और हक्क का मुन्किर था ।

(الاصابة، ١٤٨٠، رقم: ٣٤٨٥)

### صلوات علی الحبیب! صلی اللہ تعالیٰ علی مُحَمَّدٍ ابدھرہمآن نام رکوا

سراکارے دو اُلَّام، نورے مُعْجَسْسَم کا نام ابُدھرہمآن بھی رخਾ،  
کਈ سਹਾਬਏ کਿਰਾਮ عَلَيْہِمُ الرَّضْوَانُ کا نام ابُدھرہمآن بھੀ رخਾ,  
ਚੁਨਾਂਚੇ، ਹਜ਼ਰਤੇ ਸਥਿਦੁਨਾ ਅਬੂ ਹੁਰੈਰਾ رَضِيَ اللہُ تَعَالَیٰ عَنْهُ ਫਰਮਾਤੇ ਹਨੋ :  
ਜਮਾਨਏ ਜਾਹਿਲਿਯਤ ਮੌਨੇ ਮੇਰਾ ਨਾਮ ਅੰਦੇ ਸ਼ਾਸ਼ਸ਼ (ਸੂਰਜ ਕਾ ਬਨਦਾ)  
ਥਾ, ਫਿਰ ਦੋ ਆਲਮ ਕੇ ਮਾਲਿਕੋ ਮੁਖ਼ਤਾਰ, ਹਬੀਬੇ ਪਰਵਰ ਦਗਾਰ  
ਨੇ ਮੇਰਾ ਨਾਮ ابُدھرہمآن ਰਖਾ ।

(اسد الغابة، ٣٣٧/٦، رقم: ٦٢١٩)

### تُو م “ابُو راشਿد ابُدھرہمآن” ਹੋ

ਹਜ਼ਰਤੇ ਸਥਿਦੁਨਾ ਅਬੂ ਰਾਸ਼ਿਦ ابُدھرہمآن رَضِيَ اللہُ تَعَالَیٰ عَنْهُ  
ਨਬਿਯੇ ਕਰੀਮ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم کੀ ਖਿਦਮਤ ਮੌਨੇ ਅਪਨੀ ਕੌਮ ਕੇ  
**100** ਅਫਰਾਦ ਕਾ ਵਪਦ ਲੇ ਕਰ ਹਾਜ਼ਿਰ ਹੁਵੇ ਔਰ ਦੌਲਤੇ ਈਮਾਨ ਸੇ  
ਨਵਾਜੇ ਗਏ । ਆਪ ਅਪਨੀ ਹਾਜ਼ਿਰੀ ਕਾ ਅਹਵਾਲ ਸੁਨਾਤੇ  
ਹਨੋ ਕਿ ਮੇਰੇ ਸਾਥ ਆਨੇ ਵਾਲੇ ਲੋਗਾਂ ਨੇ ਮੁੜ ਸੇ ਕਹਾ : ਪਹਲੇ ਤੁਮ ਜਾ  
ਕਰ ਨਬਿਯੇ ਕਰੀਮ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم ਸੇ ਮੁਲਾਕਾਤ ਕਰੋ, ਅਗਰ  
ਤੁਮਹੋਂ ਉਨ੍ਹਾਂ ਮੌਨੇ ਪਸਾਨੀਦਾ ਬਾਤ ਨਜ਼ਰ ਆਏ ਤੋ ਹਮੋਂ ਆ ਕਰ ਬਤਾਨਾ ਹਮ

بھی ہاجیری دے گے ورنہ تुم واپس آ جانا ہم لائے جائے گے । میں نے ہاجیر ہو کر کہا : **أَنْعُمْ صَبِيَّاً مُحَمَّدْ** یا' نی سوبھ بخیر اے مُہمَّد ! آپ ﷺ نے فرمایا : یہ اہلے ایمان کا سلام نہیں । میں نے ارج کیا : تو فیر کیس ترہ سلام کرئے ؟ آپ ﷺ نے فرمایا : جب تुم اہلے ایمان کے ہاں آओ تو کہو : میں نے کہا : **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَالْهُ وَسَلَّمَ** آپ ﷺ نے فرمایا : **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَالْهُ وَسَلَّمَ** فیر آپ ﷺ نے میرا نام دار یا فٹ فرمایا : میں نے کہا : اب ہو میں ایمیڈیا ایڈبھول لاتی وال ڈجیٹا । نبی یہ کریم ﷺ نے فرمایا : بالکل تum "اب راشید ابڈورہمماں" ہو । نبی یہ میں اب ڈجیٹ، رسوئے میہت رم **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَالْهُ وَسَلَّمَ** نے میری ڈجیٹ اپڈیٹ فرمائی، میں بیٹھا یا، میں اپنی چادر اور اس سا بڑا فرمایا ।

(جمع الجوامع، ۵۵۱/۱۵، حدیث: ۱۵۱۰۲ ملخصاً)

### اپنے بੇਟے کو نام ابڈورہمماں ۲۷ کے

ہجڑتے سا یہ دننا ابڈورہمماں بین اب ہو سب رہ سہا بی ڈبلے سہا بی ہیں । آپ کا شومار رضی اللہ تعالیٰ عنہ سہا بی کو فٹا میں ریہا ایش پجیر سہا بے کیرام عَنْهُمُ الرَّضُوان میں ہوتا ہے । آپ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے سا ہی بی جا دے ہجڑتے سا یہ دننا خیہ سما رضی اللہ تعالیٰ عنہ میں دادا کے ساتھ را ہتے کلبے نا شاد، مہبوبے ربا ل ڈباد **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَالْهُ وَسَلَّمَ** میرے دادا کے ہاں گا، ہجڑو اکڈس **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَالْهُ وَسَلَّمَ** نے میرے دادا سے پوچھا :

तुम्हारे इस बेटे का नाम क्या है? उन्होंने अर्ज़ की: अज़ीज़। आप  
 ﷺ ने फ़रमाया इस का नाम अज़ीज़ नहीं  
 “अब्दुर्रह्मान” रखो, सब से अच्छे नाम अब्दुल्लाह, अब्दुर्रह्मान  
 और हारिष हैं। (اسد الغابة، ٤٦٦، رقم: ٣٣١٣)

मुफ्सिस्मिरे शहीर हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ्ती अहमद  
 यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ फ़रमाते हैं : अज़ीज़ अस्माए इलाहिया में  
 से हैं इज़्ज़त से बना है, मुसलमान में फ़िरोतनी (या'नी इन्किसारी),  
 इज़्ज़ो नियाज़ चाहिये । (मिरआतुल मनाजीह, 6/420)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ!

# जृस्वरी वजाहत

سادر شری آٹا، بدر علیہ السلام دوست مولانا مسیح احمد علیہ رحمۃ اللہ علیہ و سلّم کے لیے مذکور ہے :  
یہ ن سماں نا چاہیے کہ یہ دونوں نام (یا' نی ابduct لاہ اور ابduct رہمان) مسیح احمد سے بھی اپنے جملے ہیں، کیونکہ  
ہجڑے اور ابduct رہمان کے اس سے پاک مسیح احمد و ابduct ہیں اور جو ابduct یہی ہے کہ یہ دونوں نام خود ابduct تا اعلیٰ  
نے اپنے مہبوب کے لیے مسٹر خوب فرمائے، اگر یہ دونوں نام خودا (غُرَبَيْل) کے نجدیک بहت سے نہ ہوتے  
تو اپنے مہبوب کے لیے پسند ن فرمایا ہوتا । اہمادیت میں  
مسیح احمد نام رکھنے کے بہت فوجاں ایل مجاہد ہیں ।

(बहारे शरीअृत, 3/601)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ!

## अस्माएँ इलाहिया के साथ नाम रखने के मदनी फूल

**अल्लाह** ﷺ के नामों की दो किस्में हैं : ज़ाती और सिफाती, ज़ाती नाम सिफ़ “**अल्लाह**” है। इस ज़ाती नाम को किसी इन्सान के लिये रखना जाइज़ नहीं है अगर अब्द की इज़ाफ़त के साथ “**अब्दुल्लाह**” रखा जाए तो जाइज़ बल्कि बाइषे फ़ज़ीलत है। फिर सिफाती नामों की दो किस्में हैं :

(1) जो **अल्लाह** ﷺ के साथ ख़ास हैं, मषलन : रहमान (हमेशा रहम फ़रमाने वाला), कुदूस (बड़ा पाक), क़य्यूम (अज़ खुद हमेशा क़ाइम रहने वाली ज़ात) वैग़रा, अगर ये ह नाम अब्द की इज़ाफ़त के साथ रखे जाएं मषलन अब्दुल कुदूस, अब्दुल क़य्यूम तो जाइज़ है।

(2) जो नाम **अल्लाह** ﷺ के साथ ख़ास नहीं हैं मषलन : अली, रशीद, कबीर, बदीअू वगैरा, ये ह नाम अब्द की इज़ाफ़त और इस के बिगैर रखना भी जाइज़ है, अलबत्ता इस किस्म के नामों के रखने की सूरत में ये ह ज़रूरी है कि इन नामों के बोह मा'ना मुराद न लिये जाएं जो **अल्लाह** ﷺ की शान के ही लाइक हैं, मषलन : **अल्लाह** ﷺ का “रशीद, कबीर” होना ज़ाती है और मख्लूक के अन्दर ये ह मा'ना अ़ताई हैं। सदरुशशरीआ, बदरुत्तरीक़ा हज़रते अल्लामा मौलाना मुफ्ती मुहम्मद अमजद अली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِيِّ मक्तबतुल मदीना की मतबूआ बहारे शरीअत जिल्द 3 हिस्सा 16 सफ़हा 602 में फ़रमाते हैं : बा'ज़ अस्माएँ इलाहिया जिन का इत्लाक़ (बोला जाना) गैरुल्लाह पर जाइज़ है इन के साथ नाम रखना जाइज़ है, जैसे अली, रशीद, कबीर, बदीअू, क्यूंकि बन्दों के नामों में

وہ ماؤ نا موراد نہیں ہیں جن کا ایرادا **آلہ** تاہلہ پر  
یتلک کرنے (بولنے) میں ہوتا ہے اور ان ناموں میں الیف ک  
لام میلا کر بھی نام رکھنا جائز ہے، مسئلہ ان لفظیں ایسا  
ارشید ہے۔ ہم اس جسمانے میں چونکہ ایسا میں ناموں کی تسلیم  
کرنے کا بکسرت رواج ہے گیا ہے، لیہا جا جہاں اسی گمان ہے  
اسے نام سے بچنا ہی محسوس ہے۔ خوش سان جب کہ اسما  
یلہی کے ساتھ اب کا لفظ میلا کر نام رکھا گیا،  
مسئلہ اب درہیم، اب دل کریم، اب دل اب جیز کہ یہاں  
معجزہ اپنے سے موراد **آلہ** تاہلہ ہے اور اسی سوت میں  
تسلیم (छوٹا کرنا) اگر کسدن ہوتی تو **کوہ** ہوتی،  
کیونکہ یہ اس شک्ष کی تسلیم نہیں بالکل ماؤ بودے بارہک کی  
تسلیم ہے مگر ایسا اور ناوارکیوں کا یہ مکسرد یکین ن  
نہیں ہے، اسی لیے وہ ہوکم نہیں دیا جائے گا بالکل ان کو  
سامنہ آؤ اور بتایا جائے اور اسے ماؤ پر اسے نام ہی ن  
رکھے جائے جہاں یہ اہتمام (گمان) ہے۔ (رِمُختَارُ وَرَدُّ الْمُحتَار، ۶۸۸/۹)

### ”جبار“ نام تبدیل کر کے ”ابدال جبار“ رکھا

ہجرتے سیمیڈونا ابتدال جبار بین ہاریش **رضی اللہ تعالیٰ عنہ**  
کا پہلا نام ”جبار بین ہاریش“ ہے، سلطانے با کریما،  
کرارے کلبے سینا **صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم** نے فرمایا : تum ”ابدال  
جبار“ (جبار دست کو درت والے کے بندے) ہو۔

(اسد الغابة، ۳۸۷/۱، رقم: ۶۶۷)

**اُرجُّ :** ”ابد“ سے رکھے جانے والے ناموں کی فہریس اسی کتاب  
کے سفحہ 122 پر مولانا کیجیے ।

صلوٰعَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

## नामे मुहम्मद की बरकतों पर मुश्तमिल ६ फ़रामीने मुस्तफ़ा

رَسُولُهُ بِمِسَاجِلِهِ، بِبَيْنِ أَرْجُونِهِ وَالْوَسَلْمِ  
के नामे अक्दस “मुहम्मद” पर नाम रखना बहुत बड़ी सआदत है। एक सर्वे के मुताबिक दुन्या में सब से ज़ियादा रखा जाने वाला नाम “मुहम्मद” है। नामे “मुहम्मद” की फ़ज़ीलत खुद हमारे प्यारे आका ﷺ ने अपनी ज़बाने मुबारक से बयान फ़रमाई है, चुनान्चे, इरशाद फ़रमाया :

✿ जिस के हां बेटा पैदा हुवा और मेरी महब्बत और हुसूले बरकत के लिये उस का नाम मुहम्मद रखे तो वोह और उस का बेटा दोनों जन्नत में जाएंगे ।

(كنزالعمال، كتاب النكاح، الفصل الأول في الأسماء، ١٧٥/١٦، حديث ٤٥٢١٥)

✿ जिस ने मेरे नाम से बरकत की उम्मीद करते हुवे मेरे नाम पर नाम रखा, कियामत तक सुब्हो शाम उस पर बरकत नाज़िल होती रहेगी ।

(كنزالعمال، كتاب النكاح، الفصل الأول في الأسماء، ١٧٥/١٦، حديث ٤٥٢١٣)

✿ रोजे कियामत दो शख्स रब्बुल इज़्ज़त के हुज्जूर खड़े किये जाएंगे, हुक्म होगा : इन्हें जन्नत में ले जाओ । अर्ज करेंगे : इलाही हम किस अमल पर जन्नत के क़ाबिल हुवे, हम ने तो जन्नत का कोई काम किया नहीं ? फ़रमाएंगा : जन्नत में जाओ ! मैं ने हलफ़ किया है कि जिस का नाम अहमद या मुहम्मद हो, दोज़ख में न जाएगा ।

(مسند الفردوس، حدیث ٤٥٣/٢)

✿ **अल्लाह** نے عَزَّوَجَلَّ ने फ़रमाया : मुझे अपनी इज़्ज़तो जलाल की क़सम ! जिस का नाम तुम्हारे नाम पर होगा, उसे अज़ाब न दूंगा ।

(كشف الخفاء، حرف الخاء، ٣٤٥/١٠، حديث ١٢٤٣)

✿ جب کوئی کُم کیسی مشرکے کے لیے جامنے हो और  
उन में कोई شاخ “مُهَمَّد” نाम का हो और वोह उसे مشرکे  
में शरीक न करें तो उन के लिये मुशावरत में बरकत न होगी ।

(الكامل في ضعفاء الرجال، ٢٧٥/١٠)

✿ جس کے تین بेटे हों और वोह उन में से किसी का नाम  
مُهَمَّد न रखे, वोह ज़रूर जाहिल है । (١١٠، ٧٧، حديث: ٥٩/١١، مجمع الكبير)

**صَلَوَاتُ اللَّهِ عَلَى الْحَبِيبِ!**

**رِجْكُ مِنْ بَرَكَتِهِ جَاءَتِي**

ہज़रत سیفی دوڑا امام مالک اعلیٰ رحمۃ الرَّحْمَةِ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ مالکی  
ہے : اہلے مکہ آپس مें یہ گوپ्तا کیا کرتے ہے کہ جس  
�ر مें بھی مُهَمَّد نाम کا کोई فرد ہوتا ہے تو اس घर में खैरों  
बरकत होती है और उन के رِجْکُ में कषरत होती है ।

(المنقى شرح مؤطرا امام مالك، ٩/٤٥٦)

**صَلَوَاتُ اللَّهِ عَلَى الْحَبِيبِ!**

**لِفَضْلِهِ مُهَمَّدُ** کے باڑے مें ڈیمان اُفْرَوِیجِ مَدْنَانِی فُل

مُوْفِسِمِرے شاہیر ہکی مولیٰ ۱۷۴۳ھ تھامت ہجَّرَتے مُوْفِتی اہماد  
یار خاں تھامت ۱۷۴۳ھ تھامت تھامت تھامت تھامت تھامت تھامت تھامت  
کے ما'نا ہے : ہر ترہ تا'ریف کیا ہوا، ہر وکٹ، ہر جُمانا،  
ہر جُبان مें ہم्दو ہونا کیا ہوا، ہکی کت یہ ہے کہ جیسے ہو جاؤ  
انوار تھامت تھامت تھامت تھامت تھامت تھامت تھامت تھامت تھامت  
رَسُولُوں کے سردار ہے اسی ترہ ہو جاؤ انوار تھامت تھامت تھامت  
کا نام شاریف بھی تھامت نبیوں کے ناموں کا سردار ہے، اس نامے  
پاک کے بے شمار فرجاً ایل ہے، جن مें سے چند یہ ہے :

(1) इस नामे पाक को **अल्लाह** तआला के नाम या'नी लफ़जे “**अल्लाह**” से बहुत मुनासबत है, **अल्लाह** में हर्फ़ चार, चारों हर्फ़ नुक्तों से ख़ाली हैं, इन में एक “शद (ω)”, दो “हरकतें”, एक “सुकून (،)” है, इसी तरह लफ़जे “मुहम्मद” चार हुरूफ़, चारों हुरूफ़ नुक्तों से ख़ाली, एक “शद (ω)”, दो “हरकतें” एक “सुकून” ।

(2) लफ़जे “**अल्लाह**” बोलने से दोनों होंट जुदा हो जाते हैं, लफ़जे “**मुहम्मद**” कहते हैं तो दोनों लब मिल जाते हैं, कि वोह मख्लूक को ख़ालिक से मिलाने ही तो आए हैं, अगर उन का वासिता न हो तो मख्लूक ख़ालिक से बहुत दूर है ।

(3) लफ़जे “**अल्लाह**” अपनी दलालत में हर्फ़ों का मोहताज नहीं, अगर अब्बल (या'नी शुरूअ़) का अलिफ़ न रहे, तो “ا” बन जाता है, अगर अब्बल (या'नी शुरूअ़) का लाम भी न रहे तो “ل” है, अगर दरमियान का अलिफ़ भी न हो तो “ه” है यूंही लफ़जे “**मुहम्मद**” दलालत में हर्फ़ों का हाजत मन्द नहीं, अगर अब्बल (या'नी शुरूअ़) की मीम अलग हो जाए तो “م” रहता है अगर “ح” भी उड़ जाए तो “م” है या'नी खींचना, मख्लूक को खींच कर ख़ालिक तक पहुंचाना, अगर बीच की मीम भी न रहे तो “दाल” ब मा'ना रहबर ।

(4) सब के नाम इन के मां-बाप रखते हैं, लक्ब और देती है, ख़िताब हुकूमत से मिलता है, मगर हुज्ज़े अन्वर صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के नाम, लक्ब व ख़िताब सब रब तआला की तरफ़ से हैं कि अब्दुल मुत्तलिब (رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ) ने फ़िरिश्ते की बिशारत से येह नाम रखा ।

(5) दूसरों के नाम पैदाइश के सातवें दिन रखे जाते हैं, मगर हुजूरे अन्वर صلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का नाम आलम की पैदाइश से पहले अर्शे आ'ज़म पर लिखा गया था और हज़रते ईसा صلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने हुजूरे अन्वर عَلَيْهِ السَّلَامُ की विलादत से क़रीबन 600 बरस पहले अपनी क़ौम को फ़रमाया : إِسْمُهُ أَحْمَدٌ उन का नामे पाक अहमद है, पिछली क़ौमें आप के नाम की बरकत से दुआएं मांगती थीं ।

(6) कोई शख्स आप को “मुहम्मद” कह कर बुरा नहीं कह सकता, अगर कहेगा तो खुद अपने मुँह से झूटा होगा कि उन्हें कहता तो है “मुहम्मद” या’नी लाइके हम्द और करता है बुराइयां, इसी लिये कुफ़्फ़ारे मक्का ने आप ﷺ का नाम “मुज़म्मम” (مُذْمَم) रख कर आप की शाने अक्दस में बकवास बकी, हुज्जूर ने ﷺ ने फ़रमाया : कि देखो हम को हमारे रब तअ़ाला ने इन कुफ़्फ़ार की गालियों से बचाया, येह लोग “मुज़म्मम” को बुरा कहते हैं, होगा कोई “मुज़म्मम” हम तो “महम्मद” हैं।

(بخاري،كتاب المناقب،باب ماجاه في أسماء رسول الله عليه السلام، ٤٨٤، حديث: ٣٥٣٣) (٧) **“مُهَمَّد”** کا نام **“مُهَمَّد”** کے بے  
بہت جامیں ایں ہیں، جیسے میں **“مُهَمَّد”** کے بے  
شومار فوجاں ل بیان ہو گئے ہیں، آدم کے ماں ہیں میٹی سے پیدا  
ہونے والے، ابراہیم کے ماں ہیں “مہرaban باب، ابرورہیم”，  
نوح کے ماں ہیں “خوافی خودا سے گیرا و جاری و نوہا کرنے  
والے”， یسوع کے ماں ہیں “بہت شریفونفس، کریم مختار ایں”

इन तमाम नामों में एक एक वस्फ़ की तरफ़ इशारा है, मगर “मुहम्मद” के मा’ना हैं हर तरह हर वस्फ़ में बेहद ता’रीफ़ किये हुवे, इस में हुजूरे अन्वर ﷺ के ला ता’दाद कमालात व खूबियों की तरफ़ इशारा हो गया ।

(8) लफ़्ज़ “मुहम्मद” में गैबी ख़बर भी है कि हमेशा या’नी दुन्या व आखिरत में इन की हर जगह हर तरह हम्मदो षना हुवा करेगी, इसी ख़बर की सदाकत हम अपनी आंखों से देख रहे हैं कि आज भी हुजूरे अन्वर ﷺ के बराबर किसी की ता’रीफ़ नहीं होती, बल्कि जो हुजूरे अन्वर ﷺ से वाबस्ता हो गए उन की भी ता’रीफ़ हो गई, फ़र्श पर इन की धूम, अर्श पर इन के चर्चे, आ’ला हज़रत (حَسْنَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ) ने क्या खूब फ़रमाया :

अर्श पे ताज़ा छेड़ छाड़ फ़र्श में तुरफ़ा धूम धाम  
कान जिधर लगाइये तेरी ही दास्तान है

(9) जो अपने बेटे का नाम महब्बत में “मुहम्मद” रखे, **अल्लाह** तआला उस पर रहम फ़रमाएगा कि मुझे ऐसे शख्स को अज़ाब देते हुवे हया आती है जिस ने मेरे महबूब की महब्बत में अपने बेटे का नाम “मुहम्मद” रखा है ।

(तफ़सीर नईमी, 5/220 मुलख़्बसन)

**صَلُّوا عَلَى الْحَسِيبِ! صَلُّوا عَلَى مُحَمَّدٍ**

“ਮੁਹਮਦ” ਨਾਮ ਰਖਾ

کہ اس سہابے کی رام علیہم الرضوان اپنے نام خود کا جس کا نام خود  
سرکارے اباد کرار، شافعے روجے شومار مسلم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم نے  
”مُحَمَّد“ رخوا، جیسا کہ هجرت ساتھی دُنہا مُحَمَّد بین تلہہ  
تممُل مُؤمنین هجرت ساتھی دُنہا جنہا بینتے  
جہش رضی اللہ تعالیٰ علیہ کی بہن هجرت ساتھی دُنہا هُمہا  
کے ساہبِ بُنادے ہیں۔ جب آپ کی ولادت ہوئی آپ کے والی دید  
هجرت ساتھی دُنہا تلہہ آپ کو سرکارے اباد کرار،  
شافعے روجے شومار صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم کے پاس لے گئے تاکہ آپ  
بچو کو بھوٹی دے اور اس کا نام رکھے، پ्यارے  
آکھا نے آپ کے سر پر ہاث فراہ اور ان کا  
نام ”مُحَمَّد“ رخوا اور اپنی کُنیت ”ابوالکاظم“  
اتا فرمائی۔ (سدالغایہ، ۱۰۱/۵، رقم: ۴۷۳۸، ملخصاً)

(الغابة، ١٥/١، رقم: ٧٣٨، ملخصاً)

صلوٰعَلِيُّ الْحَبِيبِ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّدٍ  
لَڈ کا پے دا ہوئا اِنْ شَاءَ اللّٰهُ غَرَبَ جل

इमाम अःता<sup>رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ</sup> हजरते सच्चिदुना अबू शोएब<sup>رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ</sup> से रिवायत फ़रमाते हैं कि जो येह चाहे कि उस की औरत के हँस्ल में लड़का हो तो उसे चाहिये कि अपना हाथ औरत के पेट पर रख कर कहे इन<sup>أَنْ كَانَ ذَكْرًا قَدْ سَمِيَّتْهُ مُحَمَّدًا</sup> या'नी अगर येह लड़का हुवा तो मैं ने इस का नाम मुहम्मद रखा । ”<sup>إِنْ شَاءَ اللَّهُ غَيْرِهِ</sup> लड़का होगा । (फ़तावा रज़विय्या, 24/690)

(फ़तावा रज़िविय्या, 24/690)

صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ صَلَوَاتُ اللَّهِ عَلَى الْحَبِيبِ!

## بے ادباری نہ ہونے پاٹ

سادس شری آ، بدر تریکا مUFتی موسیٰ محمد امجد علیہ السلام اور اُن کے دوسرے ناموں میں آئیں ہیں : موسیٰ محمد بہت پسرا نام ہے، اس نام کی بडی تاریخی میں آئی ہے । اگر تسانیر (یا' نی نام بیگانے) کا اندازہ نہ ہو تو یہ نام رکھا جائے اور اک سوچت یہ ہے کہ اُن کے کا نام یہ ہو اور پوکارنے کے لیے کوئی دوسرा نام تجھی کر لیا جائے (۱) اور ہندوستان (پاک و ہند) میں اسے بہت ہوتا ہے کہ اک شخص کے کوئی نام ہوتے ہیں اس سوچت میں نام کی بارکت بھی ہوگی اور تسانیر سے بھی بچ جائے । (بہارے شریعت، ۳/۳۵۶)

## آ'لا ہجرت رحمۃ اللہ علیہ کا تیریکھ کا

آ'لا ہجرت، امام اہل سنت، مسیح دیوبندی دینوں میللت، مولانا شاہ امام احمد رضا خاں علیہ الرحمٰن الرحمٰن فرماتے ہیں : فکریں غفرانی نے اپنے سب بیٹوں بنتیوں کا اُن کے میں سیف موسیٰ محمد نام رکھا فیر نام اک دس کے ہی فوجے آداب اور باہم تمییز (یا' نی پہचان) کے لیے ڈکھ جو دعا مکرر کیے । (فتاویٰ رجیفیہ، ۲۴/۶۸۹)

## ڈاشیکے آ'لا ہجرت کی ڈدرا

جب شیخے تریکت، امریکے اہل سنت، بانیے دا'وتے اسلامی ہجرتے اعلیٰ امام مولانا عبد البیل علیہ السلام اور کادیری رجیبی دامت برکاتہم العالیہ سے کسی کا نام رکھنے کی دارخواست کی جاتی ہے تو ڈمومن آپ دامت برکاتہم العالیہ اس بچے

۱ .... مثالن : بیل علیہ السلام رضا، ہل علیہ السلام رضا وغیرہ

کا نام مُحَمَّد اور پुکارنے کے لیے ڈرْفِ مَشَلَن رَجَب رَجَأ رَخْتَه هُونے ہیں۔ نام کے ساتھ رَجَأ کا اِجَاضَة، اِمامَہ اَہلَلِ سُنْنَۃ اَہلَلِ حَدِیْثِ رَسُوْلِ اللَّہِ صَلَّی اللَّہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّمَ میں مُعْذَبِ دِینِ اِسلام کی نیست بات سے کرتے ہیں।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّی اللَّہُ عَالَیْہِ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّمَ

## 1000 ڈُولَر ہنڈَام

एک اخْبَاریِ اِنْتِیلَا اَبُ کے مُتَابِکِ نامے “مُحَمَّد” کے کُدْرَادَانِ اک مُسَلِّمَانِ ہُوكَمَرَانِ نے اُلَانِ کیا ہے کہ جو لوگ اپنے نو مُلُودِ بچوں کے نامِ نَبِيَّ اَخِیِّ رَجَبِ مَان کے نامے نامی “مُحَمَّد” کے نام پر رکھنے گے اُنہے اک ہज़ाر ڈُولَر کا ہدیَّہ پَرِسَہ کیا جائے گا۔ جشنِ وِلَادَتِ نَبِيِّ کے مُؤْكَدِ اَبُ پر کیے جانے والے اُلَانِ مِنْ مُسَلِّمَانِ ہُوكَمَرَانِ نے کہا ہے کہ اک ہجَّار ڈُولَر کا ہدیَّہِ وَالِدَانِ کو تَرَفِ سے پَرِسَہ کیا جائے گا کَیْوُنْکِ یہِ خَيْالِ بُنْيَادِ تُوْرِ پر وَالِدَانِ نے ہی پَرِسَہ کیا ہے۔ اُلَانِ مِنْ یہِ بُنْيَادِ تُوْرِ کے نامِ اَمْمَةِ اَنْبَیَاءِ رَحْمَنِ عَنْہُمْ رَحْمَنٌ رَحِيمٌ کے ناموں پر رکھنے گے اُن کو بھی اک ہجَّار ڈُولَر ہدیَّہ پَرِسَہ کیا جائے گا۔ اس اُلَانِ پر اس مُلْکِ مِنْ رہنے والے مُسَلِّمَانِ خَانَدَانَوْں مِنْ خُوشَگَوارِ رَدِیْہِ اَمْلَ سَامَنے آیا ہے۔

(जंग उर्दू ऑन लाइन 16 जनवरी 2014 बित्तसर्फ़े क़लील)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّی اللَّہُ عَالَیْہِ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّمَ

## पुकारा जाने वाला नाम रखने की उक अहम उहतियातः

ख़्याल रहे कि पुकारने के लिये नाम ऐसा रखा जाए जिसे मुहम्मद के साथ मिला कर बोलने में बे अदबी वगैरा न हो, आ'ला हज़रत رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : फ़क़ीर कभी जाइज़ नहीं रखता कि कल्बे अ़ली (अ़ली का कुत्ता), कल्बे हुसैन, कल्बे हसन गुलाम अ़ली, गुलामे हुसैन, गुलामे हसन, निषार हुसैन (हुसैन पर निषार होने वाला), फ़िदा हुसैन (हुसैन पर फ़िदा होने वाला) कुरबान हुसैन, गुलामे जीलानी (जीलानी का गुलाम) أَللَّهُمَّ ارْزُقْنَا حُسْنَ الْدُّكْبِ وَتَعِنَّا مِنْ مُوْرِثَاتِ الْفَحْشَبِ أَمِنَّ (आ'मल तक) के अस्मा (या'नी इसी तरह के दूसरे नामों) के साथ नामे पाक (या'नी मुहम्मद) मिला कर कहा जाए, أَللَّهُمَّ ارْزُقْنَا حُسْنَ الْدُّكْبِ وَتَعِنَّا مِنْ مُوْرِثَاتِ الْفَحْشَبِ أَمِنَّ (ऐ अल्लाह ! हमें हुस्ने अदब से नवाज़ और अस्बाबे ग़ज़ब से बचा। आमीन । ت ) (फ़तावा रज़िविया, 24/683)

**मुफ़ितये आ'ज़म ने इस्लाह फ़रमाई**

सिराजुल आरिफ़ीन हज़रते अल्लामा मौलाना गुलामे आसी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْأَكْرَمِ फ़रमाते हैं : मैं ने अपने नाम के शुरूअ़ में बरकत के लिये लफ़्ज़ “मुहम्मद” शामिल कर लिया था । इस पर शहज़ादए आ'ला हज़रत मुफ़ितये आ'ज़म मौलाना मुस्तफ़ा रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ ने तम्बीह फ़रमाई कि यहां इस्मे रिसालत (या'नी मुहम्मद) नहीं होना चाहिये । मैं ने फ़ौरन अर्ज़ किया कि, हुज़ूर फिर “मुहम्मद अब्दुल हय्य” का क्या हुक्म होगा ? इस के जवाब में हज़रत ने फ़रमाया : कुजा अब्दुल हय्य व कुजा गुलामे आसी

(�ا' نی کہاں ابُدُل هُyy اور کہاں گولامے آسی) ? اَللَّا مَا فَرَمَاتَ هُوَ : “يَهُوَ جَوَابُ سُونَ كَرْ مَيْنَ هَرَتْ جَدَا رَاهُ گَيَا اَوْ هَجَرَتْ كَهْ تَفَكَّهَوْهُ فِي دِيَنَ كَيْ اَجَمَّتْ دِيلَ مَيْنَ خَبَبْ خَبَبْ رَاهُ بَسَ گَيْ ”

ہُجُور مُعْفِتَيَهُ آُجَمَ نَهُ اَپَنَهُ اِرْشَادَ سَهُ  
یَهُوَ رَاهُنُمَارَهُ فَرَمَارَهُ کَيْ جِيسَ نَامَ کَهْ شُرُّعَهُ مَيْنَ لَفَظُهُ “مُهَمَّدَ”  
لَا يَا، اَغَرَ عَسَنَ کَأَلَکَ لَفَظُهُ “مُهَمَّدَ” پَرَ  
دُرُسْتَ هُوَ تَوَهْ وَهُوَ لَفَظُهُ “مُهَمَّدَ” لَا يَا دُرُسْتَ هُوَگَا (جِئَسَ  
مُهَمَّدَ سَادِیکَ) اَوْ اَغَرَ نَامَ کَهْ اِتَّلَاكَ لَفَظُهُ “مُهَمَّدَ”  
پَرَ دُرُسْتَ نَهُ تَوَهْ وَهُوَ لَفَظُهُ “مُهَمَّدَ” شُرُّعَهُ مَيْنَ لَا يَا دُرُسْتَ  
نَهُ گَا (جِئَسَ مُهَمَّدَ گُولَامَ ہُسَنَ) । ہُجُور سَیِّدَ اَلَّا مَدَنَ  
اَبُدُلَ هُyy (1) ہُنَّ لِیَهَا مُهَمَّدَ اَبُدُلَ هُyy  
کَهْنَا دُرُسْتَ ہُوَ لَکِن گُولَامَ آسَی نَهُنَّ ہُوَ، اِسَ لَیَهَ  
“مُهَمَّدَ گُولَامَ آسَی (�ا' نی “آسَی” کَا گُولَامَ)” کَهْنَا  
نَامُنَا سِیَبَ ہُوَ । (جَهَنَ مُعْفِتَيَهُ آُجَمَ، س 451)

صَلَوَاتُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ  
بَيْتَ کَوْنَامَ مُهَمَّدَ ۲۷ کَوْنَوْ تَوَهْ ڈُجَّتَ کَوْنَوْ

جَبَ کَوْنَیَ شَخْصَ اَپَنَهُ بَيْتَ کَوْنَامَ مُهَمَّدَ رَخَهُ تَوَهْ تَوَهْ اَسَهُ  
چَاهِیَهُ اِسَ نَامَ پَاکَ کَیْ نِسْبَتَ کَهْ سَبَبَ اِسَ کَهْ سَاَثَ ہُسَنَ  
سُلُوكَ کَرَهُ اَوْ اِسَ کَیْ ڈُجَّتَ کَرَهُ । مَوْلَا مُشِکَلَ کُشَا هَجَرَتَ

۱.....یا' نی اَللَّا هُوَ کَهْ بَنَدَهُ ہُنَّ کَیْوَکِیْ “هُyy” اَللَّا هُوَ تَوَهْ اَسَلَّا کَا سِیَفَتَیَ نَامَ ہُوَ

سَيِّدُنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدُ رَسُولُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ سے مارکی ہے کि نبی یے کریم رَحْمٰنُهُ رَحِيمُهُ نے ارشاد فرمایا : جب تुم بےٹے کا نام مُحَمَّد رکھو تو اس کی دُجُّت کرو اور مجلس میں اس کے لیے جگہ کوشادا کرو اور اس کی نیست بُراۓ کی تحرف ن کرو । (الجامع الصفیر، ص ۴۹، حدیث: ۷۰۶) ایک اور حدیث پاک میں ہے کि رَسُولُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ نے فرمایا : جب لڈکے کا نام مُحَمَّد رکھو تو اسے ن مارو اور ن مہرُم کرو ।

(مسند البزار، ۳۲۷/۹، حدیث: ۳۸۸۳)

### صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ نام بदل دی�ا

ایک شاہس کا نام مُحَمَّد ثا ہجرتے سیّدُنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّد رَسُولُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ نے دیکھا کि اک آدمی اس کو گالی دے رہا ہے، بولا کر کہا کि دیکھو تُمہاری وچھ سے مُحَمَّد کو گالی دی جا رہی ہے، اب تا دمے مرج (یا' نی اپنی موت تک) تُم اس نام سے پوکارے نہیں جا سکتے، چنانچہ، اسی وکٹ اس کا نام اُبُرُرہمَان رکھ دیا گیا । فیر بُنُو تلہذا کے پاس پیغمبر مسیح جو لوگ اس نام کے ہوں اُن کے نام بدل دیے جائیں । ایتیفک سے وہ لوگ سات آدمی ہے اور اُن کے سردار کا نام بھی مُحَمَّد ثا । اس نے کہا : خود رَسُولُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ نے میرا نام مُحَمَّد رکھا ہے । بولے : اب میرا اس پر کوئی جوڑ نہیں چل سکتا । (المسند للإمام أحمد بن حنبل، ۲۶۷/۱، حدیث: ۱۷۹۱۶ ملخصاً)

### صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ

## مِنْ بَيْ وُجُوهِ

سُلْطَانِ مَهْمُودِ گُجُرَاتِی نے اک بارِ اَبْيَاجُ کے بَوْتے کو پُکارا : اے اَبْيَاجُ کے بَوْتے ! اِسْتِنْجے کے لِیے پانی لَا । اَبْيَاجُ نے ٹوڈے دِنُوں 'بَا' دِ اَرْجُ کی، کی ہُجُور ! مُعْذَن سے یا اس سے (یا 'نی مِرے بَوْتے سے) ک्यا کُوسُور ہُوا کی آپ نے اس کا نام ن لیا ? فَرَمَّا : تَرَ بَوْتے کا نامِ مُحَمَّد ہے، مِنْ اس دِن بَیْ وُجُوهِ اَبْيَاجُ نامے مُحَمَّد کو اپنی جُبَان سے اَدا ن کیا ।

هزار بار بشَوَّیمْ تَهْنِ بَمْشِک وَگَلَاب !

هُنوز نَمِ تو گُفْنَنِ کَمَالِ بَ اَدِبِ اَسْتَ

(یا 'نی : مِنْ اپنے مُونھ کو ہُجَار بار مُشکو گُلَاب سے ڈھوؤں تب بھی آپ کا نام لِئنا بَیْ اَدَبِی ہے)

(تَفَسِّیرِ نَبِیِّنَمَوْلَیٰ، 4/221)

**صَلُّو عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلُّو عَلَى مُحَمَّدِ**

**ਉਥੀ ਸੂਰਤ ਮੈਂ “ਮੁਹੱਮਦ” ਪਰ ਢੁਕਦੇ ਪਾਕ ਨਹੀਂ ਲਿਖਾ ਜਾਏਗਾ**

اگر کਿਸੀ ਸ਼ਾਖਾ ਕਾ ਨਾਮِ مُحَمَّد ਹੋ ਤੇ 'بَا' ਜُ کਮِ اِلਮ ਲੋਗ اس ਕਾ ਨਾਮ ਲਿਖਤੇ ਹੁਵੇ ਨਾਮ ਕੇ ਸਾਥ ਦੁਰੁਦ "صلَّمْ" "عَلَيْهِ وَآلِہ وَسَلَّمْ" ਲਿਖਤੇ ਹੈਂ ਯਾ ਫਿਰ "صلَّمْ" "عَلَيْهِ وَآلِہ وَسَلَّمْ" کੀ ਲਿਖ ਦੇਤੇ ਹੈਂ, ਯਹਾਂ ਪਰ ਚੂਂਕਿ رਸੂਲੇ ਕਰੀਮ "صلَّمْ" "عَلَيْهِ وَآلِہ وَسَلَّمْ" ਜਾਤ ਮੁਰਾਦ ਨਹੀਂ ਹੋਤੀ ਇਸ ਲਿਯੇ ਦੁਰੁਦੇ ਪਾਕ ਨ ਲਿਖਾ ਜਾਏ ਔਰ ਨ ਹੀ ਕੋਈ اُਲਾਮਤ "صلَّمْ" "عَلَيْهِ وَآلِہ وَسَلَّمْ" ਕਾ ਨਾਮੇ ਅਕਦਸ ਲਿਖੋਂ ਤੋ ਸੁਕਮਲ

دُرُّ الدُّرُّ (مَسْلَنْ) عَلَيْهِ وَسَلَّمَ (صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ) لِكِتَابِ يَوْمِ الْقِيَامَةِ،  
वगैरा की अलामत नामे मुबारक के साथ लिखना भी नाजाइज़ व  
ह्राम है। दा'वते इस्लामी के इशाअंती इदारे मक्तबतुल मदीना  
की मत्बूआ 1554 सफ़्हात पर मुश्तमिल किताब “बहारे शरीअंत  
(जिल्द 1)” के सफ़्हा 77 पर है : नामे पाक लिखे तो उस के  
बा'द لिखे, बा'ज़ लोग बराहे इख्तिसार  
या ”” لिखते हैं, येह महूज़ नाजाइज़ व ह्राम है।

(बहारे शरीअृत, 1/77)

صَلَوَاتُ اللَّهِ عَلَى مُحَمَّدٍ وَآلِهِ وَسَلَامٌ

“ਮੁਹਮਦ ਨਬੀ, ਅਹਮਦ ਨਬੀ” ਨਾਮ ਨ ਰਖਾ ਜਾਏ

مُحَمَّد نبِيٌّ، اَهْمَد نبِيٌّ، مُحَمَّد رَسُولٌ، اَهْمَد رَسُولٌ،  
نَبِيُّ يُوْجُنْ‌مَانَ نَامَ رَخْنَا بَهِّ نَاجَا‌इजُ है, बल्कि बा'ज़ का नाम  
नَبِيُّ يُुल्लाह भी सुना गया है, गैरे नबी को नबी कहना हरगिज़  
हरगिज़ जाइज़ नहीं हो सकता ।

**तम्बीह :** अगर कोई येह कहे कि नामों में अस्ली मा'ना का लिहाज़ नहीं होता, बल्कि यहां तो येह शख्स मुराद है उस का जवाब येह है कि अगर ऐसा होता तो शैतान इब्लीस वगैरा इस क्रिस्म के नामों से लोग गुरैज़ न करते और नामों में अच्छे और बुरे नामों की दो क्रिस्में न होतीं और हडीष में न फ़रमाया जाता कि अच्छे नाम रखो, नीज़ हुज़रे अक्दस صلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने बुरे नामों को बदला न होता कि जब इस अस्ली मा'ना का बिल्कुल लिहाज़ नहीं तो बदलने की क्या वजह ? (बहारे शरीअत, 3/605)

صَلَوَاتُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ صَلَوَاتُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَى الْحَبِيبِ!

## “مُحَمَّدٌ بَرَخْشٌ، أَهْمَدٌ بَرَخْشٌ” نام ۲۷ کا جائز ہے

مُحَمَّدٌ بَرَخْشٌ، أَهْمَدٌ بَرَخْشٌ، نبی بَرَخْشٌ، پیر بَرَخْشٌ،  
اُلیٰ بَرَخْشٌ، هُسَيْن بَرَخْشٌ اور اسی کِسْم کے دوسرے نام جن مें  
کیسی نبی یا ولی کے نام کے ساتھ بَرَخْش کا لفظ میلا کر  
نام رکھا گया ہے جائز ہے । (بہارے شریعت، 3/604)

## “غُلَامٌ مُحَمَّدٌ، غُلَامٌ سِدِّيقٌ” نام ۲۷ کا جائز ہے

غُلَامٌ مُحَمَّدٌ، غُلَامٌ سِدِّيقٌ، غُلَامٌ فَارُوقٌ، غُلَامٌ  
اُلیٰ، غُلَامٌ حَسَنٌ، غُلَامٌ هُسَيْنٌ وغُلَامٌ کاغِرٌ اسما جن مें امیکیا  
و سہابہ و اولیا کے نامोں کی ترکیب گلَام کی ایجاد کر  
کے نام رکھا جائے یہ جائز ہے اس کے بعد میں جواب کی کوئی  
وچہ نہیں । (بہارے شریعت، 3/604)

## “أَبْدُولُ مُسْتَفِى، أَبْدُونَبِي” نام ۲۷ کا جائز ہے

أَبْدُولُ مُسْتَفِى، أَبْدُونَبِي، أَبْدُورُسُولٌ نام رکھنا  
جائز ہے کی اس نسبت کی شرافت مکسوود ہے اور أَبْوُدِیت  
کے حکیم کی ما'نا یہاں مکسوود نہیں ہے । رہی ابُد کی ایجاد  
گُرللاہ کی ترکیب یہ کو رآنے ہدیہ سے ہبھیت ہے । (1)  
(بہارے شریعت، 3/604) اسی ترکیب ابُد جمال اور ابُدورفیک  
نام رکھنا بھی جائز ہے ।

صَلَوَاتُ اللَّهِ عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَوَاتُ اللَّهِ عَالَى مُحَمَّدٍ

<sup>1</sup> ..... اس ہوا لے سے تپسیلی ما'لو مات کے لیے فٹاوا رجیفیا جیلد  
24 سफہا 666 تا 669 اور 671 کا معتالاً کیجیے ।

## “یاسین، تاہا” نام رکھنا مनدیٰ ہے

تاہا، یاسین نام بھی ن رکھے جائے کیا یہ مुکتٰ اُتے کوئی آنیٰ یا سے ہے جس کے مارنا ملوم نہیں جاہیر یہ ہے کیا یہ اسماً نبی ﷺ سے ہے اور با’ج ڈالما نے اسماً ایلہیٰ سے کہا । بہر ہاں جب مارنا ملوم نہیں تو ہو سکتا ہے کیا اس کے اسے مارنا ہوئے جو ہو جاؤ یا **آلہا** تاہا کے ساتھ خواس ہوئے اور ان ناموں کے ساتھ مُحَمَّد میلا کر “مُحَمَّد تاہا”，“مُحَمَّد یاسین” کہنا بھی مُمانع اُتے کو دفعہ (یا’نی دور) ن کرے گا ।

(باہرے شریعت، 3/605)

صلوٰعَلِيُّ الْحَسِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

## “غُفراندین” نام رکھنا ماندیٰ ہے

غُفراندین (نام) بھی سخن کبھی نہ و شنی اُتے ہے، غُفران کے مارنا میٹا نے والा، چھپا نے والा، **آلہا** غُفرانے والے جو نوبت ہے یا’نی اپنی رحمت سے اپنے بندوں کے جو نوبت (یا’نی گوناہ) میٹاتا ڈیوب چھپاتا ہے، تو غُفراندین کے مارنا ہوئے دین کا میٹا نے والा ।

(فُتاوا رجُلیٰ، 24/681)

صلوٰعَلِيُّ الْحَسِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

## کیسی بُوچُور کو کُلیٰ میں جنمان کہنا کیسماں ؟

سُوال : کیسی کا نام اُبُدُل کُلیٰ میں ہو اس کو کُلیٰ میں کہ کر پوکارنا کیسماں ؟ اسی تراہ کیسی بُوچُور کو “کُلیٰ میں جنمان یا کُلیٰ میں جنمان” کہ سکتے ہے یا نہیں ؟

**जवाब :** ऐसा कहना सख्त ह्राम है। बा'जु फुक़हाए किराम  
रَحْمَةُ اللَّهِ السَّلَامُ के नज़दीक बन्दे को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَ के मख्सूस नामों  
जैसे क़ब्यूम, कुदूस या रहमान कह कर पुकारना कुफ़्र है। “क़ब्यूमे  
जहां” या “क़ब्यूमे ज़मां” कहने का एक ही हुक्म है। चुनान्वे, मेरे  
आक़ा आ'ला हज़रत **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** फ़तावा रज़विय्या जिल्द 15  
सफ़हा 280 पर फ़रमाते हैं : फुक़हाए किराम **رَحْمَةُ اللَّهِ السَّلَامُ** ने  
“क़ब्यूमे जहां” गैरे खुदा को कहने पर तकफ़ीर फ़रमाई। मजमउळ  
अन्हुर में है : “अगर कोई **अल्लाह** عَزَّوَجَلَ के अस्माए मुख़तस्सा  
(या'नी मख्सूस नामों) में से किसी नाम का इत्लाक़ मख्लूक़ पर करे  
जैसे इसे (या'नी मख्लूक़ के किसी फ़र्द को) कुदूस, क़ब्यूम या  
रहमान कहे तो ये ह कुफ़्र हो जाएगा।” (مجمع الانہر، ٢/٥٠٤) وَاللَّهُ أَعْلَمُ

**आदमी को क़ब्यूम, कुदूस और रहमान कह कर न पुकारिये**

शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते  
इस्लामी हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास  
अत्तार क़ादिरी रज़वी **دامت برکاتُهُمُ الْعَالِيَةُ** अपनी किताब “कुफ़िय्या  
कलिमात के बारे में सुवाल जवाब” के सफ़हा 591 पर  
मज़कूरए बाला सुवाल जवाब के बा'द लिखते हैं :

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** सख्त ताकीद है कि  
किसी भी शख्स को रहमान, क़ब्यूम और कुदूस वगैरा मत  
कहिये बल्कि आदत बनाइये कि जिस का नाम **अल्लाह** के  
किसी नाम में “अब्द” की इज़ाफ़त के साथ हो मषलन जिन  
का नाम अब्दुल मजीद या अब्दुल करीम वगैरा हो उन को मजीद

या करीम कह कर ना पुकारें, इस में से “अब्द” खारिज न करें, हां ! गैरे खुदा को “मजीद” या “करीम” कहना कुफ्र नहीं ।

(कुफ्रिया कलिमात के बारे में सुवाल जवाब, स. 591)

## अब्दुल क़ादिर को क़ादिर कहना कैसा ?

**सुवाल :** अब्दुल क़ादिर, अब्दुल क़दीर, अब्दुर्रज्ज़ाक़ वगैरा नाम वाले अफ़राद को क़ादिर, क़दीर और रज्ज़ाक़ कह कर पुकारना कैसा है ?

**जवाब :** इस तरह के एक सुवाल का जवाब देते हुवे शहज़ादए आ'ला हज़रत हृज़ूर मुफ्तिये आ'ज़मे हिन्द मौलाना मुहम्मद मुस्तफ़ा रज़ा ख़ान ﷺ : ऐसे नामों से लफ़्ज़े अब्द का हज़फ़ (या'नी अलग कर देना) बहुत बुरा है और कभी नाजाइज़ व गुनाह होता है और कभी सरहदे कुफ्र तक भी पहुंचता है । क़ादिर का इत्लाक़ तो गैर पर जाइज़ है, इस सूरत में अब्दुल क़ादिर को क़ादिर कह कर पुकारना बुरा है मगर क़दीर का इत्लाक़ गैरे खुदा पर नाजाइज़ । (जैसा कि बैज़ावी में है) और अगर किसी का नाम अब्दुल कुहुस, अब्दुरहमान, अब्दुल क़य्यूम है तो उसे कुहुस, रहमान, क़य्यूम कहना ऐसा ही है जैसे उसे (कि) जिस का नाम अब्दुल्लाह हो (उस को) “**अब्लाह**”

कहना बहुत सख़्त बात है । ﴿وَالْعِيَادُ بِاللَّهِ تَعَالَى﴾ जिस का नाम अब्दुल क़ादिर हो उसे भी अब्दुल क़ादिर ही कहा जाए, जिस का अब्दुल क़दीर उसे अब्दुल क़दीर ही कहना ज़रूर है । अब्दुर्रज्ज़ाक़ को अब्दुर्रज्ज़ाक़, अब्दुल मुक्तदिर को अब्दुल मुक्तदिर । गैर पर इत्लाक़ क़दीर व मुक्तदिर (या'नी **अब्लाह** عَزَّوَجَلَّ के इलावा किसी गैर

کو کہیں اور مुکت دیر کہ سکتے ہیں یا نہیں اس مسئلے) مें  
ڈلما کا ایک لالا فہر ہے ।

(فہر موسٹ فہریخ، ص. 89-90)

(کوئی کلمات کے بارے مें سوال جواب، ص. 593)

**صلوٰعَلِ الْحَمِيْدِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ**

### **“ابدھل کیم” نام رکونا**

ہجرتے سانیدھنا ابू ڈبیدا ابڈھل کیم اجڑی  
آپنے آکا ابू راشید رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے ساتھ بنو  
اجڑ کے وفاد کے ہمراہ نبی یہ اکرم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم کی  
خیدمت میں آئے، بے چین دللوں کے چن، رہمتے دارے ن  
سلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم نے ابू راشید سے پوچھا : تumara نام کیا ہے ؟  
بولے : ابڈھل عذجھا ابू موسیٰ فہریخا । آپ نے صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم  
فرمایا : تum “ابڈھلہم ان ابू راشید” ہو । فیر ارشاد  
فرمایا : یہ تو ہمارے ساتھ کون ہے ؟ ارج کی : میرا گولام ।  
فرمایا : اس کا نام کیا ہے ؟ ارج کیا : کیم (ہمسہ  
کا ایم رہنے والا) । ارشاد فرمایا : “یہ ابڈھل کیم (ہمسہ  
(ہمسہ کا ایم رہنے والے کا بندہ) ہے ।” (اس الفاتحة، رقم: ۳۴۲۱، ص ۵۲۰)

**صلوٰعَلِ الْحَمِيْدِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ**

### **بujurqani دین سے نام رکونا**

میठے میठے اسلامی بھائیو ! بujurqani دین سے بچوں کا  
نام رکونا بائیسے خیرے برکت ہوتا ہے، دائرے رسالت سراپا  
برکت میں سہابہ کرام رضی اللہ تعالیٰ عنہم کا ما' مول ثا کی جب ان  
کے گھر کوئی بچہ پیدا ہوتا تو یہ تو سے رہمتے ایلام، نورے

مujassim, شاہے بنی آدم کی بارگاہ مें  
لाते, آپ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ उस के लिये दुआ करते, नाम  
रखते और बसा अवक़ात उसे घुट्टी भी देते, चुनान्वे, उम्मल  
मोअमिनीन हज़रत सच्चिदतुना आइशा सिद्दीका سے  
रिवायत है कि लोग अपने बच्चों को ताजदारे रिसालत, शहनशाहे  
नबुव्वत की बारगाहे अक्दस में लाया करते थे  
आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ उन के लिये खैरो बरकत की दुआ फ़रमाते  
और तहनीक फ़रमाया (या'नी घुट्टी दिया) करते थे।

(مسلم،كتاب الادب،باب استحباب تحنيك،ص ١١٨٤،Hadith: ٢١٤٧)

ऐसी ही चन्द रिवायात मुलाहृजा हों :

﴿1﴾ बच्चे का नाम “अङ्गुलिलाह” रखा

फिर रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया : “अन्सार को खजूरों के साथ महब्बत है।” और उस बच्चे का नाम अब्दुल्लाह रखा । (مسلم،كتاب الادب،باب استحباب تحنيك المولود....الخ،ص ١١٨٣،Hadith: ٢١٤٤)

### ﴿2﴾ “इब्राहीम” नाम रखा

हज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अशअरी رضي الله تعالى عنه बयान करते हैं कि मेरे हां लड़का पैदा हुवा, मैं उस को ले कर **अल्लाह عَزَّوَجَلَّ** के महबूब, दानाए गुयूब, मुनज्ज़हुन अनिल उयूब की बारगाह में हाजिर हुवा, आप ने उस का नाम “इब्राहीम” रखा और उसे खजूर से घुट्टी दी ।

(مسلم،كتاب الادب،باب استحباب تحنيك المولود....الخ،ص ١١٨٤،Hadith: ٢١٤٥)

### ﴿3﴾ “अब्दुल मलिक” नाम रखा

हज़रते सय्यिदुना नुबैत बिन जाबिर رضي الله تعالى عنه के हां बच्चा पैदा हुवा । वोह उसे ले कर नबिय्ये करीम ﷺ के पास आए और अर्ज़ की : “या रसूलुल्लाह ﷺ आप इस का नाम रखें ।” तो आप ﷺ ने उस का नाम अब्दुल मलिक रखा और उस के लिये बरकत की दुआ की ।

(الطبقات الكبرى لابن سعد، ج ٢٥/٨، رقم: ٤٥٨٥)

### ﴿4﴾ “सिनान” नाम रखा

हज़रते सय्यिदुना अबू अब्दुर्रह्मान सिनान बिन سलमा رضي الله تعالى عنه बयान करते हैं : मैं ग़ज़वए हुनैन के दिन पैदा हुवा, मेरे वालिद को मेरी विलादत की खुश ख़बरी सुनाई गई तो उन्हों

نے کہا : مہبوبے رబوں کے دھرنا میں تیر چلانا مुझے بے شکار کی خوش خبری سے جیسا مہبوب ہے । (مسند امام احمد بن حنبل، حدیث: ۲۴۶/۷، ۹۱۳)

فیر میرے والید مسیحی کے پاس آئے، آپ نے مسیحی بھٹی دی، میرے مونہ میں لعوبے دھنڈالا، میرے لیے دعاء کی اور میرا نام ”سینا (یا’ نی نے جے کی نوک)“ رکھا ।

(الاستیعاب، ۲۱۷/۲، رقم: ۱۰۷۶)

### ﴿5﴾ ”مُرَسِّلُ“ نام ۲۷

ہجرتے سیمیوں میں بین یاسیر جو ہنی رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے والید ہجرتے سیمیوں یاسیر کو کسی ساری (۱) میں بھیجا گیا، اسی دیرانہ ہجرتے سیمیوں میں ساری کی ویلادت ہوئی، ان کی والیدا بچے کو نبیوں کی میں لاری اور ارج کی :  
یا رسول اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم میرے ہاں بچھا پیدا ہوا ہے اور اس کے والید لشکر کے ساتھ ہے، آپ نے بچھے کو لیا،

<sup>دینے</sup> ① ... وہ جنگی لشکر جس میں ہجڑے انوار نافر نافریں شامیل ہوئے اسے ”گڑوا“ اور جس میں لشکر روانا فرمایا مگر خود شامیل نہ ہوئے اسے ”ساری“ کہتے ہیں ।

(سیرتے رسول اکرم، ص ۱۲۷ مولخب سن)

उस पर हाथ फेरा और दुआ दी : ऐ **अल्लाह** ! इन के मर्दों को कषरत अ़ता फ़रमा, इन के गुनाहों को कमतर फ़रमा, इन को किसी का मोहताज न कर, फिर इरशाद फ़रमाया : मैं ने इस का नाम مُسْرِيْعٌ (जल्दी करने वाला) रखा है इस ने इस्लाम में जल्दी की है ।

(اسدالغابة، ۱۶۴/۵، رقم: ۴۸۶۱، والاصابة، ۱/۶، رقم: ۹۲۳)

### ﴿6﴾ “यहूया” نام رکھا

هُجَّرَتِ سَيِّدُنَا يَهُوَيَا بَنِ خَلَّالَ عَنْهُ<sup>رَفِيعُ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ</sup> کی ویلادت هُجَّرَتِ اَكْدَس<sup>صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ</sup> کے اُبھد مें हुई, نبیyyے اکرام<sup>صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ</sup> کی خِدَمَت مें لाए गए, आप<sup>صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ</sup> ने خَجَّور<sup>صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ</sup> चबा कर घुट्टी दी और फ़रमाया : मैं इस का बोह नाम रखूँगा जो हُجَّرَتِ यहूया بَنِ جَكَرिया<sup>عَلَيْهِمُ الصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ</sup> ( ) के बा'द किसी का नहीं रखा गया, फिर आप<sup>صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ</sup> ने इन का नाम यहूया रखा ।

(اسدالغابة، ۱۶۴/۵، رقم: ۵۰۰۵)

**صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ**  
**هُجَّرَتِ سَيِّدُنَا يَهُوَيَا بَنِ خَلَّالَ عَلَيْهِ السَّلَامُ کا نام کیس نے رکھا ?**

**अल्लाह** ने क़िब्ला<sup>عَزَّوجَلٌ</sup> अव्वल में दुआ करने वाले अज़ीमुल क़द्र उम्र रसीदा पैग़म्बर हُجَّرَتِ سَيِّدُنَا जَكَرिया<sup>عَلَيْهِ السَّلَامُ</sup> की दुआ को शارफे क़बूलियत बख़्شाते हुवे न सिर्फ़ इन को बेटे की बिशारत दी बल्कि इन का नाम यहूया<sup>عَلَيْهِ السَّلَامُ</sup> भी खुद अ़ता फ़रमाया और इरशाद हुवा :

يَرْكِيَا إِنْبِشُرٌ بِعِلْمِ اسْمَهُ  
يَحْيَى لَمْ نَجْعَلْ لَهُ مِنْ قَبْلٍ  
(۷:۱۶، مریم)

تَرْجِمَةِ كَنْجُولِ إِيمَان : اے  
جُکرِیٰ ہم تुڑے خوشی سُنا تے ہے  
اک لڈکے کی جین کا نام یہ ہے  
ہے اس کے پہلے ہم نے اس نام کا  
کوئی ن کیا ।

**اللَّاَهُ عَزَّلُ** کی ان پر رہمات ہو اور ان کے سدکے ہماری بے ہیسا ب ماغفیرت ہو ।

أَمِينٌ بِجَاهِ النَّبِيِّ الْأَمِينِ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

### ﴿7﴾ “مَرْ�َمُ” نَامِ ذَرْتَا فَرَمَّا يَا

ہُجْرَتے سَدِّيْدُونا ۝ ابُو مَرْيَمُ فَرَمَّا تے ہے : مَنْ  
نَبِيَّے کَرِيْمَ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ کی خِدَمَت مِنْ ہَاجِر ہو کر  
اَبْرُجَ کی : یا رَسُولُ لَلَّا هُوَ آجَ رَاتَ مَرِے ہَانِ  
بَچَوی کی وِلَادَتِ ہُرَیْ ہے، ہُجُور ہے نے فَرَمَّا يَا :  
آجَ رَاتَ مُوْذَنَ پَر سُورَہ مَرْيَمُ نَاجِیْلَ ہُرَیْ ہے، فَرِ آپ  
نے مَرِے بَوِی کا نام مَرْيَمُ رَخَ دِیا اور  
مَرِے کُنْتَ “اَبُو مَرْيَمُ” رَخَوی । (اسدالغابہ، ۳۰۰/۶، رقم: ۱۲۴۰)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

### پَيْرِ سخنے سے نامِ ذَرْتَا ہُوَا

اَلَا ہُجْرَت شاہِ اِمامِ اَہْمَدِ رَجَأ خَانِ عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ  
کے گھر جب آپ کے چوٹے شاہزادے مُسْتَفَاضَ رَجَأ خَانِ (مُفْتَیِ یونیورسٹی)  
اَجْمَعِ ہند (رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ) کی وِلَادَتِ ہُرَیْ تو آپ یہ  
اپنے مُرشِیدِ خَانَے مِنْ ثَمَّہ । ہُجْرَتے ابُولِ ہُسَيْن نُوری عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ القَوِیِّ  
نے آپ کو پَیَادِ اِشَّوَّ فَرِجَانِد کی مُباَرَکَ بَاد دَی اور فَرَمَّا يَا :  
آپ بَرَلَی تَشَارِیفَ لَے جَائِے । اور “اَبُو بَرَکَاتُ مُحَمَّدُ یُوسُفُ

जीलानी” नाम तजवीज़ फ़रमाया । कुछ दिन बा’द हज़रते नूरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْفَقِيرِ बरेली तशरीफ़ लाए तो शहज़ादए आ’ला हज़रत को आगोशे नूरी में डाल दिया गया । आप ने अपनी अंगुश्टे मुबारक मुस्तफ़ा रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِ كे मुंह में रख कर क़ादिरी व बरकाती बरकात से ऐसा माला माल कर दिया कि येही शहज़ादे बड़े हो कर मुफ़ित्ये आ’ज़मे हिन्द बने । (तारीख़ मशाइख़ क़ादिरिया, 2/447, मुलख़्बसन) हज़रते मुफ़ित्ये आ’ज़मे हिन्द का पैदाइशी और असली नाम मुहम्मद है, वालिदे माजिद आ’ला हज़रत मौलाना अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن نे उर्फ़ी नाम मुस्तफ़ा रज़ा रखा, येह उर्फ़ी नाम इस क़दर मशहूर हुवा कि ख़ासो आम में आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِ को इसी नाम से याद किया जाता है ।

(जहाने मुफ़ित्ये आ’ज़म, स. 102)

صَلَوٰاتٌ عَلَى الْحَبِيبِ!  
लोगों के बुरे नाम रखना

मेरे आका आ’ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुज़दिदे दीनो मिल्लत, मौलाना शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़तावा रज़विया जिल्द 23 सफ़हा 204 पर लिखते हैं : किसी मुसलमान बल्कि काफ़िरे ज़िम्मी<sup>(1)</sup> को भी बिला हाजते शरइया ऐसे अलफ़ाज़ से पुकारना या ता’बीर करना जिस से उस की दिल शिकनी हो उसे ईज़ा पहुंचे, शरअन नाजाइज़ व हराम है । अगर्चे बात फ़ी नफ़िसही सच्ची हो, قَلَّ مَنْ يَقُولُ صِدْقًا وَيَسِّرْ مُكْلِمًا حَقًّا (हर हक़ सच है मगर हर सच हक़ नहीं) (फ़तावा रज़विया, 23/204)

<sup>1</sup> .....अब दुन्या में तमाम काफ़िर हर्बी हैं ।

(गीबत की तबाहकारिया, स. 242 )

لیہا جا جس کا جو نام ہو اس کو اسی نام سے پुکارنا چاہیے، اپنی ترکیب سے کیسی کا ڈلٹا سیधا نام مثالن لامبُ، ٹینگُ، کالُ، وگِرَا ن رخوا جاے، ڈمُون اس ترکیب کے ناموں سے دل آجڑا ہوتی ہے اور وہ اس سے چیختا بھی ہے لیکن پوکارنے والा جان بُوچ کر بار بار مجا لئے کے لیے اسے اسی نام سے پوکارتا ہے، اس کرنے والوں کو سंभال جانا چاہیے کیونکہ رب تا عالم فرماتا ہے :

وَلَا تَأْبُرُ وَإِلَّا لُقَابٌ  
يُسَسَ الْأَسْمُ الْفُسُوقُ بَعْدَ  
الْأُلْيَاءِ (۱۱) (الحجرات: ۱۱)

**تَرْجِمَةَ كَنْجُولِ إِيمَانٍ :** اُور اک دُوسرے کے بُرے نام ن رخو کیا ہی بُرا نام ہے مُسالماں ہو کر فاسیک کھلانا ।

سادھل افاظیل هجڑتے اُلّالاما مौلانا سانیدھ مُہممد نہیں مُرادبادی عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْهَادِي اس آیت کے تہوت لیختے ہیں : (‘یا’ نی وہ نام) جو اُنہے ناگوار ماؤں ہوں । هجڑتے ابھے اُبھاں رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا نے فرمایا کہ اگر کسی آدمی نے کسی بُرائی سے توبہ کر لی ہو اس کو باؤ دے توبہ اس بُرائی سے اُر دیلانا بھی اس نہیں (‘یا’ نی مُمانعِ اُن کے حکم) میں داخیل اور ممتو اُ ہے । باؤ ج ڈلما نے فرمایا کہ کسی مُسالماں کو کُرٹا یا گدا یا سُوکر کہنا بھی اسی میں داخیل ہے । باؤ ج ڈلما نے فرمایا کہ اس سے وہ اُلکا ب مُراد ہے جن سے مُسالماں کی بُرائی نیکلتا ہے اور اس کو ناگوار ہو لیکن تا ریف کے اُلکا ب جو سچے ہوں ممتو اُ نہیں جسے کہ هجڑتے ابُو بکر کا لکب اُتیک (جہنم سے آجڑا) اور

हज़रते उमर का फ़ारूक़ (हक़ और बातिल में फ़र्क़ करने वाला) और हज़रते उषमाने ग़नी का जुन्नूरैन (दो नूरों वाला) और हज़रते अली का अबू तुराब (मिट्टी वाला) और हज़रते ख़ालिद का सैफुल्लाह (**अल्लाह** की तल्वार) और जो अल्क़ाब ब मन्ज़िलए अलम (या'नी नाम के मरतबे में) हो गए और साहिबे अल्क़ाब को नागवार नहीं वोह अल्क़ाब भी ममनूअ़ नहीं जैसे कि آ'मश (कमज़ोर निगाह वाला), آ'रज (लंगड़ा)। (“क्या ही बुरा नाम है मुसलमान हो कर फ़ासिक़ कहलाना” के तहत सदरुल अफ़ाज़िल लिखते हैं) तो ऐ मुसलमानो ! किसी मुसलमान की हंसी बना कर या उस को ऐब लगा कर या उस का नाम बिगाड़ कर अपने आप को फ़ासिक़ न कहलाओ।

(ख़जाइनुल इरफ़ान, स. 950)

### फ़िरिश्ते ला'नत क्वरते हैं

हज़रते सच्चिदुना उम्मैर बिन सा'द رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ बयान करते हैं कि हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, महबूबे रब्बे अकबर كَلِّ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَالْهُوَ أَكْبَرُ ने फ़रमाया : जिस ने किसी शाख़ा को उस के नाम के इलावा नाम से बुलाया उस पर फ़िरिश्ते ला'नत करते हैं। (٢٠١٢، جمع الجواع، ٢٣٧، حدیث: ٢٠١٢)

(التيسير شرح الجامع الصغير، حرف الميم، تحت الحديث: ٤١٦/٢، ٢٠١٢)

### किसी को बै वुकूफ़ या उल्लू कहने का हुक्म

मेरे आक़ा आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजह्दिदे दीनो

मिल्लत, मौलाना शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ से

**سُوْالٌ هُوْا :** جو شاخِس کیسی اُلیم کی نیست بات یا کیسی دوسرے کی لفظ مار دو کہے یا یون کہے کہ وہ ”بے وکوک“ ہے، کوچھ نہیں جانتا اور ”عللُ“ ہے، تو اس شاخِس کی نیست بات شر اُن شریف کیا ہو کم دے گی؟ آ’لہ هجڑت رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ نے جواب دیا: بیلہ واجہ شارِد کیسی مُسالمان کو اسے اُلفاظ سے یاد کرنा مُسالمان کو ناہکِ ایجاد دینا ہے اور مُسالمان کی ناہکِ ایجاد شر اُن هرام۔ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ مَنْ أَذَى مُسْلِمًا فَقَدْ أَذَى إِلَهًا وَمَنْ أَذَى إِلَهًا فَقَدْ أَذَى إِلَهًا فَرِمَاتِهِ هُوَ رَوَاهُ الطَّيْبَانِ فِي الْأَوْسَطِ عَنْ أَنَّ رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ بِسَيِّدِ حَسَنِ (رواه الطیبان في الأوسط عن أنس رضي الله تعالى عنه بسید حسن)

جیس نے بیلہ واجہ شارِد کیسی مُسالمان کو ایجاد دی۔ اس نے مُझے ایجاد دی اور جیس نے مُझے ایجاد دی۔ اس نے **اعلیٰ حکم** کو ایجاد دی۔ (المعجم الاوسط، ۳۸۷/۲، حدیث: ۳۶۰۷) فیر ڈ۔ لماماً دینے متن کی شان تو نیہایت امرفاظ آ’لہ ہے۔ اس کی جناب میں گوستاخی کرنے والے کو ہدیش میں مُنافِک فرمایا: ثَلَاثَةٌ لَا يَسْتَخِفُ بِعَهْدِهِمُ الْمُنَافِقُ ذُو الشَّيْخَةِ فِي الْإِسْلَامِ وَذُو الْعِلْمِ وَكَامَ مُقْبِطٌ رَوَاهُ الطَّبَّارِيُّ فِي الْكَبِيرِ عَنْ أُمَّامَةٍ وَأَبِي الشَّيْخِ فِي التَّوْبِيْخِ عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمْ عَنْ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَا’نِي سَمِّيَدِ اُلَّالَم صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ فَرِمَاتِهِ هُوَ تِيْنَ شَاحِسَ هُوں جیس کا ہک حلکا ن جانے گا مگر مُنافِک، (एक) اسلام میں بُوڈھے والा (دوسرा) اُلیم (تیسرا) بادشاہ اسلام اُدیل۔ (المعجم الكبير، ۲۰۲/۸، حدیث: ۷۸۱۹)

ऐسا شاخِس شر اُن لایکے تا’جیر ہے۔ (فَتَأْوِيلُ رَجْوِيَّة، 13/644)

صَلُّوا عَلَى الْحَسِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

## महब्बत भरे नाम से पुकारना

बसा अवकाश हमारे मीठे मीठे मदनी आका

سَهْلُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ سहابہ کیرام رَضِیَ اللَّهُ تَعَالَیٰ عَنْہُمْ या अज़्वाजे मुत्हररात के नामों को मुख्तसर या तसगीर (छोटे) कर के महब्बत भरे अन्दाज़ से पुकारते, इस की चन्द मिषालें मुलाहज़ा फ़रमाएँ :

❖ हज़रते सच्चिदुना उषमाने ग़नी رَضِیَ اللَّهُ تَعَالَیٰ عَنْہُ को या उष्मैम (۱۱۱۹۰، حديث مسنونا) हज़रते सच्चिदुना अनस رَضِیَ اللَّهُ تَعَالَیٰ عَنْہُ को या उनैस (مسلم، من ۱۲۶۴، حديث ۲۳۰۹) और या ज़ल उजुनैन (ऐ दो कानों वाले) (ترمذی، ۳۹۹/۳، حديث ۱۹۹۸) ❖ हज़रते सच्चिदुना जाबिर رَضِیَ اللَّهُ تَعَالَیٰ عَنْہُ को या जुवैबर (۱۰۱۸۹، حديث ۲۰۸/۱۴) और या जुबैर (جمع الجوامع، ۲۰۹/۱۴، حديث ۱۰۲۰۰) ❖ हज़रते सच्चिदुना मिक़दाम رَضِیَ اللَّهُ تَعَالَیٰ عَنْہُ (ابي داؤد، ۱۸۳/۳، حديث ۲۹۳۳) ❖ हज़रते सच्चिदुना आइशा سिद्दीक़ा رَضِیَ اللَّهُ تَعَالَیٰ عَنْہَا को या आइश (۳۷۶۸، بخارى، ۵۵۱/۲، حديث ۷۸۲۳) और शुक्रेरा (गहरे भूरे रंग वाली) (۷۸۲۳، حديث ۱۳۵/۲) और हुमैरा (सुख्र रंग वाली) (۴۱۲۸، الطبقات ابن سعد، ۸/۶۴، رقم ۴۵/۵، حديث ۱۱۲۸) और या उवैश ! (جمع الجوامع، ۴۸۹/۰، حديث ۱۱۸۳۰) ❖ हज़रते सच्चिदुना जैनब बिन्ते उम्मे سलमा رَضِیَ اللَّهُ تَعَالَیٰ عَنْہَا को या जुवैनब (جمع الجوامع، ۴۸۹/۰، حديث ۱۱۸۳۰) कह कर पुकारा ।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! येह ज़ेहन में रहे कि हमें इस सिलसिले में बहुत एहतियात की ज़रूरत है कि कहीं वोह नाम जिसे हम महब्बत भरा समझ रहे हों सामने वाले को पसन्द न हो मगर वोह अदब व मुरुब्बत की वजह से कुछ कहने

کی ہیمّت ن رکھتا ہو اور بسا اور کھاٹ همara انداز  
دil آجڑا کا بھی سبب بن سکتا ہے لیہا جا ہفتیاٹ کا  
دaman ہاٹ سے نہیں چوڈنا چاہیے ।

صَلُّوا عَلَى الْحَيْبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ  
تُوْمُ “سَفِينَا” ہوَ

ہجرت ساییدونا سفینا رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ بیان کرتے ہیں : میں  
ایک سفر میں ہujr اనوار کے ساتھ تھا । سہابہ  
کیرام صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ میں سے جب کوئی ثکتا اپنی تلبّار، ڈال  
اور تیر مुझ پر ڈال دeta یہاں تک کہ مुझ پر بہت سا سامان  
jam' ہو گaya، راہتے کلّبے ناشاد، مہبوبے ربّوں یہاں  
صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ نے مुझے دے�ا تو ارشاد فرمایا : تُو سفینا  
(جہاں) ہو । اس روئے اگر میں اک، دو، تین، چار، پانچ، چھے،  
سات ٹانٹوں کا بوجھ بھی ڈال لeta تو مुझ پر باری ن ہوتا । جب  
آپ سے آپ کا نام پوچھا جاتا تو کہتے : میں  
بیلکل نہیں بتاऊंگا، میرے آکا صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ نے میرا  
لکب سفینا رکھا ہے ।

(مسند احمد، مسندا النصار حديث ابی عبد الرحمن سفینة، ۲۱۵/۸، ۲۱۹۸۷-۲۱۹۸۴، حدیث: ۲۱۹۸۷)

صَلُّوا عَلَى الْحَيْبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ  
لَكْبَرَ کیسے کہرتے ہیں؟

نام کے یلادا اسے لفظ سے کسی کو پوکارنا لکب  
کہلاتا ہے جس میں تا'ریف و براہ کا کوئی خاص ماننا ہے ।  
(التعريفات للجرجاني، ص ۱۳۶)  
یہ ڈمومن اہلے مہبّت یا دشمنوں کی  
تاریخ سے دیا جاتا ہے، خود نہیں رکھا جاتا ।

मुख्तलिफ़ बुजुगनि दीन رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى के अल्काबात इसी किताब के सफ़हा 166 पर मौजूद हैं।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلُّوا عَلَى مُحَمَّدٍ  
तख़्लुस की ता' रीफ़

शाइर का वोह मुख्तसर नाम तख़्लुस कहलाता है जो अशआर में इस्त'माल होता है, येह उमूमन कलाम के आखिरी शे'र में आता है।

## 12 अक्वबिरीने अहले सुन्नत के तख़्लुस

इमामे अहले सुन्नत मौलाना शाह इमाम अहमद रजा खान	रजा
उस्ताजे ज़मन हज़रते मौलाना हसन रजा खान	हसन
हज़रते मौलाना किफायतुल्लाह काफ़ी	काफ़ी
आ'ला हज़रत के जदे अमजद के शागिर्द मौलाना मुहम्मद हसन इल्मी बरेलवी	इल्मी
मुफ्तिये आ'ज़मे हिन्द हज़रते मौलाना मुस्तफ़ा रजा खान	नूरी
हुज्जतुल इस्लाम हज़रते मौलाना हामिद रजा खान	हामिद
मदाहुल हबीब हज़रते मौलाना जमीलुर्रहमान रज़वी	जमील
सदरुल अफ़ाज़िल हज़रते मौलाना नईमुद्दीन मुरादाबादी	नईम
हकीमुल उम्मत मुफ्ती अहमद यार खान	सालिक
वालिदे सदरुल अफ़ाज़िल हज़रते मौलाना सय्यद मुईनुद्दीन	नुज़हत
अमरौ अहले सुन्नत अल्लामा मौलाना मुहम्मद इल्यास अत्तार क़ादिरी	अत्तार
शैखुल हदीष हज़रते अल्लामा मौलाना अब्दुल मुस्तफ़ा आ'ज़मी	आ'ज़मी

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلُّوا عَلَى مُحَمَّدٍ

## مہبّت بढ़انے کا سबب

بیان **بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ**  
 هِجْرَةٍ سَعِيدٌ دُوَّانٌ دُوَّانٌ  
 کرتے ہیں کہ نبی یحییٰ مُعْذِّبُ الْمُجْرِمِ، رسوئی مُحَمَّدٰ وَآلُہِ وَسَلَّمَ  
 نے ارشاد فرمایا : تین چیزوں تुہارے بارے کے دل میں تुہاری  
 سچی مہبّت کا باہر بنتے ہیں : ۱) جب تُو مُسٹو تو  
 سلام کرو ۲) مجالس میں اس کے لیے فراخی اور وسعت  
 پیدا کرو، اور ۳) اس کے پسندیدا نام سے بولاؤ ।

(جمع الجوامع، ۱۴۱/۴، حدیث: ۱۰۸۱)

**صَلَوَاتُ اللَّهِ عَلَى مُحَمَّدٍ وَآلِهِ وَسَلَّمَ**  
**अच्छे नाम और कुन्यत से पुकारो**

میठے میठے اسلامی بھائیو ! دینے اسلام میں جس ترہ  
 ایک مسلمان کے لیے نام کی اہمیت ہے اور اچھے نام  
 رکھنے کا ہوکم دیا گaya ہے اسی ترہ کونیت بھی اہمیت کی  
 ہامیل ہے اور مسلمان کو کونیت سے پوکارنے کی ترگیب  
 دیلائی گई ہے، چنانچہ، هِجْرَةٍ سَعِيدٌ دُوَّانٌ دُوَّانٌ  
 بیان کرتے ہیں : مہبوبے رబے جوں جلال، ساہبے  
 جوڑے نوال، اس بات کو پسند فرماتے ہے کہ  
 کسی شخص کو اس کے مہبوب نام اور کونیت سے بولایا جائے ।

(جمع الجوامع، ۱۴/۳۳۸-۳۳۹، حدیث: ۱۰۹۰)

**صَلَوَاتُ اللَّهِ عَلَى مُحَمَّدٍ وَآلِهِ وَسَلَّمَ**

## कुन्यत किसे कहते हैं ?

کُنْيَت سے مُرَاد وہ نام ہے جو  
“اب، عَم، إِبْنَهُ يَا إِبْنَتُهُ” سے شروع ہو۔ (التعريفات، ص ۱۳۲)

ਮਥਲਨ ਅਬੁਲ ਕਾਸਿਮ, ਅਬੂ ਬਿਲਾਲ, ਅਬੂ ਰਜ਼ਬ ਔਰ  
ਇਨ੍ਹੇ ਅਹਮਦ ਵਗੈਰਾ

कुन्यत में “अबू” के मा’ ना

मर्द की कुन्यत में “अबू” का लफ़्ज़ आता है, अगर्चे “अब” का लुग़वी मा’ना बाप है लेकिन कुन्यत में हर जगह “अबू” से मुराद बाप नहीं होता, चुनान्वे, हकीमुल उम्मत हज़रत मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ فِرमाते हैं : कुन्यत में “अबू” आता है इस के मा’ना हर जगह वालिद नहीं होते हैं बल्कि अक्षर जगह इस के मा’ना होते हैं : “वाला” । जैसे “अबू जहल” या’नी जहालत वाला, “अबू हुरैरा” या’नी बिल्लियों वाले, ऐसे ही “अबुल हक्म” या’नी फैसला करने वाला, “अबू बक्र” के मा’ना हैं अव्वलिय्यत वाले । (मिरआतुल मनाजीह, 6/510)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ!

## ਅਕੂ ਹੁੰਦੇ ਹਨ (ਛੋਟੀ ਬਿਲਲੀ ਵਾਲੇ)

एक बार सरकारे नामदार ﷺ ने हज़रते  
सच्चिदुना अबू हुरैरा رضي الله تعالى عنه की आस्तीन में छोटी सी  
बिल्ली मुलाहज़ा फ़रमाई तो फ़रमाया : या अबा हुरैरा या'नी ऐ  
छोटी सी बिल्ली वाले ।

(عمدة القاري، كتاب المغازي، قصة دوس و الطفل، ٤١٢/٣٥، تحت الحديث: ٤٣٩٣)

تاب سے اس کو نیت (�ا'نی ابू ہریرا) کو اتنی شوہرت میل  
گई کہ آپ کا نام اُبُرُوہمَان لोگوں کی گالیب  
اکثریت کو یاد ہی نہیں ।

صَلَوَاتُ اللَّهِ عَلَى مُحَمَّدٍ  
صَلَوَاتُ اللَّهِ عَلَى الْحَبِيبِ !

### ابو تراب (میٹی والے)

رسولؐ اکرم، نورِ مُجسِّسِ مَلَكِیَّہ وَالْمَوْسَلِؐ خَاتُونؐ  
جننت हज़रते सच्चिदतुना फ़ातिमा ज़हरा के घर  
तशरीफ़ लाए तो آپ نے हज़रते सच्चिदुना اُलियुल मुर्तज़ा  
कَرَمَ اللَّهُ تَعَالَى وَجْهُهُ الْكَرِيمُ को घर में न पाया, खातूनؐ जनत हज़रते  
सच्चिदतुना फ़ातिमा ज़हरा से इस्तफ़सार फ़रमाया :  
तुम्हारे चचाजाद कहां हैं ? इन्हों ने जवाब दिया : मेरे और उन के  
दरमियान कुछ इख़िलाफ़ हो गया था इस लिये वोह मुझ से  
नाराज़ हो कर घर से चले गए और मेरे पास कैलूला (या'نی दोपहर  
का آرام) नहीं کیया । سرکارे نामदार، مदीने के ताजदार  
صلَوَاتُ اللَّهِ عَلَى مُحَمَّدٍ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने एक शख्स से फ़रमाया : जाओ ! देखो वोह  
कहां हैं ? उस शख्स ने आ کर اُर्ज़ की : या رَسُولُ اللَّهِ ! वोह  
مسجد में लैटे हुवे हैं । سرवरे काइनात، शाहे مौजूदात  
علي صاحبِها الصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ مسِّجِّدِه نबवी شَرِيفُ  
तशरीف़ लाए तो हज़रते سच्चिदुना اُلیاً مُرْتَज़ा  
آرام فَرَمَأَ رَهِيْثَهُ، چادرِ ان کے پھلू سے  
ہٹ گई थी औر پھلूए مُبारک پर میटی لग گई थی । سرکارे  
صلَوَاتُ اللَّهِ عَلَى مُحَمَّدٍ وَآلِهِ وَسَلَّمَ میटی

ساق کرتے ہوئے فرمانے لگے : قومیا باترکاب اقمیا باترکاب ! ٹھرے خاک  
والے ! ٹھرے خاک والے ।

(بخاري،كتاب الصلاة،باب نوم الرجال في المسجد،١٦٩/١، الحديث: ٤٤١)

हज़रते सच्चिदुना सहल बिन सा'द رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ का बयान है कि हज़रते सच्चिदुना اُलियुल मुर्तज़ा كَرَمَ اللَّهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمُ को तमाम नामों में सब से ज़ियादा महबूब अबू तुराब था और जब इन्हें अबू तुराब कह कर पुकारा जाता तो बहुत खुश होते थे ।

(بخاري،كتاب الادب،باب التكني بابي تراب وان كانت له كنية اخرى،٤/١٥٥،Hadith: ٦٢٠:٤)

صَلَوَاتُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ صَلَوَاتُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَى الْحَبِيبِ!

## अबू ज़र (च्यूटियों वाला)

शारे हे बुखारी शम्सुद्दीन मुहम्मद बिन उमर बिन अहमद शफीरी शाफ़ेई (अल मुतवफ़ा 956 हि.) नक़्ल करते हैं : हज़रते सच्चिदुना अबू ज़र गिफ़ारी رضي الله تعالى عنه की कुन्तत अबू ज़र इस लिये हुई कि आप के पास रोटी रखी थी कि अचानक उस पर च्यूंटियां नुमूदार हो गई, आप ने च्यूंटियों समेत रोटी का वज्ञ किया तो उस से रोटी के वज्ञ में कोई इज़ाफ़ा नहीं हुवा, आप ने इरशाद फ़रमाया : “इन च्यूंटियों को देखो ! दुन्या के तराज़ू में इन का कोई अषर ज़ाहिर नहीं हुवा और पलड़ा भारी नहीं हुवा लेकिन आखिरत का मीज़ान बड़ा होने के बा वुजूद हलका है और एक च्यूंटी की वजह से भी वज्ञ बढ़ जाता है,” उस दिन से आप की कुन्तत अबू ज़र रख दी गई । (٤٤/٢، شرح البخاري للسفيري)

صَلُّوا عَلَى الْحَيْثِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

## कुन्यत की अहमियत

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! दीने इस्लाम में कुन्यत की अहमियत का अन्दाज़ा इस से लगाया जा सकता है कि

- ❖ सरकारे मदीना, राहते क़ल्बो सीना صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ समेत मुतअ़हिद अम्बियाए किराम عَنْهُمُ الْأَصْلُوْهُ وَالسَّلَامُ कषीर सहाबा व सहाबिय्यात لَا تَأْذِنُ لَهُمُ الرَّضْوَانَ عَلَيْهِمُ الرَّضْوَانُ ला ता'दाद ड़-लमा, फुक्हा, मुह़दिषीन और बुजुर्गाने दीन رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى ने कुन्यत को इख़ितायार फ़रमाया ।
- ❖ मज़कूरा शख्सिय्यात में से कषीर ता'दाद ने न सिर्फ़ एक बल्कि दो और दो से ज़ियादा कुन्यतें भी रखीं । ❖ कई सहाबए किराम, सहाबिय्यात और बुजुर्गाने दीन के अस्ल नाम आम मुसलमानों को मा'लूम ही नहीं और येह हज़रत नाम के बजाए अपनी कुन्यतों से मशहूर हैं, मपलन : हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र (अब्दुल्लाह बिन उषमान), हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा (अब्दुर्रह्�मान), हज़रते सय्यिदुना अबू अय्यूब अन्सारी (ख़ालिद बिन ज़ैद), हज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म अबू हनीफ़ा (नो'मान बिन घाबित), हज़रते सय्यिदुना इमाम अबू दावूद (सुलैमान बिन अशअष) वगैरा رَضْوَانُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِمْ أَجْمَعِينَ

**صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ**

**अवलाद न होने की सूरत में भी कुन्यत रखना**

अगर्चे मा'रूफ़ येही है कि जिस की अवलाद हो वोही कुन्यत रखता है लेकिन साहिबे अवलाद न होने की सूरत में भी

कुन्यत रखी जा सकती है। रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम  
صلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने ऐसे सहाबा को भी कुन्यत अ़ता फ़रमाई जिन  
की उस वक्त अवलाद न थी, चुनान्चे, हज़रते सच्चिदुना हम्ज़ा  
बिन سुहैब رضي الله تعالى عنه से रिवायत है कि अमीरुल मोअमिनीन  
हज़रते सच्चिदुना उमर फ़ारूके आ'ज़म ने हज़रते  
सच्चिदुना सुहैब رضي الله تعالى عنه से फ़रमाया : क्या वजह है कि तुम  
अपनी कुन्यत “अबू यह्या” रखते हो जब कि अभी तुम्हारे  
यहां अवलाद नहीं है ? हज़रते सच्चिदुना सुहैब رضي الله تعالى عنه ने  
जवाब दिया : सरकारे मर्दीना صلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने मेरी कुन्यत  
“अबू यह्या” रखी है।

(سنن ابن ماجه، كتاب الأدب، باب الرجل يكتنِي قبل أن يولد له، ٢٢٠/٤، حدیث: ٣٧٣٨)

जब कि हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन मसऊद  
 سے رिवायत है कि نبی ﷺ کी مرحومہ زوجتِ مصطفیٰ  
 علیه السلام کو اپنے پسر کا نام "अबू अब्दिरहमान"  
 دے दिया गया था।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ!

अपने बच्चों की कृप्यता रखें

अपने छोटे बच्चों की भी कुन्यत रख देनी चाहिये, चुनान्वे, हज़रते सम्मिलित हैं : अनस رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ سे रिवायत है, कहते हैं : या' नी : अपने बच्चों की कुन्यत रखने में जल्दी करो, कहीं इन के (बुरे) अल्काब न पड़ जाएं ।

(كنز العمال،كتاب النكاح،باب السابع،١٧٦/٨،جزء١، الحديث: ٤٥٢٢)

इस रिवायत के तहत हज़रते अल्लामा अब्दुर्रऊफ़ मनावी  
 نے جो कुछ इरशाद ف़रमाया उस का खुलासा पेश  
 करता हूँ : इस रिवायत में इस बात की तरगीब दिलाई गई है कि  
 अपने बच्चों के लिये कम उम्री में ही कोई अच्छी कुन्यत रख दी  
 जाए । बा'ज़ अवक़ात एक ही नाम कई अफ़राद में मुश्तरक होता है  
 और इस सूरत में लोग ऐसे शख्स को बुलाने के लिये कोई न कोई  
 लक़ब रख देते हैं जो कि अक्षर बुरा होता है । बच्चे की कुन्यत रखने  
 का फ़ाइदा येह है कि जब वोह बड़ा होगा तो येह कुन्यत उसे बुलाने  
 और पुकारने के लिये इस्ति'माल होगी और कोई इस का बुरा लक़ब  
 नहीं रखेगा ।

(فيض القدير، ٢٥١/٣، تحت الحديث ٣١١٦، ملخصاً)

صَلَوَاتُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

### کُنْيَتُ يَادُكَرَنَے کی بَرَكَتُ

हज़रते सच्चिदुना ख़िज़्र عَلَيْهِ السَّلَامُ की कुन्यत “अबुल  
 अब्बास” नाम “बल्या”, वालिद का नाम “मल्कान” जब कि  
 लक़ब “ख़िज़्र” है जिस के माना हैं सब्ज़ चीज़ । हज़रते सच्चिदुना  
 ख़िज़्र عَلَيْهِ السَّلَامُ जहां तशरीफ़ फ़रमा होते वहां आप की बरकत से हरी  
 हरी घास उग जाती थी इस लिये लोग आप को ख़िज़्र कहने लगे ।

बा'ज़ आरिफ़ीन ने फ़रमाया है कि जो मुसलमान हज़रते  
 सच्चिदुना ख़िज़्र عَلَيْهِ السَّلَامُ का और उन के वालिद का नाम, आप  
 की कुन्यत और लक़ब (या'नी अबुल अब्बास बल्या बिन  
 मलकान अल ख़िज़्र) याद रखेगा إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ उस का ख़ातिमा  
 ईमान पर होगा ।

(صاوی، ١٢٠٧/٤، پ ١٥، الکھف़: ٦٥)

صَلَوَاتُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

## کون्यت شاریۃت کے مुتابیکہ ہوئی چاہیے

میठے میठے اسلامی بھائیو ! اک مسالمان کے لیے جیندگی کے دیگر معاً ملات کی ترہ کونیت رکھنے میں بھی شاریۃ کا پاس رکھنا جروری ہے کیونکہ بآج کونیت میں بھی ہے جو شاریۃ ممکن نہ ہے । جس ترہ ہمارے مدنی آکا **صلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** نے بہت سے نام تبدیل فرمائے اسی ترہ بآج کونیت میں بھی تبدیل کیا چوناچے، ہجرتے سیمیدنہ ہانی **رَغْفَى اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** سے ریوایت ہے کہ جب وہ اپنی کوئی کے ہمراہ رسویے اکرم، نور میڈسماں **صلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** کی خدمت میں ہاجیر ہوئے تو آپ نے لوگوں کو سونا کہ وہ انہیں ابھول ہکم کہ کر بولاتے ہے । رسویے بے مثال، بیوی آمینا کے لال **صلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** نے انہیں بولا کہ ارشاد فرمایا : بےشک **اعْزَلْ** ہی ہکم (آپنی فیصلہ فرمانے والے) ہے اور ہکم کا ایکیار ٹسی کو ہے، تعمیری کونیت ابھول ہکم کیون ہے ؟ انہیں نے ارجمند کیا : جب میری کوئی کے درمیان کیسی معاً ملے میں ایکیالا فہمیہ جائے تو وہ لوگ میرے پاس آتے ہے اور میں جو فیصلہ کر دوں وہ اس پر راجی ہو جاتے ہے । سرکارے اباد کرار، شافعی روجے شومار **صلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** نے ارشاد فرمایا : یہ بہت اچھا ہے، کیا تعمیر کوئی بیٹا ہے ؟ ارجمند گزگار ہوئے، شورہ، مسیل م اور ابduct لاہ ہے । ارشاد فرمایا : ان میں سے بड़ا کون ہے ؟ میں نے ارجمند کیا : شورہ । فرمایا : تو فیر تعمیر کونیت ابھول شورہ ہے । (ابوداؤد، کتاب الادب، باب فی تغیر الاسم القبیح ۴/۳۷۶، رقم: ۴۹۰۰)

**صَلُّوا عَلَى الْحَمِيدِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ**

**बड़े बेटे या बेटी के नाम पर कुन्यत इंग्रिज़ीयार करना बेहतर है**

शहें सुना में है : बेहतर येह है कि मर्द अपने बड़े बेटे की निस्बत से कुन्यत रखे, अगर बेटा न हो तो बड़ी बेटी की निस्बत से, यूंही औरत को चाहिये कि अपने बड़े बेटे की मुनासबत से कुन्यत इख्तियार करे और अगर बेटा न हो तो बड़ी बेटी की निस्बत से । (شرح السنة،كتاب الاستئذان،باب تغيير الأسماء،٣٩٤/٦) छोटे बेटे या बेटी के नाम से कुन्यत इख्तियार करने में भी हरज नहीं ।

صَلَوَاتُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ صَلَوَاتُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَى الْحَبِيبِ!

## हृज़रते सचिवदुना आदम عَلَيْهِ السَّلَام की कुन्यत

عَلَىٰ نِبِيَّنَا وَعلَيْهِ الصَّلوةُ وَالسَّلَامُ की एक  
हज़रते सच्चिदुना आदम ﷺ का नाम है, इस का सबब बयान करते हुवे आ'ला  
कुन्यत “अबू मुहम्मद” है, इस का सबब बयान करते हुवे आ'ला  
हज़रत, इमामे अहले सुन्नत इमाम अहमद रजा खान علیه رحمة الرَّحْمٰن  
नक़्ल फ़रमाते हैं : इमाम क़स्त्रलानी मवाहिबे लदुन्निया व मिनहे  
मुहम्मदिय्या में रिसालए मीलाद व इमाम अल्लामा इब्ने तुग़रुबक  
से नाक़िल, मरवी हुवा : आदम علَيْهِ الصَّلوةُ وَالسَّلَامُ ने अर्ज़ की : इलाही !  
तू ने मेरी कुन्यत अबू मुहम्मद किस लिये रखी ? हुक्म हुवा : ऐ  
आदम ! अपना सर उठा । आदम علَيْهِ الصَّلوةُ وَالسَّلَامُ ने सर उठाया  
सिरा पर्दाए अर्श में मुहम्मद ﷺ का नूर नज़र आया ।  
अर्ज़ की : इलाही ! ये है नूर क्या ? फ़रमाया :

هذا نورٌ يحيى من ذريتك اسمه في السماء أَحْمَدُ وَفِي الْأَرْضِ مُحَمَّدٌ لَوْلَا مَا خَلَقْتَكَ وَلَا خَلَقْتُ سَمَاءً وَلَا أَرْضًا

ये हैं नूर एक नबी का है तेरी جुरिय्यत या'नी अवलाद  
से, इस का नाम आस्मान में अहमद है और ज़मीन में मुहम्मद,  
अगर वो ह न होता तो मैं तुझे न बनाता, न आस्मानो ज़मीन को  
पैदा करता । (المواهب اللدنية، ١، ٣٥ / ٣٥، فتاوى رضویہ، ١٩٤ / ٣)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ!

कुन्यत अःता फ़रमाया करते

میڑے میڑے ایسلاٰمی بھاڑیو ! سرکارے مداری نے موناً برا،  
سردارے مککاٰ نے مُکرّمہ مُکرّمہ نے جس ترہ  
صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے مُنڈلے مُنڈلے  
مُتاذدید مداری مُنڈلے کا نام رخا یوں ہی آپ نے کہی خُوش  
نہیں اب افڑا د کو کُنیت بھی اُتھا فرمائی، چنانچہ، ہجڑتے  
سایید تُنہا ہبیبا بینتے اس ابداد کا بیان ہے  
کہ جب میرے یہاں بے تے کی ویلادت ہوئی تو اسے ساییدہ اُلّام،  
نورِ مُجسس میں چلی علیہ وآلہ وسلم کی خدمتے اکڈس میں لے  
جا کر اُرجی کی گردی : یا رسُول اللہ اسے  
کا نام رخ دیجیے । آپ نے ساحل نام  
رخا اور اب ٹماما کُنیت اُتھا فرمائی ।

(الطبقات الكبرى لابن سعد، ٨/٣٢٤ رقم: ٤٥٨٣)

हज़रते उषमाने ग़नी رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ को कुन्यत अता फ़रमाई

हज़रते سच्चिदतुना उम्मे अ़्य्याश رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا से مارवी है

कि **अल्लाह** के महबूब, दानाए गुयूब की  
शहजादी हज़रते सच्चिदतुना रुक्या  
के हाँ बच्चे की  
विलादत हुई तो आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने बच्चे का नाम  
अब्दुल्लाह रखा और बच्चे के वालिद हज़रते सच्चिदुना उषमाने  
ग़नी رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ की कुन्यत अबू अब्दुल्लाह मुकर्रर फ़रमाई ।

(اسد الغاب، ۳۴۱/۳ رقم: ۶۰۴)

**صَلُّواعَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ**

**औरत भी अपनी कुन्यत रखें**

उम्रुल मोअमिनीन हज़रते सच्चिदतुना आइशा سिद्दीका  
से रिवायत है कि आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا से अपने सरताज,  
महबूबे रब्बुल इबाद صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ से अर्ज़ की, कि आप  
صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने मेरे सिवा अपनी तमाम अज़बाजे मुतहरात  
की कुन्यत रखी है । रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम  
ने صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ “उम्मे अब्दुल्लाह” हो ।

(سنن ابن ماجہ، کتاب الادب، باب الرجل یکنی قبل ان یولد لہ، ۲۲۱/۴، حدیث: ۳۷۳۹)

**صَلُّواعَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ**

**मदीने के पहले बच्चे के वालिद की कुन्यत**

صلوٰعَلِيُّ الْحَبِيبِ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّدٍ  
बेटी के नाम पर भी कुन्यत रखी जा सकती है

अगर्चे मा'रूफ येही है कि उमूमन बेटे के नाम पर कुन्यत रखनी जाती है लेकिन अगर कोई बेटी के नाम पर कुन्यत रखना चाहे तो येह न सिफ़ जाइज़ बल्कि हँदीष से पावित है, चुनान्चे, हज़रते सत्यिदुना अबू मरयम (नुजैर) رضي الله تعالى عنه का बयान है कि मैं ने नबिय्ये करीम صلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की ख़िदमत में हाजिर हो कर अर्जु किया : या रसूलल्लाह صلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ आज रात मेरे हां बच्ची की विलादत हुई है, हुज़ूर صلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया : आज रात मुझ पर सूरए मरयम नाजिल हुई है, फिर आप صلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने मेरी बेटी का नाम मरयम रख दिया और मेरी कुन्यत अबू मरयम रखी।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ!

## अमीरे अहले सुन्नत और कुन्यत

الْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ इस सदी की अजीम इल्मी व रुहानी शख्सियत, बानिये दा'वते इस्लामी, अमीरे अहले सुन्नत, हज़रते अल्लामा मौलाना मुहम्मद इल्यास अंतार कादिरी रज़वी ऐसी बुजुर्ग हस्ती हैं जो लाखों लाख मुसलमानों के लिये मरजए अक़ीदत हैं। आप दامت برکاتہم العالیہ भी कुन्यत देने की अदाए मुस्तफ़ा ﷺ को अदा करते हुवे दा'वते इस्लामी के जामिआतुल मदीना से फ़ारिगुत्तहसील उन मदनी इस्लामी भाइयों को जिन्हों ने 12 माह के मदनी क़ाफ़िले में सफ़र की सआदत हासिल कर ली हो, उन को कुन्यतें अंता फ़रमाते हैं।

इस के इलावा भी कषीर इस्लामी भाइयों को अमीरे अहले सुन्नत दامت برکاتہم العالیہ ने कुन्यतें अंता कीं जिन में से 76 दर्ज की जा रही हैं :

- ❖ अबू इख़्लास ❖ अबू इस्माईल ❖ अबू उसैद
- ❖ अबू इशफ़ाक ❖ अबू अकबर ❖ अबू अक्मल ❖ अबुल अशराफ़ ❖ अबुल अन्वार ❖ अबुल ईमान ❖ अबुल बिन्तैन
- ❖ अबुल हसन ❖ अबुल हसनैन ❖ अबुल ख़ियार
- ❖ अबुल अंता ❖ अबुनूर ❖ अबुल वफ़ा ❖ अबू इन्झ़ाम
- ❖ अबू अन्वारिल मदीना ❖ अबू अन्वर ❖ अबू बिलाल

❖ अबू षौबान ❖ अबू जमाल ❖ अबू जुनैद ❖ अबू हाशिर  
❖ अबू हामिद ❖ अबू हम्माद ❖ अबू ख़लिल ❖ अबू राशिद  
❖ अबू रिज़ा ❖ अबू रजब ❖ अबू ज़ाहिद ❖ अबू ज़ियाद  
❖ अबू साइल ❖ अबू सज्जाद ❖ अबू सईद ❖ अबू सलमान  
❖ अबू शाहिद ❖ अबू शराफ़त ❖ अबू शा'बान ❖ अबू  
शफ़ीक ❖ अबू शहीर ❖ अबू साबिर ❖ अबू सादिक ❖ अबू  
सालेह ❖ अबू سदाक़त ❖ अबू त़ाहिर ❖ अबू आरिफ ❖ अबू  
उ़बैद ❖ अबू अ़तीक ❖ अबू उ़ज़ेर ❖ अबू अ़फ़ीफ ❖ अबू  
अ़कील ❖ अबू अ़ली ❖ अबू उ़मर ❖ अबू गुफ़्रान ❖ अबू  
फ़राज ❖ अबू फ़्याज ❖ अबू करम ❖ अबू कलीम ❖ अबू  
कुमैल ❖ अबू माजिद ❖ अबू मुबीन ❖ अबू मुह़म्मद ❖ अबू  
मदनी ❖ अबू मसऊ़द ❖ अबू मन्सूर ❖ अबू मूसा ❖ अबू  
मीलाद ❖ अबू नासिर ❖ अबू नो'मान ❖ अबू नईम ❖ अबू  
वाजिद ❖ अबू वासिफ ❖ अबू हिलाल ❖ अबू यासिर  
❖ अबू यूसुफ ।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ!

# कुन्यत की सुन्नत जिन्दा कीजिये

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! कुन्यत रखना सरकारे**

نامدار، مدارنے کے تاجدار ﷺ کی مُبارک سُنّت

है लेकिन फ़ी ज़माना दीगर कई सुन्नतों की तरह ये ही तर्क होती जा रही है। आइये ! अदाए सुन्नत की नियत से कुन्यत को इख़ित्यार कीजिये। अगर आप साहिबे अवलाद हैं और **अल्लाह** ने आप को एक से ज़ियादा मदनी मुन्नों या मुन्नियों से नवाज़ा है तो बेहतर है कि अपने बड़े बेटे की निस्बत से कुन्यत इख़ित्यार करें अगर बेटा न हो तो बेटी की निस्बत से कुन्यत रखें, अवलाद होते हुवे किसी और नाम से कुन्यत रखना भी दुरुस्त है और अगर आप शादी शुदा या साहिबे अवलाद नहीं तो भी कुन्यत रखी जा सकती है जैसा कि पहले ज़िक्र हो चुका है।

अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ सहाबए किराम رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَنْهُمْ और दीगर बुजुगनिे दीन رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَنْهُمْ की कुन्यतें इसी किताब के सफ़हा **157** पर मौजूद हैं।

**صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلُّ اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ**

**जब किसी का नाम याद न हो तो कैसे पुकारते ?**

हज़रते सच्चिदुना जारिया अन्सारी رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ बयान करते हैं : सरकारे नामदार, दो अ़ालम के मालिको मुख्तार को जब किसी का नाम याद न होता तो आप **عَلَيْهِ اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَالْمَلَائِكَةِ وَالْأَنْبِيَاءِ وَالْمُلَائِكَةِ وَالْمُرْسَلِينَ** उसे “या इन्हे अब्दुल्लाह या”नी ऐ अब्दुल्लाह के बेटे !” कह कर बुलाते थे।

(جمع الجوامع، ٤٤٩/٥، حديث: ١٦٤١٨)

इमाम शरफुद्दीन नववी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِيٰ लिखते हैं : जिस का नाम मा'लूम न हो उस को ऐसे लफ्ज़ से पुकारना चाहिये जिस से उसे अजिय्यत न हो, इस में झूट न हो और न ही खुशामद मषलन : ऐ भाई, ऐ मेरे सरदार, ऐ फुलां, ऐ फुलां कपड़े वाले, ऐ फुलां जूती वाले, ऐ घोड़े वाले, ऐ ऊंट वाले, ऐ तल्वार वाले, नेज़े वाले वगैरा ऐसे अल्फ़ाज़ जो पुकारने वाले और पुकारे जाने वाले दोनों के हस्बे हाल हों ।

(الاذكار، كتاب الاسماء، باب نداء من لا يعرف اسمه، ص ٢٣١ ملخصاً)

صَلَوَاتُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّدٍ صَلَوَاتُ الْحَبِيبِ! پُوكارے نے ڈاؤر جیکرو کرئے کا ڈانڈا ج

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मुसलमान चाहे वोह हम  
से बड़े हों या छोटे, उन को पुकारने, ज़िक्र करने में उन के मकाम  
व मर्तबे का ख़्याल रखा जाए और इसी मुनासबत से अल्फ़ाज़  
और अलक़ाब का इन्तिख़ाब किया जाए। सरकारे मदीनए मुनव्वरा,  
सरदारे मक्कए मुकर्मा صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने आलीशान  
है : فَإِنَّمَا مِنْ لَهُ مَنْ يَرْحَمُ صَبَرْتَأَنَّكَمْ يُوْقِرُ كُبِيرْتَأَنَّ जो हमारे छोटे पर शफ़क़त न  
करे और हमारे बड़े की ताँ'जीम न करे तो वोह हम में से नहीं ।

(ترمذى، كتاب البر والصلة، باب ماجاء فى رحمة الصبيان، ٣٦٩ / ٣، حديث: ١٩٢٦)

मुफ्सिसे शहीर हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ्ती अहमद  
यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَن लिखते हैं : या'नी हमारी जमाइत से या  
हमारे तरीके वालों से या हमारे प्यारों से नहीं या हम उस से बेज़ार

हैं वोह हमारे मक्बूल लोगों में से नहीं, ये ह मतलब नहीं कि वोह हमारी उम्मत या हमारी मिल्लत से नहीं क्यूंकि गुनाह से इन्सान काफ़िर नहीं होता । (मिरआतुल मनाजीह, 6/560)

صَلَوٰةُ عَلٰى الْحَبِيبِ ! صَلَوٰةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّدٍ  
جَنَّتٌ مِّنْ مَدْنٰيَةِ آَكَافِرٍ كَيْفَ رَفَعَكُمْ بَانِيَةَ نُورِكُمْ

हजरते सच्चिदुना अनस बिन मालिक رضي الله تعالى عنه से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صلَوٰةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلٰى عَلِيِّهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया : ऐ अनस ! बड़ों का अदबो एहतिराम और ताजीम व तौकीर करो और छोटों पर शफ़क़त करो, तुम जनत में मेरी रफ़ाक़त पा लोगे ।

(شعب الایمان، باب فی رحم الصغیر، ٧، حديث: ٤٥٨، ١٠٩٨)

एक मुसलमान को अपनी ज़िन्दगी में जिन शख्सयात का ज़िक्र करने और पुकारने की ज़रूरत पड़ती है उन को 11 हिस्सों में तक्सीम किया जा सकता है : (1) सरकारे मदीना عَلَيْهِمُ الصَّلوةُ وَالسَّلَامُ (2) दीगर अम्भियाएँ किराम رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمُ الرِّضوانُ (3) सहाबएँ किराम (4) बुजुर्गाने दीन عَلَيْهِمُ الرِّزْقُ (5) उँ-लमाएँ किराम व मुफ़ितयाने उज्ज़ाम (6) दीनी असातिज़ा (7) सादाते किराम (8) बुद्धे इस्लामी भाई (9) मां-बाप (10) रिश्तेदार (11) हम उम्र इस्लामी भाई ।

इन सब को पुकारने की तफ़्सील ये है :

**﴿1﴾ سरकारे मदीना को पुकारना**

अल्लाह عزوجل के प्यारे हबीब, हबीबे लबीब, तबीबों के तबीब صلَوٰةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلٰى عَلِيِّهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को पुकारने, उन का ज़िक्र करने का

ادب हमें कुरआने मजीद से سीखने को मिलता है चुनान्वे,  
पारह 18 سورए नूर की آyat 33 में इरशाद होता है :

لَا تَجْعَلُو دُعَاءَ الرَّسُولِ بِيَدِكُمْ  
كُدُّعَاءَ بَعْضِكُمْ بُعْضًا

(٦٣، النور: ١٨)

تَرْجِمَةِ كَنْجُلَ إِيمَانٌ : رَسُولُكَ  
پُکارَنے کو آپس میں اسے نَثَرَہ  
لے جیسا تُم میں اک دُسرے کو  
پُکارتا ہے ।

سَدِّرُلَ اَفَاجِلِ هَجَرَتِ اَللَّا مَا مُلَانَا سَرِيَد  
مُهَمَّدَ نَرْمَ مُدِّيَنِ مُرَادَبَادِي عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِي  
इस آyat के  
تھت لی�تے ہیں : رَسُولُ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ کو نیدا کرے تو  
ادبو تکریم اور تؤکیر و تا'جیم کے ساتھ آپ کے مُعَذَّبِم  
اللکاب سے نرم آواج کے ساتھ مُوتواجِ اُنا و مُونکسیرانا  
(या'नी आजीजी भरे) لہজے میں “या नबिय्यल्लाह, या  
हबीबल्लाह” کह کر । (খঃ বাইনুল ইরফান, স. 667)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

**سَهْبَابَعْ كِرَامَ** عَلَيْهِمُ الرِّضْوَانَ

سَهْبَابِ اَکِرَامِ جب رَسُولُکَ اکرَام, نُورِ مُجَسَّم  
سے ہم کلام ہوتے تو یوں اُرجِ کیا کرتے :  
فِدَاكَ أَبِي وَأُمِّي (مेरے ماں-بآپ آپ پر کُربَان)

(شعب الایمان، باب فی الزهد وقصر الامل، ۳۰۲/۷، رقم: ۱۰۳۸۸)

﴿صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ يَا بَنِي أُنَّتْ وَأُمِّي يَا رَسُولَ اللَّهِ مَرِيٌّ مَّا مَنَّ بَانَ لَكَ أَبَانَ هُوَ أَبَانٌ﴾ (یا رَسُولَ اللَّهِ مَرِيٌّ مَّا مَنَّ بَانَ لَكَ أَبَانَ هُوَ أَبَانٌ) (یا رَسُولَ اللَّهِ مَرِيٌّ مَّا مَنَّ بَانَ لَكَ أَبَانَ هُوَ أَبَانٌ)

(بخاری، کتاب الصوم باب الريان للصائمین، ۶۲۵/۱، رقم: ۱۸۹۷)

﴿نَبِيٌّ مَّا مَنَّ بَانَ لَكَ أَبَانَ هُوَ أَبَانٌ﴾ نبیٌّ مَّا مَنَّ بَانَ لَكَ أَبَانَ هُوَ أَبَانٌ آپ کی پुکار کے جواب مें آپ پر کُرबान जाऊँ मैं खिदमत में हाजिर हूं)

(شعب الایمان، باب فی مقاربة واموادة، ۴۰۸/۶، رقم: ۸۸۹۰)

**صلوٰعَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ  
या رَسُولَلَّا هُوَ ك्यूँ न कहा?**

سہا بے کیرام ن عَلَيْهِمُ الرِّضْوَانِ سِرکارے مداریا  
کو نیہات ادب سے پوکارا کرتے یہ بالکل  
عنہ یہہ بھی گوارا ن ثا کی کوئی عن کے سامنے سیف نام لے کر  
ہुجڑے اکرم نورے موجسس م صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ کو نیدا کرے، چنانچہ،  
ہجڑتے سیحیدونا بیویان فرماتے ہیں: دلماں یہود م مَنْدَلَةَ اللَّهِ تَعَالَى عَنْهُ  
سے اک شاخ سرکارے نامدار، مداریا کے تاجدار صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ  
کی خیدمت میں ہاجیر ہوا اور برج کی:

السلامُ عَلَيْكَ يَا مُحَمَّدٌ میں نے اس کو جو کا دھککا دیا جس سے وہ  
گیرتے گیرتے بچا، کہنے لگا: تुم نے مुझے دھککا کیا دیا ہے?  
میں نے کہا: اس لیے کی تुم نے یا رَسُولَ اللَّا هُوَ ابَانٌ

(مسلم، کتاب الحیض، باب بیان صفة منی الرجل والمرأة، ص ۱۷۶، رقم: ۳۱۵)

**صلوٰعَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ**

ଆ'ଲା ହୁଜ୍ରତ ରَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ کାଗ ଅନ୍ଦାଜ

मेरे आक़ा आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजहिदे  
 दीनो मिल्लत, मौलाना शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ  
 ने एक सुवाल का जवाब देते हुवे नबिय्ये करीम, रऊफुर्रहीम  
صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के अल्काबात युं लिखे :

حضور اقدس قاسم الیعم، مالکُ الارض و رقابِ الامم، معطيٌ، منعم، فشم، قيم، ولی، ولی، علی، عاليٌ، کاشفُ الكرب، رافع الرُّتب، معین کافيٌ، حفیظ وافيٌ، شفیع شافیٌ، عفوٌ عافیٌ، غفور جمیلٌ، عزیز جلیلٌ، وهاب کریم، غنی عظیم، خلیفة مطلق حضرت رب، مالکُ الناس و دیان العرب، ولی الفضل جلی الافضال، رفیع المثل، مُمتنع الامثال صلی اللہ تعالیٰ عليه وسلم وآلہ وصحبہ

(फृतावा रज्विय्या, 14/626)

ડામીરે ડાહલે સુન્નત દામ્ત بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه કવ મા' મૂલ

شے خے تریکھت، امیرے اہلے سُنّت، هجڑتے اُلّا اما  
مُلانا ابوبیلآل مُحَمَّدِ ایلیاس اُنّا ر کا دیری رجھی  
عَوْجَلْ جب **اللَا حَمْدُ لِلّٰهِ** کے مہبوب، داناءِ گوہب،  
مُنْجَحْ ہون اُنیل ڈیوب **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** کا تجھکرا کرتے  
ہیں تو اک اک لفڑی سے ادبو اہتیرامِ جلالکتا ہے، آپ  
عَوْجَلْ **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** دامِت برکاتُہمُ العالیہ  
ڈمُون مہم کافیخیا اُلکا بات کے ساتھ  
پیارے پیارے مدنی آکھا **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** کا جیکے مُبارک  
کرتے ہیں، مسئلہ ن : سرکارے مدنیا، سلطانے بنا کرینا،  
کھرا رے کلبے سینا، فی ج گنجینا **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ**  
 سرکارے کا اننا، شاہے مائیڈا، مہبوبے رجھل اردے  
و سسما وات **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** سرکارے دو اُلّام، نورے

صلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ مُujسِّسِ مُسَمٍّ

❖ رَسُولِهِ بَيْنَ مِيقَاتِهِ وَبَيْنَ جُنُوبِهِ

❖ رَسُولِهِ بَيْنَ جَنَاحَيْنِهِ وَبَيْنَ جَنَاحَيْنِهِ

❖ رَسُولِهِ بَيْنَ نَجْدَتِهِ وَبَيْنَ نَجْدَتِهِ

❖ سَرِّكَارِهِ وَأَبَدِهِ وَأَبَدِهِ

❖ دَوْلَتِهِ وَدَوْلَتِهِ

صَلَوَاتُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

**(2) اُمُّبِيَادُوں کی کرامہ پُکارنا**

اُلَّا حُلُوكُ مِنْ اُمُّبِيَادٍ

سَبَبِ اُمُّبِيَادٍ هُنْ هُنْ تَذَكَّرُونَ

اُمُّبِيَادُوں کا تَذَكَّرٌ

जब एक नबी का जिक्र हो तो، دो عَلَىٰ نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ का जिक्र हो तो عَلَىٰ نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِمَا الصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ और दो से ज़्यादा का जिक्रे ख़ेर हो तो عَلَىٰ نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِمُ الصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ कहना और लिखना चाहिये ।

**صَلُّو عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلُّ اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ**

### ﴿3﴾ سہابے کرام کو پوکارنا

अम्बियाएं किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَانُ के बा'द मलाइकए मुर्सलीन और सादात फ़िरिश्तगाने मुकर्रबीन और उन के बा'द سहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَانُ बहुत बुलन्द मर्तबे के हामिल हैं और कोई वली चाहे कितने ही बुलन्द मकाम तक क्यूँ न पहुंच जाए लेकिन سहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَانُ का हम मर्तबा हरगिज़ नहीं हो सकता ।

(फ़तावा رज़विया, 23/354-357)

فَرَمَانَهُ مُسْتَفْأِيٌّ هُنَّا : صَلُّ اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَالْيَمَّ وَسَلِّمَ

**لَا تَسْبِيوا أَصْحَابِي فَلَوْلَا أَحَدٌ كُمْ أَنْقَقَ مِثْلَ أَحْدِ ذَهَبًا مَا بَلَغَ مِنْ أَحَدِهِمْ وَلَا نَصِيفَهُ**

मेरे सहाबा को बुरा न कहो, अगर तुम में से कोई शख्स उहुद पहाड़ जितना सोना ख़र्च करे तो भी उन के ख़र्च किये हुवे एक मुद या निस्फ़ मुद के बराबर नहीं पहुंचेगा ।

(بخاری،كتاب فضائل اصحاب النبي،باب قول النبي "لو كنت متخدنا خليلًا" ، حدیث: ٣٦٧٣: ٥٢٢/٢)

سہابے کرام عَلَيْهِمُ الرِّضْوَانُ के मुबारक نाम से पहले "ہِجْرَتَهُ سَعِيْدُ دُنَانَا" और अगर سहाबिया हों तो "ہِجْرَتَهُ سَعِيْدُ دُنَانَا" जब कि नाम के बा'द ता'दाद और जिन्स की मुनासबत से दुआइया कलिमात का इस्त'माल करना चाहिये, चुनान्वे, मर्द सहाबी एक

ہونے تو دو ہونے تو رَبُّهُ تَعَالَى عَنْهُمْ رَبُّهُ تَعَالَى عَنْهُمْ جب کی دو سے جیسا دا  
ہونے کی سُورت میں رَبُّهُ تَعَالَى عَنْهُمْ رَبُّهُ تَعَالَى عَنْهُمْ خاتون سہابیyya اک ہونے تو  
دو ہونے تو رَبُّهُ تَعَالَى عَنْهُمْ رَبُّهُ تَعَالَى عَنْهُمْ جب کی دو سے جیسا دا کے لیے  
کہنا اور لیخنا چاہیے ।

**مُعْذَلِیف** سہابے کیرام عَلَيْهِمُ الرِّضْوَانِ کے ناموں کے ساتھ  
مُخْسُوس اُلکا بات و خیڑا بات کا ایسٹ' مال بھی ائن سادا دت  
ہے مثالان ہجارتے ساییدونا ابू بکر کے لیے رَبُّهُ تَعَالَى عَنْهُ رَبُّهُ تَعَالَى عَنْهُ  
سیدیکے اکبر، ہجارتے ساییدونا ڈمر کے لیے رَبُّهُ تَعَالَى عَنْهُ رَبُّهُ تَعَالَى عَنْهُ  
فراں کے آجم، ہجارتے ساییدونا ڈشمائنے گنی رَبُّهُ تَعَالَى عَنْهُ  
کے لیے جو نور، ہجارتے ساییدونا اُلیا یوں مُرتजَا  
کے لیے شرے خودا، ہجارتے ساییدونا خالد  
بین والید رَبُّهُ تَعَالَى عَنْهُ کے لیے سپوللہاہ وگرے ।

آگرے ہمارے معاشرے میں ڈمُمن کا ایسٹ' مال  
سہابے کیرام عَلَيْهِمُ الرِّضْوَانِ کے لیے ہوتا ہے جب کی ایمما و  
اویلیا کے لیے رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَنْهِ ایسٹ' مال کیا جاتا ہے لے کن  
یاد رکھیے کی شارڈ اے' تیبار سے کا ایسٹ' مال  
سہابی و گرے سہابی دوں کے لیے جائیج ہے ।

(مجزید تفسیل کے لیے دیکھیے : فتاوا رجیلیا, 23/390)

#### ﴿4﴾ بُعْدُ گنے دین رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى کو پوکرنا

بُعْدُ گنے دین رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى کے جیکر میں بھی ادبو اہلتیرام  
کا لیہا ج رکھنا جروری ہے چاہے وہ ہیاتے جاہری سے مُرتضیٰ

हों या दुन्या से पर्दा कर चुके हों। नाम से पहले “हज़रते सच्चिदुना”  
जब कि नाम के बा’द رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ वगैरा दुआइय्या कलिमात का  
इस्ति’माल करना चाहिये नीज़ मुख्तलिफ़ बुजुर्गने दीन के लिये  
मख्सूस अल्काब का लिखना और बोलना भी ऐन सआदत है  
मषलन : हज़रते सच्चिदुना इमामे आ’ज़म अबू हनीफ़ा नो’मान  
बिन षाबित رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ कुत्बे रब्बानी, महबूबे सुब्ज़ानी हज़रते  
सच्चिदुना गौषे आ’ज़म शैख़ अब्दुल कादिर जीलानी قُدْسَ سَلَامٌ عَلَيْهِ الرَّبِّين  
वगैरा । जो बुजुर्गने दीन हयात हों उन के लिये دامت برکاتهم العالية رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِمَا  
वगैरा दुआइय्या कलिमात का इस्ति’माल करना चाहिये । जब  
एक बुजुर्ग का ज़िक्र हो तो رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِمَا दो हों तो رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِمَا  
जब कि दो से ज़ियादा होने की सूरत में ख़ातून बुजुर्ग एक हों तो رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِمَا जब कि  
दो से ज़ियादा के लिये رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِمْ कहना और लिखना चाहिये ।  
बुजुर्गों के नामों के साथ दुआइय्या कलिमात लिखने में याद आने  
पर हम क़ाफ़िय्या अल्फ़ाज़ इस्ति’माल करने से तहरीर व तक़रीर  
में कशिश पैदा होती है मषलन हज़रते सच्चिदुना अल्लामा शामी  
के साथ दुआइय्या कलिमात के साथ और सच्चिदुना शैख़ अब्दुल हक़ मुह़द्दिषे  
दहेल्वी के साथ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِيِّ ।

صَلَوَاتُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ صَلَوَاتُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَى الْحَبِيبِ!

**(5) ठ-लमाए किराम व मुपितयाने इज़ज़ाम** كثُرُّهُمُ اللَّهُ السَّلَامُ को पुकारना

उ-लमाए किराम व मुफ्तियाने इज्जाम और काबिले

एहतिराम दीनी शख्सयात से हम कलाम होने और उन का तज़्किरा करने में भी अदबो एहतिराम को मल्हूज़ रखना अज़्हद ज़रूरी है मषलन यूं कह कर मुख़ातिब कीजिये : हज़रत ! हुज़ूर ! जनाब वगैरा, जिस शख्सय्यत का लक़ब मशहूर हो उसे उस लक़ब से भी पुकारा और लिखा जा सकता है जैसे मेरे آक़ा हज़रत مولانا شاہ اسماء احمد رضا خاں ﷺ का मशहूر لक़ब मुबारक “آ’ला हज़रत” और “इमामे اہلہ سُنْنَۃ” है, शहजादए آ’ला हज़रत हज़रतے اُल्लामा مُعْتَدِل مُسْتَف़ा رضا خاں का लक़ब “مُعْتَدِل يَهُ آ’جَمِيَّهُ هِنْدُ” मुफ्ती اہمद यार खान का लक़ब “हकीमُل اُمَّتٍ” इसी तरह बानिये दा’वते इस्लामी हज़रते اُल्लामा مौलाना अबू بिलाल मुहम्मद इल्यास اُत्तार क़ादिरी دامت برکاتُهُمْ وَأَعْلَمُهُمْ का मशहूर लक़ब “امیرِ اہلہ سُنْنَۃ” है।

صَلَوَاتُ اللَّهِ عَلَى الْحَبِيبِ!

### ﴿6﴾ دीनی درستیج़ा کو پوکارنا

दीनी उस्ताज़ रुहानी बाप होता है इस लिये उन को भी ता’ज़ीमी अन्दाज़ से उस्ताज़े मोहतरम, उस्ताज़ سाहिब, या उस्ताज़ी कह कर पुकारना और लिखना चाहिये। सरकारे نामदार, मदीने के ताजदार ने صَلَوَاتُ اللَّهِ عَلَى عَلِيِّهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ फ़रमाया : इल्म हासिल करो और इल्म के लिये बुद्धारी व वक़ार सीखो, और जिस से इल्म हासिल कर रहे हो उस के सामने आजिज़ी व इन्किसारी इख़ित्यार करो। (المعجم الاوسط، ٤/٣٤٢، حدیث: ٦١٨٤)

صَلَوَاتُ اللَّهِ عَلَى الْحَبِيبِ!

## (7) سادھاتے کیرام کو پुکارنا

ہجڑتے مولانا نور محمد اور ہجڑتے مولانا سعید کناعت اعلیٰ یہ رحمۃ اللہ الصمد یہ دوںوں ہجڑات، مسجدی دینوں میللات، آلا ہجڑات جیسے سچے ایشیکے رسول کی سوہبتوں بارکات میں رہ کر اسلامی دین کی دلائل بے بہا حاسیل کر رہے تھے۔ ایک مرتبہ مولانا نور محمد اعلیٰ یہ رحمۃ اللہ الصمد نے سعید ساہب کا نام لے کر اس تراہ پوکارا：“کناعت اعلیٰ، کناعت اعلیٰ！” جب سعید دوسرا دات کے ایشیکے سادیک کے کانوں میں یہ آواز پڑی تو گوارا ن کیا کہ خاندانے رسول کے شہزادے کو اس تراہ نام لے کر پوکارا جائے۔ فوراً مولانا نور محمد ساہب کو بولوایا اور فرمایا：“کہا سعید جادوں کو اس تراہ پوکارتے ہیں! کبھی مझے بھی اس تراہ پوکارتے ہوئے سुنا?” (یا’نی میں تو عسٹا جھنڈے پر بھی کبھی اسے انداز جھنڈیا ر نہیں کیا) یہ سمع کر مولانا نور محمد ساہب بہت شرمی نہ ہوئے اور ندامت سے نیگاہیں جوکا لیں۔ آلا ہجڑات اعلیٰ یہ رحمۃ اللہ الصمد نے فرمایا：“جاہیے! آہندا خیال رکھیے گا!”

(ہیات آلا ہجڑات، ص 1/183)

میठے میठے اسلامی بادیو! مداری و والے آکھا، دو ایلام کے داتا صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم کے شہزادوں کو ادب سے پوکارنا چاہیے، بارج اعلیٰ کو میں سعید جادوں کو “شاہ ساہب، شاہ جی” جب کی بابوں مداری کراچی اور دیگر بارج جاگہوں پر “باؤ” کہ کر بولوایا اور لیخا جاتا ہے۔

صلوٰعَلِيُّ الْحَبِيبِ! صلی اللہ تعالیٰ علیٰ مُحَمَّدِ

## ﴿8﴾ بُعْدِ إِلْهَامِيَّةِ الْمُبَارِكَةِ

इस्लाम एक कमिल व अकमल दीन है जो हमें बुजुर्गों का एहतिराम सिखाता है। सरकारे अबद क़रार, शाफ़ेए रोज़े शुमार عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَبِهِ وَسَلَّمَ ने ف़रमाया : जो नौजवान किसी बुजुर्ग के सिन रसीदा (या'नी बुद्धि) होने की वजह से उस की इज़्ज़त करे तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के लिये किसी को मुकर्रर कर देता है जो उस नौजवान के बुढ़ापे में उस की इज़्ज़त करेगा। (ترمذی،كتاب البر والصلة،باب ماجه في اجلال الكبير،٤١١/٣،حدیث: ۲۰۲۹)

बुद्धों को हस्बे रवाज व उर्फ़ इज़्ज़त से पुकारना चाहिये मषलन बा'ज़ अलाक़ों में “बाबा जी”, “बड़े मियां” कह कर पुकारना मुरव्वज है। अगर दादा, दादी या नाना नानी हयात हों तो उन को दादा हुज़ूर, दादा जान, दादा जी, नाना हुज़ूर, नाना जान, नाना जी वगैरा कह कर पुकारना चाहिये।

**صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلُّوا عَلَى مُحَمَّدٍ!**

## ﴿9﴾ مां-बाप को पुकारना

वालिदैन का एहतिराम करना, उन्हें इज़्ज़त से पुकारना दोनों जहानों में ढेरों भलाइयां पाने का सबब है। वालिद साहिब को हस्बे मौक़अ़ और हस्बे रवाज अब्बू जी, अब्बा हुज़ूर, बाबा और वालिदा साहिबा को अम्मी हुज़ूर, अम्मी जान, अम्मी जी वगैरा कह कर पुकारना चाहिये।

**صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلُّوا عَلَى مُحَمَّدٍ!**

## ﴿10﴾ रिश्तेदारों को पुकारना

रिश्तेदार दो किस्म के होते हैं, एक वोह जो उम्र में हम से बड़े हैं और दूसरे वोह जिन की उम्र हम से कम होती है।

بडے ریشتمانیوں کو پوکارنے کے لیے مुख्तالیف جہاں اور اُلماکوں میں مुख्तالیف اُلپاڑا جو اور اندازِ راہیں ہیں، ان میں سے جو ادب کے جیسا دا کریب اور شریعت کے موتا بیکھوں اچھی اچھی نیتیوں کے ساتھ انہیں ایکھیا ر کرنا چاہیے । با'جُ اُلماکوں میں مامُ جان، چچا جان، بارڈ جان وغیرا بولنا جاتا ہے ।

**کم ۱۰۰ ریشتمانیوں مثالن ہوئے بارڈ بہن، بانجے، بتویجے نیجُ اپنی اولماد سے گوپتگو اور انہیں پوکارنے میں شافعی سے بھرپور اور مسیحی اُندازِ اپنانا اور ”آپ جناب“ سے بات کرنا ن سیر فی بات کرنے والے کی شاخیت کی اُک کاسی کرتا ہے بلکہ یہ اندازِ بچوں کی تربیت میں بھی مسیحیانہ شایستہ ہوتا ہے کیونکہ بچے ٹمومان بڈوں کے اکوال و اپال سے اپنے لئے اور ان کی نکالی کرتے ہیں । اس بارے میں ہمارے پیارے پیارے آکا، مککی مدنی مسٹفی کا صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم تجویں اُمل کیا تھا اس ریوایت سے اندازا لگائیے، چنانچہ، ہجرت سے سیمی دُنہ ان سے بین مالکی رضی اللہ علیہ عنہ سے ریوایت ہے کہ سرکارے مدنی نے صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم میں سے ارشاد فرمایا :  
اے بے طے !**

(مسلم، کتاب الادب، باب جواز قولہ لفیر اپنے یا بنی، ص ۱۱۸۵، رقم: ۲۱۵۰)

### میاں بیوی کا اک دوسرے کو پوکارنا

دا'تے اسلامی کے ایسا اُتی ادراe مکتبتوں مدنیا کی متابوں ۱۱۹۵ سفہیات پر مُشتمل کتاب بہارے شریعت (جیلد ۳) سفہی ۶۵۷ پر ہے : اُرط کو یہ مکرہ ہے کہ شوہر کو نام لے کر پوکارے । (درخت، ۱/۱۹۰) با'جُ جاہلیوں میں یہ مسحور ہے کہ اُرط اگر شوہر کا نام لے لے تو نیکاہ تھوڑا جاتا ہے ।

येह ग़लत है शायद इस लिये गढ़ा हो कि इस डर से कि त़लाक़ हो जाएगी शोहर का नाम न लेगी । (बहारे शरीअत, 3/657)

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** पहले की औरतें इस क़दर ह़यादार होती थीं कि अपने शोहर का नाम लेते हुवे झिजकती थीं और मुन्ने के अबू वगैरा कहती थीं । मगर अब तो बिला तकल्लुफ़ “मेरे मियां, मेरे शोहर, मेरे हज़बन्द (**Husband**)” कहती हैं । और मर्द भी मेरे बच्चों की अम्मी वगैरा कहने के बजाए “मेरी बीवी, मेरी वाइफ़, मेरी घरवाली” कहते हैं, अपने बच्चों के मामूं का तआरुफ़ करवाने का काफ़ी शौक़ देखा गया है । अगर्चे वोह कज़िन हो तब भी बिला ज़रूरत सिर्फ़ “साला” कह कर तआरुफ़ करवाएंगे । ग़ालिबन हज़े नफ़्स के लिये ऐसा किया जाता होगा । कोशिश फ़रमाइये कि मुह़ज़ब अल्फ़ाज़ ज़बान पर आएं, हाँ, ज़रूरतन बीवी या शोहर वगैरा का रिश्ता बताने में हरज भी नहीं । (बा हया नौजवान, स. 39)

दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल में दीगर मुआशरती और अख़लाकी पहलूओं के साथ साथ इस हवाले से भी तर्बियत का एहतिमाम किया जाता है, अमीरे अहले سुन्नत دامت برکاتُهُمُ الْعَالِيَةُ के अ़ता कर्दा नेक बनने के नुस्खे “**72** मदनी इन्अ़ामात” में से एक मदनी इन्अ़ाम इस बारे में भी है, चुनान्वे, दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना के मतबूआ **30** सफ़हात पर मुश्तमिल रिसाले “मदनी इन्अ़ामात” के सफ़हा **4** पर मदनी इन्अ़ाम नम्बर **7** है : आज आप ने (घर में और बाहर भी) हर

छोटے بड़े हत्ता कि वालिदा (और अगर हैं तो अपने बच्चों और इन की अम्मी) को भी तू कह कर मुखातब किया या आप कह कर ? नीज़ हर एक से दौराने गुफ्तगू हैं कह कर बात की या जी कह कर ? (आप कहना, जी कहना दुरुस्त जवाब है) ।

صَلُّوٰ عَلَى الْحَبِيبِ! صَلُّوٰ اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَى مُحَمَّدٍ

### ﴿11﴾ حمَّدُمْ حَسْلَامَيْ بَاهِيَوْنَ كَوْ پُوكَارَنَا

خُودا اے رہمَانَ عَزِيزِ جَلِيلَ کا فَرمَانِ اَلِیشانِ اَمَانَ

إِنَّمَا الْمُؤْمِنُونَ لِحُوَّةٍ تَرْجِمَةً كَنْجُولِ إِيمَانٌ : مُسْلِمَانَ  
(۱۰: ۲۶) الحجرات : مُسْلِمَانَ بَارِزٌ هُنَّ

**مीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** दुन्या के किसी भी कोने में रहने वाला मुसलमान चाहे उस से हमारी कोई वाकिफ़िय्यत या रिश्तेदारी न हो लेकिन मुसलमान होने के बाइष वोह हमारा इस्लामी भाई है लिहाज़ा उसे पुकारते और उस का तज़्किरा करते हुवे उस के नाम के साथ “भाई” कहना मुनासिब है जैसा कि अहमद रज़ा भाई, हसन भाई वगैरा । **آلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزِيزِ** دا’वते इस्लामी के मदनी माहेल में येही तरीक़ए कार राइज है । नावाक़िफ़ मुसलमान को भाई कहना सिफ़्ر नोके ज़बान तक ही मह़दूद नहीं होना चाहिये बल्कि कोशिश कर के अपने दिल में भी उस के लिये भाईचारे के जज़बात उजागर करना और उस के खुशी व ग़म को अपना खुशी व ग़म समझना चाहिये ।

صَلُّوٰ عَلَى الْحَبِيبِ! صَلُّوٰ اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَى مُحَمَّدٍ

## बिला ज़ज़रत दौ तीन नाम मिला कर न रखें

पाक व हिन्द के बा'ज़ अलाको में वालिद के नाम को बेटे का हिस्सा बनाया जाता है जैसे मुहम्मद अ़रिफ़ जुनैद, ऐसे उर्फ़ पर अमल करने में हरज तो नहीं लेकिन गैर ज़रूरी तौर पर दो या तीन नामों पर मुश्तमिल एक नाम न रखा जाए, आ'ला हज़रत دَحْمَنُهُ اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ लिखते हैं : दो दो तीन तीन नामों पर मुश्तमिल नाम रखना जैसे मुहम्मद अली हुसैन इस का भी रवाजे सलफ़ (या'नी बुजुर्गों में रवाज) कभी न था सादे एक लफ़्ज़ के नाम होते थे । وَاللَّهُ تَعَالَى أَعْلَمُ (फ़तावा रज़िविय्या, 24/669)

**صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلُّوا عَلَى مُحَمَّدِ!**

## नाम रखने में मुज़क्कर और मुअ़ब्द नाम न रखें

बा'ज अवकात लड़के का नाम लड़कियों वाला और लड़की का नाम लड़कों वाला रख दिया जाता है, नाम ऐसा हो जिसे सुनते ही मालूम हो जाए कि येह लड़की का नाम है या लड़के का ! मषलन लड़की के लिये ख़दीजा और लड़के के लिये क़ासिम नाम रखा जाए ।

**صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلُّوا عَلَى مُحَمَّدِ!**

## गैर मुस्लिमों के लिये मर्ज़ूस नाम न रखिये

आ'ला हज़रत دَحْمَنُهُ اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ लिखते हैं : मुसलमान को मुमानअत है कि काफ़िरों के नाम रखे كَمَا صَرَحُوا بِهِ فِي التَّسْمِيَّةِ بِيُوحَنَّا वगैरा (जैसा कि यूहना नाम रखने के मुतअल्लिक फुक़हा ने तसरीह फ़रमाई है ।) ت (फ़तावा रज़िविय्या, 23/260)

एक और जगह नक्ल करते हैं : नामों की एक किस्म कुफ़्फ़ार से मुख्तस्स है जैसे जिर्जिस, पुत्रुस और यूहन्ना वगैरा लिहाज़ा इस नौअ़ (या'नी किस्म) के नाम मुसलमानों के लिये रखने जाइज़ नहीं क्यूंकि इस में कुफ़्फ़ार से मुशाबहत पाई जाती है । (ت) وَاللَّهُ تَعَالَى عِلْمٌ (فَتَاوَا رَجُلَيْنِ, 24/663)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلُّ اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

### बुरे नाम का अषर

رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर ने एक शख्स से उस का नाम दरयापूत फ़रमाया तो कहने लगा : मेरा नाम जमरह (चिंगारी) है, फ़रमाया : किस का बेटा ? कहा : इब्ने शिहाब (आतश पारा) का, फ़रमाया : किन लोगों में से है ? कहा : हुरक़ह (सोज़िश) में से, फ़रमाया : तेरा वत्न कहां है ? कहा : हर्रतुनार (आग की तपिश) में, फ़रमाया : उस के किस मक़ाम पर ? कहा : ज़ातिलज़ा (शो'लावार) में । फ़रमाया : अपने घर वालों की ख़बर ले सब जल गए, तो वैसा ही हुवा जैसा हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक़ رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने फ़रमाया था (या'नी उस ने सारा कुम्बा जला हुवा पाया) ।

( مؤطرا امام مالک، کتاب الاستئذان، باب ملیکہ من الاسماء، ۴۵۴ / ۲، حدیث: ۱۸۷۱)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلُّ اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

### अच्छे नाम वाले से काम लिया

سَيِّدُ الْأَنْبَيْهِ وَالْأَمَّهِ نَهْ نَهْ एक दिन एक ऊंटनी मंगवाई और फ़रमाया : इसे कौन दोहेगा

(या'नी दूध निकालेगा) ? एक शख्स ने अर्ज़ की : मैं । दरयापत्त फ़रमाया : तुम्हारा नाम क्या है ? उस ने कहा : मुर्तुन (या'नी कड़वा) । फ़रमाया : तुम बैठ जाओ । एक और शख्स खड़ा हुवा । नाम पूछा तो उस ने अपना नाम जमरतुन (या'नी अंगारा) बताया । उसे भी बैठने का इरशाद फ़रमाया । अब हज़रते सच्चिदुना यईश गिफ़ारी رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَبَرَّهُ وَسَلَّمَ खड़े हुवे और दरयापत्त करने पर अपना नाम यईश (या'नी ज़िन्दगी गुज़ारने वाला) बताया तो इरशाद हुवा : तुम ऊंटनी को दोहो (या'नी इस का दूध निकालो) ।

(المعجم الكبير، ۲۲، ۲۷۷ / ۲۷۷، حدیث: ۷۱۰)

**کَأَجْزِيَ سُلَيْمَانَ بِنَ خَلَفَ الْمَبَارِي**  
 ف़रमाते हैं : नबिय्ये पाक نے صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَبَرَّهُ وَسَلَّمَ दो अफ़राद को ऊंटनी का दूध दोहने से रोक दिया और यईश नाम के शख्स को इस की इजाज़त अ़ता फ़रमाई तो येह बद शुगूनी के बाब से नहीं है येह तो सिर्फ़ नाम को अच्छा या बुरा जानने के माना में है । अच्छा नाम पसन्द करना ऐसे ही है जैसे बद सूरत औरत पर ख़ूब सूरत को पसन्द करना, मैले कपड़ों के मुकाबले में साफ़ सुथरे कपड़ों को इख़ित्यार करना और जुमुआ और ईदों में अच्छी है अत और उम्दा खुशबू पसन्द करना तो मालूम हुवा कि इस्लाम ख़ूब सूरती के ख़िलाफ़ नहीं है बल्कि येह तो ज़ीनत इख़ित्यार करने को जाइज़ क़रार देता है और नामों वगैरा में उम्दगी को पसन्द करता है ।

(المنقى شرح مؤطرا امام مالك، ۹/۴۰۷، ملخصا)

**صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ**

## नाम तब्दील फरमा दिया करते

کبھی اہمادیہ سے شاہیت ہے کہ ہنوز پاک، ساہیبے لولائک  
 نے بहت سے نام تبدیل فرمایا دیے، چنانچہ،  
 ہجڑتے ساییدونا علیہ السلام بیان کرتے ہیں :  
 نبی یحییٰ کریمؐ کے پاس جب کوئی اسے شاخہ  
 آتا جس کا نام آپ کو ناپسند ہوتا، آپ  
 اس کا نام تبدیل فرمایا دتے ہیں । (جیع الجواب، ۴۲۱۰، حدیث: ۱۶۱۰۱)

(ابو داؤد، كتاب الادب، باب في تغيير الاسم القبيح، ٣٧٦/٤، تحت الحديث: ٤٩٥٦)

मुफ़स्सरे शहीर हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद यार  
 ख़ान عليهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ इस हृदीषे पाक के तहूत लिखते हैं : क्यूंकि आस  
 मुख़फ़फ़क़ (short cut) है आसी का, जिस के मा'ना हैं गुनहगार,  
 इताअृते इलाही से अलाहिदा, येह मोमिन की शान नहीं, मोमिन  
 इताअृत शिआ़र होता है। अतलह बना है अतलुन से ब मा'ना सख्ती,  
 शिद्दत, रब तआला عَزَّوَجَلَ (فَرَمَاتَا هैं : ) (القلم ۱۳، ۲۹ پ)

(तर्जमए کانجل ایمان : دارشت خو اس سب پر تورا یہ کی اس

کی اصل میں خُتا), اب اک ماجھ بُوت اُجڑا کو اُتالہ کہتے ہیں جس سے دیوار وغیرہ خودی جاوے (یا' نی کوڈال) مुسالمان سخن نہیں ہوتا, نیچہ اُجڑیچہ اسماں ایلہاہیا میں سے ہیں, ایجھت سے بننا ہے, مسالمان میں فِرَوْتَنی ایجھو نیوچہ چاہیے । شہزاد اکبہ ہے ایلیس کا, بننا ہے شہزاد سے ب ما' نا جلننا, ہلاک ہونا یا شہزاد سے ب ما' نا بلائی سے دُری । ایک سیفتے مسٹبہ ہوکومت یا ہوکوم کا ب ما' نا داہمی ہوکومت والہ, یہ رک تاہلہ عَوْجَلَ کی سیفت ہے । گوراب بننا ہے گوربُن سے ب ما' نا دُری, یہ نام ہے کوئے کا کی ووہ بہت دُر نیکل جاتا ہے । ہو باہ شہزاد کا نام بھی ہے اور اک کیس کے سانپ کو بھی کہتے ہیں لیہاڑا یہ نام بھی مانہوس ہے اور شہاب آگ کے شو'لے کو بھی کہتے ہیں اور ٹوٹے ہوئے تارے کو بھی جس سے شایا تین کو بھی مارا جاتا ہے مگر یہاں "میرکات" نے فرمایا کی اگر شہاب کو دین کی ترک موجاٹ کر دیا جائے اور نام ہو شہاب بُدھن تو کراہت کٹاں نہیں بیلہ کراہت جاہج ہے । (میرکات, 8/530), کی اب یہ فاسید ما' نا نیکل گئے (اور ما' نا ہو گئے) چمکدار, لیہاڑا کراہت ن رہی । (میرआٹول منانیہ, 6/421)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلُّوا عَلَى مُحَمَّدٍ  
بُرَرَ نَامَ كَوَ بَدْلَ دَتَّ

تمُل مُؤمنین هجڑتے سیمی دُننا آیشہ سیدھیکا  
سے ریوایت ہے کی رہمت اعلیٰ میمیان ﷺ سے  
بُرَرَ نامَ کَوَ بَدْلَ دَتَّ

(ترمذی، کتاب الادب، باب ماجاء فی تغییر الاسماء، ۳۸۲/۴، حدیث: ۲۸۴۸)

مُفْسِمِرِ شَهْيَرٍ هُكْمِي مُولَّا عَمَّا تَرَتَّلَ مُفْسِمِي أَهْمَدَ  
 يَارَ خَانَ إِنْسَانٌ حَمَّةُ الْحَمَّانٌ إِنْسَانٌ هُكْمِي رَحْمَةُ الْحَمَّانٌ  
 هُكْمُورِ أَنْوَرٍ إِنْسَانٌ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِنْسَانٌ  
 شَاهِرٌ بَسْتِيَّوْنَ كَبُورِ نَامَ بَدَلَ كَرَّ أَصْلَحَ نَامَ رَخْ دَتَّيَّ ثَيَّ  
 شَاهِرٌ بَسْتِيَّوْنَ كَبُورِ بُورِ نَامَ بَدَلَ كَرَّ أَصْلَحَ نَامَ رَخْ دَتَّيَّ ثَيَّ  
 چُونَا نَنْ، إِنْ سَخْبَسَ كَنَامَ ثَيَّ "أَسْكَدَ (يَا'نِي كَالَا)" هُكْمُورِ  
 أَنْوَرٍ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ نَهَى عَسَكَرَ كَنَامَ أَبْيَجَ (يَا'نِي سَفَرَ)  
 رَخْ، مَادِيَنَ إِنْ سَعْبَرَا كَنَامَ يَسَرَّبَ (وَرَانَا، خَارِجَا) ثَيَّ  
 هُكْمُورِ أَنْوَرٍ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ نَهَى عَسَكَرَ كَنَامَ مَادِيَنَا (جَمْعُ  
 هُونَيَّ كَيِّ جَاهَ)، تَعْيِبَهَ (بَهْتَرَ مِدْبَرَيَّ وَالشَّاهِرَ، آفَاتَ سَعَ  
 مَهْفُوزَ شَاهِرَ) أَبْطَهَ (كُوشَادَ جَاهَ جَاهَ سَعَ سَلَابَ كَيِّ پَانَيَّ  
 غُجَّرَتَاهَ هُونَ)، بَتَهَا (كُوشَادَ جَمِيَّنَ) وَغَيْرَهُ رَخَهَ | كُوفَّا رَهَ كَيِّ لَيَّ  
 بَرَ أَكْسَ أَمْلَا ثَيَّ چُونَا نَنْ "أَبُولَ هَكَمَ" (دَانَارَى وَالشَّاهِرَ)  
 نَامَ ثَيَّ هُكْمُورِ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ نَهَى "أَبُو جَهْلَ" (جَهَلَتَ  
 وَالشَّاهِرَ) رَخَهَ | (مِيرَآتُولَ مَنَاجِيَهُ، 6/420)

صَلُّوا عَلَى الْحَمِيْبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

وَهُوَ بَارِجُ نَامَ جَوَ سَرَكَارَ مَدِيَنَا نَهَى تَبَدِيلَ فَرَمَا دِيَوَ  
 ﴿١﴾ إِنْ سَهَبَيَّ بَرَغَاهَ رِسَالَتَ مَهْمَلَتَ مَهْمَلَتَ هَاجِرَ هُوَيَّ  
 جَهْمَ كَنَامَ نِيشَانَ ثَيَّ، رَسُولَ شَكَلَنَ، سُولَتَانَ كَوَنَنَ  
 نَهَى عَنَ سَهَنَ پُوَّا | عَنْهُنَّ نَهَى أَرْجَ كَيِّ : مُونِجَرَ (ڈَرَانَهَ وَالشَّاهِرَ) |  
 فَرَمَاهَ : تُومَ أَشَاجَ (جَهْمَيَّ پَشَانَهَ وَالشَّاهِرَ) هُونَ |

(اسدالغالبة، ۸۹/۲، رقم: ۱۲۹۷)

﴿٢﴾ هُجَرَتَ سَيِّدَنَا بَشَّارَ بَنَ خَسَاسِيَّهَ كَنَامَ "جَهْمَ" (رُوكَافَتَ دَلَانَهَ وَالشَّاهِرَ) ثَيَّ  
 دَنَنَهَ وَالشَّاهِرَ (خُوشَ خَبَرَيَّ دَنَنَهَ وَالشَّاهِرَ) نَامَ رَخَهَ | (اسدالغالبة، ۲۸۹/۱، رقم: ۴۰۵)

﴿3﴾ **ہجرتے ساییدونا سیرا ج** کا نام فُطھ (کامیابی)

ثا، بدل کر **سیرا ج** (چراغ) ر�ا । (الاستیعاب، ۲۴۲/۲، رقم: ۱۱۳۶)

﴿4﴾ **اک سہابی** کا نام پہلے “**اسود** (کالے رنگ والा)”

ثا، بدل کر **ابی ج** (گورے رنگ والा ر�ا ।

(جمع الجوامع، مسنڈ سہل بن سعد، ۴۳۹/۱۴، حدیث: ۱۱۳۴۳)

﴿5﴾ **ہجرتے ساییدونا** ابھول یمان بیش را بشیر بین اُکربہ

جُوننی **رضی اللہ تعالیٰ عنہما** اپنے والیل د کے ساٹھ نبی یے کریم

کی خیدمت مے ہاجیر ہوئے، نام پوچھ تو اُرج کی :

**بھیر** (یلم، مال مے جیسا دتی والा) । **فرمایا** : نہیں بلکہ

تُمہارا نام **بھیر** (خوش خبری دنے والा) ہے । (الاصابة، ۴۳۴/۱، رقم: ۱۷۱)

﴿6﴾ **ہجرتے ساییدونا** ابू یسماں بشیر ہاریشی کا’بی

کا نام **اکبر** (سب سے بड़ا) ہا । آپ نے **صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم**

یرشاد فرمایا : تُم **بھیر** (خوش خبری دنے والा) ہو ।

(اسد الغابة، ۲۸۸/۱، رقم: ۴۵۴)

﴿7﴾ **ہجرتے ساییدونا** بکر بین جبلہ لہ **رضی اللہ تعالیٰ عنہ**

پہلے اُبده اُمّر (اُمّر کا بند) ہا، رسوی اکرم، نور مُجسس م

نے **صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم** آپ کا نام **بکر** ر�ا ।

(جمع الجوامع، مسنڈ بکر بن جبلہ الكلبی، ۱۰۵/۱۴)

﴿8﴾ **ہجرتے ساییدونا** بکر بین **ہنفی** کا

پہلا نام **باربار** (فوجوں باتें کرنے والा) ہا، نبی یے

کریم نے **صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم** آپ کا نام باربار سے بدل کر

**بکر** ر�ا ।

(جمع الجوامع، مسنڈ بکر بن جبلہ الكلبی، ۱۰۵/۱۴)

﴿9﴾ **ہٰجَرَتِ سَيِّدُ الدُّنْيَا** **ہَبَّیْبِ بْنِ هَبَّیْبِ بْنِ مَرْوَانَ**

بَتَّاًرِ وَفَضْدِ نَبِيِّهِ كَرِيمَ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ كَيْدِمَتِ مِنْ  
ہاجیر ہुئے، آپ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ نے ان کا نام داریا فٹ  
فرما�ا، انہوں نے بتایا : **بَغَّیْجٌ** (کا بیلے نظر) । ہوجڑ  
نے فرمایا : **تُوْمُ ہَبَّیْبٌ** (کا بیلے محبوب،  
دوست) ہے । اس کے با'د ان کو **ہَبَّیْبٌ** کہا جاتا ہے ।

(اسدالغابۃ، ۳۰۰/۱، رقم: ۴۸۱)

﴿10﴾ **ہٰجَرَتِ سَيِّدُ الدُّنْيَا** **جُوْءَبٌ**/شَا'شَا'شِمِ تَمَمِ مِنْ أَمْبَرِي  
نَبِيِّهِ كَرِيمَ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ كَيْدِمَتِ مِنْ  
ہاجیر ہوئے تو آپ نے ان کا نام پوچھا : انہوں نے ارجمند کی :  
الْأَلْكُلَاهُ (تُرْشَ رُل) । نبییے اکرم، نورِ مujassim  
نے فرمایا : تُمْهَارا نام ”**جُوْءَبٌ**“ (باالوں  
والا) ہے । ان کے لمبے لمبے گاؤں (ثہ) ہے । (اسدالغابۃ، ۲۱۸/۲، رقم: ۱۵۶۶)

﴿11﴾ **ہٰجَرَتِ سَيِّدُ الدُّنْيَا** **أَبُو أَشَدِ الرَّاشِدِ بْنِ ہَفْسٍ**  
کا نام **جَالِمٌ** (جُولم کرنے والا) ہے، نبییے کریم  
نے **رَاشِدٌ** (ہدایت یافتہ) نام رکھا ।

(اسدالغابۃ، ۲۲۱، ۲۲۰، رقم: ۱۵۶۹)

﴿12﴾ **ہٰجَرَتِ سَيِّدُ الدُّنْيَا** **شِهَابُ بْنِ أَمْرٍ**  
کا نام **کِرْجَابٌ** (خانے میں ہریس) ہے، موسیٰ نے انسانیت  
نے آپ کا نام **رَاشِدٌ** (ہدایت یافتہ)  
رکھا । (اسدالغابۃ، ۲۲۱/۲، رقم: ۱۵۷۰)

﴿13﴾ **ہجڑتے سدیدوں** ابू مُکنیف جِدُل خُرے  
کا نام “جِدُل خَلیل” (بَدَارِی، خُود پسندی مें بढ़ने वाला )  
से بदल कर “جِدُل خُر” (بَلَارِی और नेकी में बढ़ने  
वाला) रखा । (الاستيعاب، ۱۲۷/۲، رقم: ۸۶۶)

﴿14﴾ **ہجڑتے سدیدوں** سا’द بین کُسْمَانِ اَنْجَزِی  
سراکारे अबद क़रार, شافेए रोजे शुमार  
खिदमत में हाज़िर हुवे, आप ﷺ ने فَرَمَّا :  
तुम्हारा नाम क्या है ? अُर्जُ की : सا’दुल ख़ील (घोड़ों में  
बरकत वाला) فَرَمَّا : बल्कि तुम सا’दुल खُر (नेकी में  
बरकत वाला) हो । (الاصابة، ۶۰/۳، رقم: ۳۱۹۹)

﴿15﴾ अबू دावूद शरीफ में है एक साहिब का नाम हُر्ब (जंग) था,  
سراکारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार  
उन का नाम سल्म (अम्न) रखा ।

(ابو داؤد، كتاب الادب، باب في تغيير الاسم القبيح، ٤/٣٧٦، حديث: ٤٩٥٦)

﴿16﴾ **گِجَرए** खन्दक के मौक़ اُ पर नबिये करीम  
ﷺ ने खन्दक की खुदाई लोगों में बांट दी, आप  
भी उन के साथ مسروफे कार रहे, उन सहाबए  
کिराम میں **جُعَل** (बद शक्ल और सियाह आदमी)  
नामी एक سाहिब भी थे, जनाबे रहमते अ़ालमिय्यान  
ﷺ ने उन का नाम “अُम्र” रखा ।

(اسد الغابة، ۴۲۵/۱، رقم: ۷۶۶)

﴿17﴾ **ہجڑتے سیبیدونا شرید** بین سُوَّید شکافیٰ کا نام رَبِّنَا اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ مالیک (میلکیت وارا) ثا، شاہے بنی آدم، نبیی موسیٰ مولیٰ شام صَلَّی اللَّهُ تَعَالَى عَلَیْہِ وَآلِہٖ وَسَلَّمَ نے بدل کر شرید (ڈائڈ کر آنے والا) رخوا، یہ بے امیت ریجوان کے شرکا میں سے ہے۔ (اسد الغابة، رقم: ۵۹۹/۲)

﴿18﴾ **ہجڑتے سیبیدونا** ابू ابُدُلَلَاه کشیر بین سلط بین ما' دی کریب کیندی هُبُّ جُرُور تاجدارے مدارینا رَبِّنَا اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ کے ابھدے مبارک میں پیدا ہوئے، آپ کا نام کَلَیل ثا، نبیی مُعْجَزَہ، رسوی مولیٰ شام صَلَّی اللَّهُ تَعَالَى عَلَیْہِ وَآلِہٖ وَسَلَّمَ نے آپ کا نام کشیر رخوا۔

(اسد الغابة، رقم: ۴۸۰/۴)

﴿19﴾ **ہجڑتے سیبیدونا** ڈمیر کی بہن ڈمے اسیم کا نام آسیما (ناپرمان اُورت، گنجان دارخٹ) ثا، نبیی کریم صَلَّی اللَّهُ تَعَالَى عَلَیْہِ وَآلِہٖ وَسَلَّمَ نے ان کا نام جمیلہ (فوج لے خودا سے نہ کیا کرنے والی، خوب سُورت) رخوا ثا۔ (اسد الغابة، رقم: ۴۸۵/۴)

﴿20﴾ **ہجڑتے سیبیدونا** کشیر کا نام کَلَیل (کوتاہ دلبے جیسم کا آدمی) ثا، مُسْتَفَیٰ جانے رہمات، شام پر بجھے ہدایت صَلَّی اللَّهُ تَعَالَى عَلَیْہِ وَآلِہٖ وَسَلَّمَ نے ان کا نام کشیر (واپیر، جیادا) رخوا۔ (اسد الغابة، رقم: ۴۸۳/۴)

﴿21﴾ **ہجڑتے سیبیدونا** مُسْلِم بین ابُدُلَلَاه سے نبیی کریم صَلَّی اللَّهُ تَعَالَى عَلَیْہِ وَآلِہٖ وَسَلَّمَ نے نام دریافت فرمایا تو ارج کی: **شیہاب** (آگ کا شو'لا) بین خُرُفَیٰ۔ آپ صَلَّی اللَّهُ تَعَالَى عَلَیْہِ وَآلِہٖ وَسَلَّمَ نے (ان کا اور ان کے والید کا نام

تبدیل کر دی�ا اور) ارشاد فرمایا : تुम مُسْلِم (سلامتی والے) بین ابُدُلَّاہ ہو ।

(اسدالغابہ، ۰/۲، رقم: ۲۴۰۳)

**﴿22﴾** هُجْرَتَ سَيِّدُنَا مُتَّبِعًا بَنِ اسَادِ بَنِ هَارِيْشَا رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ کا نام آس (نافرمان) ثا، شہنشاہے خوش خیسال، پہکرے ہونے جمال (فරمان باردار) رکھا ।

(مسند امام احمد، حدیث مطیع بن اسود، ۵۳/۵، حدیث: ۱۵۴۸)

**﴿23﴾** هُجْرَتَ سَيِّدُنَا إِبْرَاهِيمَ رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُما سے ریوایت ہے کہ نبی یحییٰ کریم صَلَّی اللَّهُ تَعَالَى عَلَیْہِ وَآلِہٖ وَسَلَّمَ کے پاس اک ساہیب آئے، آپ نے فرمایا : تुمھارا نام کیا ہے ؟ وہ بولے : نکیرہ (اجنबی) । آپ نے صَلَّی اللَّهُ تَعَالَى عَلَیْہِ وَآلِہٖ وَسَلَّمَ نے فرمایا : بالک تum ما'رُف (مشہور) ہو ।

(الاصابة، ۶/۱۴، رقم: ۱۴۰۲)

**﴿24﴾** هُجْرَتَ سَيِّدُنَا مُهَاجِرَ بَنِ ابْرَاهِيمَ رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ سہابی ہیں، عالم مسلم مسلمان ہجرات سیدتھا علیہما سلام کے ساتھ باری ہے، آپ کا نام ولید (ابھی ابھی پیدا شودا، نوکر) ثا । سرکارے اڑالی وکار، مدنیت کے تاجدار صَلَّی اللَّهُ تَعَالَى عَلَیْہِ وَآلِہٖ وَسَلَّمَ نے یہ نام ناپسند فرمایا اور ان کا نام مُهَاجِر (ہجرت کرنے والہ) رکھا ।

(اسدالغابہ، ۰/۲۹، رقم: ۱۲۷)

**﴿25﴾** هُجْرَتَ سَيِّدُنَا ابُدُلَّا بَنِ بَدْ بَنِ جُرْد سہابی ہیں، نبی یحییٰ اکرم صَلَّی اللَّهُ تَعَالَى عَلَیْہِ وَآلِہٖ وَسَلَّمَ کی خیدمات میں اپنی کوئی کے کاسید بن کر آئے، آپ نے صَلَّی اللَّهُ تَعَالَى عَلَیْہِ وَآلِہٖ وَسَلَّمَ فرمایا : تुمھارا نام کیا ہے ؟ ارج کی :

अब्दुल उज्ज़ा (उज्ज़ा “कुफ़्फार के बुत का नाम” का बन्दा)।  
सरकारे दो आ़लम, नूरे मुजस्सम ﷺ ने आप का  
नाम बदल कर “अब्दुल अज़ीज़” (ग़ालिब व ताक़तवर का  
बन्दा) रख दिया। (الاستيعاب، ١٢٧/٣، رقم: ١٧١٩)

﴿٢٦﴾ हज़रते सच्चिदुना अबुल मुत्तर्रिफ् सुलैमान बिन सरद  
رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ का नाम क़ब्ल अज़ इस्लाम यसार (खुशहाली,  
फ़राखी) था, रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ने  
आप का नाम सुलैमान रखा । (الاستيعاب، ٢١٠/٢، رقم: ١٠٦١)

﴿٢٧﴾ हज़रते सच्चिदतुना हस्साना मुज़्निय्या رَبُّنَا اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا का नाम जष्टामा (सुस्त व काहिल) था, आप उम्मुल मोअमिनीन हज़रते सच्चिदतुना ख़दीजतुल कुब्रा رَبُّنَا اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا की सहेली थीं, साहिबे मे'राज صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ने हस्साना (बहुत हसीनो जमील) नाम अता फरमाया । (اسد الغابة، ٧/٧٣، رقم: ٦٨٤٢)

﴿٢٨﴾ हज़रते सच्चिदतुना उनकूदा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا का नाम इनबा (अंगूर) था, मालिके कौषरो जन्नत, महबूबे रख्बुल इज़्जत ने उन का नाम ‘उनकूदा’ (खोशाए अंगूर) रखा । (اسد الغایہ، ۷/۲۲۶، رقم: ۷۱۴)

﴿٢٩﴾ हज़रते सच्चिदतुना मुतीआ बिन्ते नो'मान बिन मालिक  
 رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا का नाम आसिया (नाफ्रमान) था, रसूले अकरम,  
 نورे मुजस्सम رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا ने आप का नाम  
 مُسْلَمٌ رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ “मतीअ” (फरमां बरदार) रखा। (الطبقات الكبرى لابن سعد، ج ٤، ص ٤٣٨٦، رقم ٢٦٤)

صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ صَلَوَاتُ اللَّهِ عَلَى الْحَبِيبِ!

## اب تک سخٹی پار्द جاتی ہے

نام شاخیسیت پر اپنے اندھاڑے ہوتا ہے । ہجڑتے سخیدنا سईد بن موسیٰ علیہ السلام سے ریوایت ہے کہ میرے دادا رسلوں اکرم علیہ السلام کی خدمت میں ہاجیر ہوئے । سرکارے آپلی وکارے علیہ السلام نے پوچھا : تु مہارا کیا نام ہے ؟ انہوں نے کہا : ہجّن । فرمایا : “تु م سہل ہو ।” انہوں نے جواب دیا : جو نام میرے باپ نے رکھا ہے، اسے نہیں بدل لے گا । ہجڑتے سخیدنا سईد بن موسیٰ علیہ السلام کہتے ہیں : اس کا نتیجا یہ ہوا کہ ہم میں اب تک سخٹی پارڈ جاتی ہے ।

(بخاری، کتاب الادب، باب تحويل الاسم۔ الخ۔ ۱۵۳/۴، حدیث: ۶۱۹۳)

مُفْسِسِ الرَّحْمَةِ هُبَّا مُولَى الْمُمْتَنَى  
يَا رَبَّ الْخَلْقِ هُبَّا مُؤْمِنٌ عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَكَمَانِ

مُفْسِسِ الرَّحْمَةِ هُبَّا مُولَى الْمُمْتَنَى  
يَا رَبَّ الْخَلْقِ هُبَّا مُؤْمِنٌ عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَكَمَانِ

﴿هُبَّا﴾ ”ہجّن“ کے ”ع“ کے پشتہ سے سخٹ جنمیں اور سخٹ دل  
انسان । ”ہجّن“ کے ”ع“ کے پشتہ سے رنجو گم । ”سہل“ کے ”س“  
کے پشتہ، ”س“ کے سوکون سے، نرم جنمیں اور نرم دل انسان ।  
آسانی و نرمی کو بھی ”سہل“ کہتے ہیں، چونکہ ”ہجّن“ کے  
ما’نا اچھے نہیں اس لیے آپ (صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم) نے  
تबدیلی لیے نام کا مشکرا دیا । ﴿خُلَّا مُؤْمِنٌ عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَكَمَانِ﴾  
کا مشکرا ثا امّر (یا’نی ہوکم) نا ثا ।  
اس لیے ”ہجّن“ نے کوچہ ارشاد ن فرمایا ।

ہुجُورٰ کا مशوارا کبُول کرنا مُسْتَحْبٰ ہے وَاجِبٌ  
نہیں، لیہا جا اس اُرجٰ پر اے' تیرا جُ نہیں । ﴿ رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ﴾  
کے بے تے مُسْتَحْبٰ ہے ( رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ) کے  
بے تے سَرْدَد بین مُسْتَحْبٰ ہے ( رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ )  
کہتے ہے کہ دادا کا اپھر ہم پوتے تک باکی رہا । اس سے ما' لُوم  
ہووا کی بُرے ناموں کا بُرا اپھر ہوتا ہے اور کبھی اک شاخ کی  
گلتوں سے پُرے خاندان پر بُرا اپھر ہوتا ہے ।

(میر آتول مناجیہ، 6/424, 425)

مُفْتی مُحَمَّد شَرَفُوْلِ ہُكْمَتِي  
مُونَدِرِیْجَ اَبَالا هَدَیَشَ کِی شَرَهْ مِنْ لِیخَتِه ہے : “ہُجُورٰ اکْدَس  
کا یہ نام بَدَلَنَا اسْتِحْبَابَن ( یا' نَیِّنَ  
بَتْرَیِّرِ مُسْتَحْبٰ ) ہا اور تَفَاعُل ( نِکَال ) کے تُار پر ہا ।  
کسی کا نام رکھنے مِنْ لُجُبَیِّ مَا' نَا کے ساتھ مُنَاسَبَت کا لِیہا ج  
نہیں ہوتا اور اس ٹاکِیْہ مِنْ ہُجُورٰ اکْدَس  
کی بات ن ماننے کا اپھر پڈا । ” ( نُجَہُتُل کَارِی، 5/593 )

**صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلُّوا عَلَى مُحَمَّدٍ**  
**جِنْ نَامَوْنَ سِے اپنی تا' ریفِ نِکَلَتی ہو وہ ن ۲۷ کے جا اے**

ऐسے نام جِن مِنْ تَجْکِیَہ اَنْفَس اور خُود سَتَارِی ( یا' نَیِّنَ  
اپنی تا' ریف ) نِکَلَتی ہے، یعنی کوئی بھی ہُجُورٰ اکْدَس  
نے بَدَلَ دَالَا، بَرَّا ( نِکَال، سَالَہا ) کا نام  
جِنَب ( اک ہَسَین خُوش بُودار پُوڈا ) رکھا اور فرمایا کہ “ اپنے  
نَفْس کا تَجْکِیَہ ن کرو । ”

( مسلم، کتاب الاداب، باب استحباب تغییر الاسم القبيح، ص ۱۱۸۲، حدیث ۲۱۴۲ ملخصاً )

شامسُدِّیْن (दीन का सूरज), جِئُونُدِّیْن (दीन की ज़ीनत), مُهَمَّدُونُدِّیْن (दीन को ज़िन्दा करने वाला) فُخْرُونُدِّیْن (दीन का فُخ्ब्र), نسَّیْرُونُدِّیْن (दीन का मददगार), سِرَاجُونُدِّیْن (दीन का चराग), نِجَّا مُعْدِّیْن (दीन का निजाम), کُلْبُونُدِّیْن (दीन का महवर व मर्कज) वगैरहा अस्मा जिन के अन्दर खुद सताई और बड़ी ज़बरदस्त ता'रीफ़ पाई जाती है नहीं रखने चाहिये। رہا یہ کہ بُوْجُونَانِ دین وَ ایْمَمَ اَسَابِکِینَ کو اِن نَامَوں سے یاد کیا جاتا ہے ! تو یہ جاننا چاہیے کہ ان هِجَرَات کے نام یہ ن थे بلکہ یہ ان کے الْكَابِبَ هُنْ اُن کی جب وہ هِجَرَات مراتبے اِلِلِیْا (بُولن्द مرتبے) اور مناسِبے جلیلہ پر فَاهِجُ هُوَ تِو مُسَلِّمَانُوْنَ نے ان کो اِس تَرَھِ کہا और यहां एक जाहिल और अनपढ़ जो अभी पैदा हुवा और उस ने दीन की अभी कोई खिदमत नहीं की इतने بड़े बड़े اَلْفَاظِ فُخْبَرِیْمَا (वज़नी अल्फ़ाज़) से یاد کिया जाने लगा ! اِمام مُهَمَّدُونُدِّیْن نववी بَوْجُودِ اِس جَلَالِ شَانِ کے اِن کो اگر مُهَمَّدُونُدِّیْن (दीन को ज़िन्दा करने वाला) कहा जाता तो اِن्कार فَرِمाते और कहते कि जो मुझे मُهَمَّدُونُدِّیْن नाम से बुलाए उस को मेरी تَرَف़ سे इजाज़त नहीं ।

(بہارے شریعت، 3/604)

صَلُّوا عَلَى الْحَمِيْدِ ! صَلُّوا عَلَى الْحَمِيْدِ !  
اَمْمَيْرِ اَمْهَلِيْتِ سُونْتِ کَوْ خُودِيْرِ اَمْهَلِيْتِ سُونْتِ کَوْ نَا

بَانِيَةِ دَا'वَتِ اِسْلَامِیَّةِ هِجَرَتِ اَمْلَامَا مौلَانَا اَبُو بَیْلَالِ مُحَمَّدِ اِلْيَاسِ اَمْتَرَ کَادِرِیَّ کَوْ لَوْگِ کَوْ دَامَتْ بِرَکَاتُهُمُ الْعَالِيَّہِ

“امیرے اہلے سُنّت” کہتے ہیں لےکن آپ دامت برکاتہم العالیہ باتیں اور آجیزی خود کو “فَکُرِّیْرے اہلے سُنّت” کہتے ہیں اور اس کی وجہاً یون فرماتے ہیں کہ “میں اہلے سُنّت میں نے کیوں کے مُعَامَلے میں سب سے جِیْيادا مُعْظِلَس ہوں۔” ہالانکہ حکیم کتابت یہ ہے کہ آپ دامت برکاتہم العالیہ کی حکمت و تربیت نے لاکھوں بادکاروں کو نے کوکار بنا دیا ।

صَلَوٰةٌ عَلَى الْحَبِّیْبِ ! صَلَوٰةٌ عَلَى مُحَمَّدٍ

### بُرْرٌ نَّاَمَ تَبَدِّلَ كَوْرَ کے جُوْوَرِیَا رَخْوا

ہجرتے سیyyidatu na جووئیریا کا نام پہلے بُرْر (نے کی کرنے والی) تھا سرکارے نامدار، مدنیت کے تاجدار صَلَوٰةٌ عَلَى عَلِیٰ وَآلِہٖ وَسَلَّمَ نے ان کا نام بدل کر جووئیریا رکھ دیا، آپ ناپسند کرتے ہے کہ یون کہا جائے : خَرَجَ مِنْ عِنْدِ بُرْرَةٍ يَا'نِی فُلَانْ بُرْر کے پاس سے چلا گयا ।

(مسلم، کتاب الآداب، باب استحباب تغیر الاسم القبيح الى حسن، ص ۱۱۸۲، حدیث: ۲۱۴۰)

کَأَجِّيْ سُولَمَانَ بِنَ خَلَفَ اَلَّا بَأْجِيْ  
فَرَمَّا تَهْبِيْنَ : کیسی نام کے ممنوناً ہونے کی دو وجہات ہوتی ہیں  
یا تو اس میں تجھکیاں نافس ہوگا یا اس کے لافڑی میں کوئی  
خراپی پائی جاتی ہوگی جیسا کہ خَرَجَ مِنْ عِنْدِ بُرْرَةٍ يَا'نِی فُلَانْ بُرْر کے  
پاس سے چلا گیا میں ہے ।

(المنتقى شرح مؤطرا امام مالک، کتاب الجامع، باب ما يكره من الأسماء، ۹/ ۴۵۵، ملخصا)

صَلَوٰةٌ عَلَى الْحَبِّیْبِ ! صَلَوٰةٌ عَلَى مُحَمَّدٍ

## جِن نَّاْمَوْ مِنْ كَمْ تَجْكِيَا هُوَ وَهُوَ رَخْ سَكْلَتَهُوں

رُھُل مَأْنَی مِنْ هُوْ : جَاهِر يَهُوْ هُوْ كِيْ جِن نَّاْمَوْ مِنْ  
تَجْكِيَا هُوْتَا هُوْ وَهُوْ مَكْرُه إِسْ سُورَت مِنْ هُونَگَهُوْ جَاب كِيْ إِن مِنْ  
مُعَمَانَأَتْ آرَى إِسْ سِهْ پَهَلَهُ بَهِيْ تَجْكِيَا پَار إِسْ كَيْ دَلَالَتْ  
وَاجِهَهُ هُوْ أَوْر وَهُوْ تَجْكِيَا كَيْ مَا'نَاهُ مِنْ إِسْتِمَال هُوْتَا هُوْ  
لِهَاجَهُا جِن نَّاْمَوْ مِنْ تَا'رِيْفَ بَهُوت جِنِيَا مَهَسُوسَ نَهُوْ جَيْسَا  
كِيْ سَرْدَ (بَرَكَتْ وَالاَوْلَى، سَآَدَتْ مَنْدَ، يَهُوْ إَكْ سَهَابَيْ كَيْ نَامَ  
بَهِيْ هُوْ) أَوْر هَسَنَ (أَصْحَى، جَوْ نَوَاسَ إَرَسُولَ كَيْ نَامَ هُوْ) تَوْ إَسَے  
نَامَ رَخَنَا مَكْرُه نَهَنَهُ ।

(تفسیر روح المعانی، جزء ۲۷، ص ۹۱)

صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ إِسْ تَرَهُ كَيْ كَرَهَ نَامَ هُوْ جِنِيَا  
نَهُوْ رَخَنَهُا لِهَاجَهُا كِيْ تَجْكِيَا كَيْ پَهَلَهُ پَأْيَاهُ جَاتَا هُوْ، چُونَانَهُ  
نَهُوْ رَخَنَهُا لِهَاجَهُا كِيْ تَجْكِيَا كَيْ پَهَلَهُ پَأْيَاهُ جَاتَا هُوْ، چُونَانَهُ

﴿1﴾ هُوْ جِنِيَا اَكْدَسَ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ نَهُوْ هَجَرَتْ سَهِيَدُونَا  
اَبُو عَمَامَهُ رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ كَيْ بَعْدَهُ دَيِّنَهُ، عَنَّهُ نَامَ عَنَّهُ  
هَجَرَتْ اَسَادَ بَيْنَ جُورَارَاهُ رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ كَيْ نَامَ پَارَهُ اَسَادَ  
رَخَنَهُ، عَنَّهُ کُونَتْ بَهِيْ نَامَ کُونَتْ پَارَهُ اَسَادَ اَوْر عَنَّهُ  
بَرَكَتْ کَيْ دُوَّا دَيِّنَهُ । هَجَرَتْ اَبُو عَمَامَهُ رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ 100 هِيْ مِنْ  
92 سَالَ سِهْ جِنِيَا دُمَرَ پَارَهُ فَتَاهُ هُوْ ।

(الاستعياب، ۱/۱۷۶، رقم: ۳۲۶/۱، رقم: ۳۳، الاصابة، ۱/۱۴، رقم: ۴۱)

﴿2﴾ **ہجڑتے ساییدُ دُنَانِ جَاهِید** رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ کا شومار یمنی سہابا میں ہوتا ہے آپ فارسی ثے، آپ کا نام **یَاجِید** (جَاهِید، سخْل دیل) ثا، ہujrō اکڈس صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ نے آپ کا نام **جَاهِید** (بادت گزار، دُنْیا سے بے رگبُت اور آغییرت کی ترک رگبُت کرنے والा) رکھا ।

(الاصابة، ۱/۶، رقم: ۵۰۲۹)

﴿3﴾ **ہجڑتے ساییدُ دُنَانِ بَنِ يَارْبُوْعَ** رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ کا نام “**سُرْمَ**” (بے برکت) ثا، سرکارِ مدائیا، سُلْطَانِ بَا کَرِینا نے آپ کا نام “**سَرْدَد**” (برکت والا) رکھا ।

(اسد الغابة، ۲/۴۷۰، رقم: ۲۱۰۲)

﴿4﴾ **ہجڑتے ساییدُ دُنَانِ تَفْكِير** رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ کا نام **آجِیْب** (گیر شادی شودا) ثا، نبیِ یَسُوْرَ اکرم صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ نے آپ کا نام “**تَفْكِير**” (تفکر پاک دامن) کی تസانیر رکھا ।

(الاصابة، ۴/۴۲۷، رقم: ۵۶۰۴)

﴿5﴾ **ہجڑتے ساییدُ دُنَانِ آکِیْل** رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ کُدیمی مولیٰ اسلام مُہااجر سہابی ہیں، دارِ ارکم میں سب سے پہلے اسلام کبُول کرنے والے اور مدائیے کے سُلْطَان، رہماتِ اُلّامیان سے شارفے بُل رکنے والے ہیں، آپ کا نام **گَافِل** (گرفتار والا) ثا، جب اسلام کبُول کیا تو ہujrō نے اس کا نام “**آکِیْل**” (اُکلِماند) رکھا ।

(الاصابة، ۳/۴۶۶، رقم: ۴۳۷۹)

﴿٦﴾ مُتْرِيَّاً بِنَ اسْوَدَ كَانَ نَامَ أَسْرَى (نَافِرَمَان) ثَمَّ رَسُولَهُ أَكْرَمَ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَالْمَسَلَّمَ نَهَى إِنَّ كَانَ نَامَ مُتْرِيَّاً (فَرَمَانُ بَرَدَار) رَخْوا | (اسْدُ الْغَابَةِ، ٤٤٢٤، ٤٨٥، رَقْمٌ)

﴿٧﴾ बनू गिफ़ार के एक शख्स नबिये अकरम ﷺ के पास आए, आप ﷺ ने दरयापूर्त फ़रमाया : तुम्हारा नाम क्या है ? उन्होंने अर्ज़ की : मुहान (मा'मूली इन्सान) । रहमते आलमिय्यान, सरवरे ज़ीशान ﷺ ने फ़रमाया : बल्कि तुम मुकर्म (इज़्ज़त वाला) हो ।

(اسد الغابة، ٢٧١/٥، رقم: ٥٠٧٥)

**﴿٨﴾** हज़रते सच्चिदुना हिशाम बिन अमीर बिन उमय्या رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا का नाम दौरे जाहिलिय्यत में शिहाब (आग का शो'ला) था, नबिय्ये अकरम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ने बदल कर “हिशाम” (सखावत) रख दिया। (اصل الغایہ، ۴۱۹/۵، رقم: ۵۳۷۲)

﴿٩﴾ हज़रते सच्चिदतुना मैमूना رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا का नाम बुरा (नेकी) था, सरकारे अबद क़रार, शाफ़ेए रोजे شुमार صَدَّلَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمْ وَاللهُ وَسَلَّمَ ने आप का नाम मैमूना (मुवारक, नेक बख्त) रखा ।

(الاستيعاب، ٤٦٨/٤، رقم: ٣٥٣٣)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ!

## तीन क़िरम के नाम न रखें

शारे हे बुखारी अल्लामा इब्ने हजर फ़तहुल रَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَبَرَّهُ  
बारी में इमाम तबरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَدِيرِ के हवाले से नक़ल करते हैं :

ऐसा नाम नहीं रखना चाहिये (1) जिस के मा'ना बुरे हों या (2) उस में तज़्कियए नफ़्स हो (3) उस में सब्ब (गाली, इहानत, ऐब) का मा'ना हो (अल्लामा इब्ने हजर फ़रमाते हैं : मैं कहता हूँ : तीसरी बात पहली से अख़्स (या'नी ज़ियादा ख़ास) है) अगर्चे नाम लोगों के लिये अलामत (पहचान) होते हैं इन के ज़रीए सिफ़त की हक़ीक़त मक्सूद नहीं होती लेकिन कराहत की वजह येह है कि कोई शख़्स उस का नाम सुनेगा तो गुमान करेगा कि उस शख़्स के अन्दर येह सिफ़त मौजूद है।

येही वजह है कि सरकारे मदीनए मुनब्वरा, सरदारे मक्कए मुकर्रमा صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَالْهُوَ سَلَّمَ किसी शख़्स के नाम को ऐसे नाम से तब्दील फ़रमा देते कि जब उसे उस नाम से बुलाया जाए तो वोह नाम उस पर सादिक आए, सरकारे अबद क़रार, शाफ़ेर रोजे शुमार صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَالْهُوَ سَلَّمَ ने मुतअ़द्दिद नाम तब्दील फ़रमाए और जो भी तब्दील फ़रमाए वोह इस तौर पर तब्दील नहीं फ़रमाए कि इन नामों को रखना मन्अ है बल्कि इस तौर पर कि इन्हें बदल देना बेहतर है, नाम इस लिये नहीं रखा जाता कि मज़कूरा शख़्स में येह वस्फ़ भी मौजूद है बल्कि इसे दूसरों से अलग पहचान देने के लिये नाम रखा जाता है इसी वजह से मुसलमान बुरे शख़्स का नाम “ह़सन (या'नी अच्छा)” और

گونہگار شاخس کا نام ”سالہ (یا’نی نک)“ رکھنے کو جایز کردار دेतے ہیں اور اس پر یہ بات بھی دلآلیت کرتی ہے کہ جب رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے اپنا نام ”سہل“ سے نہیں بدلنا تو نبی یحییٰ کریم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم نے اُن پر ”سہل“ نام رکھنا لاجیم نہیں کیا، اگر یہ نام رکھنا اُن پر لاجیم ہوتا تو آپ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم اُن کی یہ بات کہ ”میں اپنے والید کا رخوا ہوںا نام نہیں بدل لے گا“ هرگیز کبول ن فرماتے ।

(فتح الباری لابن حجر، کتاب الادب، باب تحویل الاسم الی اسم، ۱۱/۴۸۶، تحت الحدیث: ۶۱۹۳)

### صَلُّوا عَلَى الْحَيْبِ! صَلُّوا عَلَى مُحَمَّدٍ یہ نام رکونا بہتر نہیں ہے

ہجڑتے ساییدوں سے سمعرا بین جوندوں سے سے ریوایت ہے کہ سرکار نامدار، مدنیت کے تاجدار رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے ایرشاد فرمایا : اپنے گولام کا نام ن یسا رخو، ن رباہ، ن نجیہ اور ن اپلہ، کیونکہ تुم پوچھو گے کہ کیا وہ یہاں ہے ؟ نہیں ہوگا تو جواب آئے : نہیں ।

(مسلم، کتاب الادب، باب کراہۃ التسمیۃ بالاسماء القبیحة، ص: ۱۱۸۱، حدیث: ۲۱۳۷)

**مُفْسِسِ الرَّحْمَةِ** شاہیر ہکیمیں عالمت ہجڑتے مُفْسِسِ الرَّحْمَةِ احمد  
یار خواں علیہ رحمۃ الرَّحْمَان اس ہدیتے پاک کے تھوت لیکھتے ہیں : گولام سے مُرداد مُتکلکن لڈکا ہے، خواہ بیٹا ہو یا گولام یا کوئی اور وہ جس کا نام رکھنا ہمارے کبجے میں ہو، نہیں تنجیہ کی

1 ..... ہجڑتے ساییدوں ہجڑتے رضی اللہ تعالیٰ عنہ کا مُکمل واقعیہ ایسی کتاب کے سفہ ۹۵ پر مولاہجڑا کیجیے ।

है या'नी येह नाम बेहतर नहीं। यसार के मा'ना हैं : फ़राख़ी, उस (तंगदस्ती) का मुक़ाबिल। रबाह के मा'ना हैं : नफ़अ, ख़सारा का मुक़ाबिल। नजीह के मा'ना हैं : कामयाब, ज़फ़रयाब। अफ़्लह के मा'ना हैं : नजात वाला। येह मुमानअूत सिर्फ़ इन नामों में महदूद नहीं बल्कि इन जैसे और नाम जिन के मा'ना में ख़ूबी व उम्दगी हो, जैसे : ज़फ़र, बरकत वगैरा (अशआ) येह नाम न रखना बेहतर है इस की वजह खुद बयान फ़रमा रहे हैं।

(मिरआतुल मनाजीह, 6/407)

صَلُّواعَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

**मन्द्र करने की ख़्वाहिश थी लेकिन मन्द्र नहीं किया**

हज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : अगर मैं ज़िन्दा रहा तो अपनी उम्मत को इस बात से मन्द्र कर दूंगा कि कोई अपना नाम बरकत, नाफ़ेअ (नफ़अ देने वाला) या अफ़्लह (ज़ियादा फ़्लाह व कामयाबी पाने वाला) रखे। (रावी का बयान है : मैं नहीं जानता कि हुज़ूर صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इन नामों के साथ राफ़ेअ नाम का ज़िक्र फ़रमाया या नहीं !) पूछा जाएगा कि बरकत यहां मौजूद है ? तो इस के जवाब में कहा जाएगा : नहीं। सरकारे मदीना صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने पर्दए ज़ाहिरी फ़रमाने तक इन नामों की मुमानअूत नहीं फ़रमाई। (الادب المفرد، باب افلح، ص: ٢١٦، حديث: ٨٣٣)

इमाम अबू जा'फ़र त़हावी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْهَادِي हृदीषे पाक के इस हिस्से “अगर मैं आइन्दा साल तक ज़िन्दा रहा तो ज़रूर इन

नामों (या'नी अफ़्लाह, नाफ़ेअ़, बरकत, यसार) को रखने से मन्त्र कर दूंगा” के तहूत फ़रमाते हैं : इस में इस बात पर दलालत है कि इन नामों का रखना हराम नहीं है क्यूंकि अगर हराम होता तो रसूलुल्लाह ﷺ ज़रूर इन के रखने से मन्त्र फ़रमा देते और मन्त्र करने को दूसरे वक्त तक मुअख़्बर न फ़रमाते और एक रिवायत में है कि “आप मन्त्र करने से ख़ामोश रहे हत्ता कि आप का विसाल हो गया” इस में इस बात पर दलालत है कि नबिय्ये करीम ﷺ की जानिब से मुमानअत इन नामों को शामिल नहीं है, जब मुअ़ामला ऐसा है तो इन नामों का रखना मुबाह रहेगा ।

(مشكل الآثار، ج ١، جزء ٢، ص ٢٠٨)

### صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلُّوا عَلَى مُحَمَّدٍ بَرْسَتِي كَوْ نَامْ پَسَنْدْ آتَاتَا تُو خُوشْ هُوتَيْ

सरकारे मदीनए मुनव्वरा, सरदारे मक्कए मुर्कर्मा पूछते, अगर उस का नाम पसन्द फ़रमाते तो खुश होते और उस की खुशी आप ﷺ के चेहरए अन्वर में देखी जाती, अगर उस का नाम नापसन्द फ़रमाते तो आप ﷺ के चेहरए अक़दस में उस की नापसन्दीदगी महसूस होती ।

(ابو داؤد،كتاب الطه،باب في الطيرة،٢٥٤،حدیث: ٣٩٢٠)

मुफ़स्सरे शहीर हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَان के नाम हैं : नूर पूर, मदीना, जमालपूर ऐसे नाम बड़े मुबारक हैं

बा'ज़ बस्तियों के नाम हैं : शैतानिया, खूनी चोक वगैरा येह नाम अच्छे नहीं । हुजूर ﷺ बस्तियों के बुरे नाम भी नापसन्द फ़रमाते थे । (मिरआतुल मनाजीह, 6/264)

صَلُّوٰ عَلَى الْحَبِيبِ! صَلُّوٰ اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّدٍ

### बस्तियों और अलाक़वें के नाम भी तब्दील फ़रमा देते

जनाबे रहमते आलमिय्यान, मक्की मदनी सुल्तान ज़मीनों, वादियों और कबाइल के बुरे नाम भी तब्दील फ़रमा दिया करते थे, चुनान्चे, इमाम अबू दावूद तब्दील करते हैं : आप ﷺ ने अफ़िरह ज़मीन (बन्जर ज़मीन) का नाम ख़ज़िरह (सर सब्ज़ ज़मीन) रखा, शा'बुज्ज़लालह (गुमराही की वादी) नामी वादी का नाम शा'बुल हुदा (हिदायत की वादी) रखा और आप ﷺ ने बनू ज़न्यह (हराम की अवलाद) का नाम तब्दील फ़रमा कर बनुरशदह (हलाल ज़ादे) रखा और बनू मुग़वियह (गुमराह कुन जगह) को बनू रिशदह (हिदायत वाली जगह) का नाम अंतः फ़रमाया ।

(ابو داؤد، كتاب الادب، باب في تغيير الاسم القبيح، 376/4، حديث: 4906)

صَلُّوٰ عَلَى الْحَبِيبِ! صَلُّوٰ اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّدٍ

### नाम के साथ अलाक़के का नाम भी बदल दिया

हज़रते वहब बिन अम्र बिन सा'द बिन वहब अल जुहनी बयान करते हैं कि उन के वालिद ने अपने दादा से रिवायत की,

کی دوڑے جاہیلیyyت مें उन को g़्yयान कहा जाता था, जब वोह نبیyye अकरम ﷺ की खिदमत में हाजir हुवे आप ﷺ ने पूछा तुम्हारा नाम क्या है ? अर्ज़ की : g़्yयान (नामुराद) । पैकरे हुस्नो जमाल, दाफेए रन्जो मलाल ﷺ ने उन का नाम “रशदान” (कामयाब) रखा, और आप ﷺ ने दरयाप्त फरमाया तुम्हारे अहलो इयाल कहां रहते हैं ? अर्ज़ की : वादिये g़्yवा (नामुराद वादी) में । आप ﷺ ने फरमाया : वोह “रशाद” (कामयाब वादी) में रहते हैं । (आप ﷺ ने उन के बुरे नाम के साथ उन की वादी का बुरा नाम भी बदल दिया) वोह शहर आज तक “रशाद” के नाम से पहचाना जाता है ।<sup>(1)</sup>

(الاصابية، ٤٠٣/٢، رقم: ٢٦٦٠، ملخصاً)

صَلُّوا عَلَى الْحَمِيمِ! صَلُّوا عَلَى مُحَمَّدٍ

لدينہ

**1** ..... سرکارے مदीنا، سुर्रے کلبے سینا، ساہیبے مुअttar پسینا ﷺ की مुबारक अदा को अदा करते हुवे शैखे त्रीकृत अमीरे अहले سुन्नत **دَامَتْ بِرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَّةُ** ने भी बा'ज़ शहरों के नाम (तञ्जीमी तौर पर) तब्दीل किये हैं मषलन सियालकोट का नाम अपने पीरो मुर्शिद سय्यदी कुब्बे मदीنا مौलانا जियाउद्दीन مदनी **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْأَكْبَرِ** की نিস्बत से “जियाकोट”, فے سलाबाद का नाम मुहम्मद आ'ज़म पاکستان hजरते اُल्लामा مौलانا سरدار احمد **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْأَكْبَرِ** की نিস्बत سے “سरदाराबाद”, لाडकाना का नाम मुफ्तिये दा'वते इस्लामी मौलانا मुहम्मद फ़रूक अ़त्तारी मदनी **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَفِي** की نिस्बत से “फ़रूक नगर” और हैदराबाद का नाम महबूबे अ़त्तार मुबल्लिगे दा'वते इस्लामी व रुक्ने शूरा हाजी ज़म ज़म रज़ा अ़त्तारी **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْأَبْرَارِ** की نिस्बत से “ज़म ज़म नगर” रखा ।

## چشمے کو نام تبّدیل فرمایا

एक گھंवे में रसूले पक्लैन, سुल्ताने कौनैन, रहमते दारैन  
 ﷺ ”بَيْسَان“ نामी खारी पानी के चश्मे से गुज़रे ।  
 آپ ﷺ ने فرمाया : ये हो मान मीठे पानी का  
 चश्मा है । آپ ﷺ ने उस का नाम बदल दिया  
 फिर हज़रते सच्चिदुना तलहा رضي الله تعالى عنه ने वो ह चश्मा खरीद  
 कर सदक़ा कर दिया, ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत  
 ﷺ ने فرمाया : तलहा ! तुम तो فَط्याज़ हो, इसी  
 लिये हज़रते سच्चिदुना तलहा رضي الله تعالى عنه को ”तलहतुल فَط्याज़“  
 कहा जाता था ।

(الاصابة، ٢/٤٣٠)

## صلوٰعَلِيُّ الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ عَالِيٌّ مُحَمَّدَ کُنْوَنِ کو نام تبّدیل فرمایا

हज़रते सच्चिदुना अबू उमय्या मख़्जूमी رضي الله تعالى عنه का  
 मदीनए मुनव्वरा مَدِيْنَةِ مُنَوْبَرَा مَدِيْنَةِ تَغْفِيَةً में एक कुंवां था जिस का नाम  
 ”असीर (मुश्किल)“ था, सरकारे आली वक़ार, मदीने के ताजदार  
 ﷺ ने उस का नाम ”यसीरह (आसान)“ रखा ।

(النهاية في غريب الحديث والأثر للجزري، باب العين مع السين ٣/٢١٣)

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** इन रिवायात के पेशे  
 नज़र हमें चाहिये कि हम न सिर्फ़ अपने बच्चों का नाम शरीअत  
 के मुताबिक़ रखें बल्कि खुद अपने नाम पर भी गौर कर लें,  
 अगर मा'नवी तौर पर नाम ग़लत और खिलाफ़े शरीअत हो तो  
 उँ-लमाए अहले سुन्नत से मश्वरे के बा'द शरअन जाइज़ और

अच्छा नाम रख लें, इस के साथ साथ अपनी दुकान, घर, महल्ले, गाऊं, कारख़ाने, कारख़ाने में बनने वाली चीज़ों (**Products**) का नाम भी शरीअत के मुताबिक़ कर लेना चाहिये ।

## “क़ादिरी अगरबत्ती” से “कौमी अगरबत्ती”

दा’वते इस्लामी के बनने से बहुत पहले की बात है कि शैख़े तरीक़त अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بِرَبِّكُلُّهُمُ الْعَالِيَّهُ ने रिज़के हलाल के हुसूल के लिये अगरबत्ती तय्यार कर के फ़रोख़त करने का काम शुरूअ़ किया और उस का नाम “क़ादिरी अगरबत्ती” रखा । अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بِرَبِّكُلُّهُمُ الْعَالِيَّهُ कुछ इस तरह फ़रमाते हैं कि एक बार मैं ने क़ादिरी अगरबत्ती के पेकेट को ज़मीन पर पड़ा पाया जो बुरी तरह कुचला हुवा था, मैं डर गया कि कहीं गैषे पाक رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने मुझ से पूछ लिया कि कारोबार चमकाने के लिये तुम्हें मेरा ही नाम मिला था ! मेरा नाम चन्द सिक्कों की खातिर ज़मीन पर रौंदने के लिये छोड़ दिया ! उसी वक्त मैं ने दिल में ठान ली कि मैं अपनी अगरबत्ती का नाम “कौमी अगरबत्ती” रखूंगा, यूं “क़ादिरी अगरबत्ती” कौमी अगरबत्ती हो गई ।

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** दुन्या की हर ज़बान के हुरूफ़े तहज्जी (**ALPHABETS**) का अदब करना चाहिये क्यूं कि साहिबे तफ़सीरे सावी शरीफ़ के कौल के मुताबिक़ दुन्या में बोली जाने वाली तमाम ज़बानें इल्हामी हैं । (تفسیر صاوی، ۳۰/۱) अगरबत्ती का पेकेट ज़मीन पर फेंकने में अगर्चे अमीरे अहले सुन्नत का अ़मल दख़ल नहीं था लेकिन आप की अ़कीदत ने

گوارا ن کیا کی میرے گئے پاک کی پ्यاری پ्यاری نیسبت “کا دیری” یوں کدموں تلے رہنے والے جائے، چنانچہ آپ دَامَتْ بِرَبِّكُلُّهُمُ الْعَالِيِّ نے اگر بھتی کا نام ہی تبدیل کر لیا۔ امریکے اہل سنت کے اس انداز میں اسے اسلامی بائیوں کے سیخونے کے لیے بہت کوچھ ہے جو مدنیا سٹور، کا دیری ہو ٹل، گائیکیا جنرل سٹول، اٹھاری سوپر سٹور و گئرا کے نام سے دوکانیں خوں لاتے ہیں اسی نام کے لیفڑا فے چپوانے ہیں فیر یہ لیفڑا فے جمین پر گیرے پڈے بھی دیکھاں دے رہے ہیں ।

**صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلُّوا عَلَى عَلِيٍّ مُحَمَّدَ**

### لباس کا بھی نام رکھتے

ہجڑتے ساییدنما ابू سईد خوداری رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ نے فرمایا : سرکار مدنیا، سلطانے بنا کریں اسے صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ نیا کپڈا چاہے ایسا ہو یا کسی پہننے تو اس کا نام رکھتے ।<sup>(۱)</sup> ہجڑے اکرم صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ کے اک ایسا شاریف کا نام “سہاب (بادل)” ہاں । (شرح الزرقانی علی المواهب ، فی تکیل ، ۹۷۵)

### چشمے کا نام رکھا

ہجڑے اనوار صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ نے خیبر کے مکام پر واکے اک چشمے کا نام قِسْمَةُ الْمَلَائِكَةِ (فیرشتوں کا ہیسسہ / فیرشتوں کی تکسیم) ” رکھا ।

(خلاصة الوفا بأخبار دار المصطفى، الفصل الثامن، ۲۱۷۹)

مدینہ

① ابو داؤد، کتاب اللباس، باب ما يقول إذا بس ثوباجديدة، ۴/۵۹، حدیث: ۴۰۲۰

**۲۷۰۸** ﴿۱﴾ رَحْمَةً كُوئِنَّا نَعْلَمُ عَلَيْهِ وَالهُوَ أَعْلَمُ  
کی مُسْبَارِک شُوازیوں کے نام

रसूले बे मिषाल, बीबी आमिना के लाल  
की सुवारी के घोड़ों के नाम “लहीफ़ (लम्बी  
दुम वाला)”<sup>(1)</sup> “ज़रिब (मज़बूत व ताक़तवर)”, “लिज़ाज़  
(तेज़ रफ़तार)”<sup>(2)</sup> और सियाह घोड़ा था जिसे “सक्ब (तेज़  
रफ़तार)” कहा जाता था और ज़ीन का नाम “दाज (कुशादा)”  
था, एक सियाही माइल सफेद ख़च्चर था जिसे “इलइल” कहा  
जाता था, एक ऊंटनी जिसे “क़स्वा (तेज़ चलने वाली)” के  
नाम से मौसूम किया जाता था जब कि दराज़ गोश का नाम  
“याफ़ूर (तेज़ रफ़तार)” था ।

(المعجم الكبير للطبراني، باب العين، ٩٢/١١، حدیث: ١١٢٠٨)

## मुबारक बकरियों के नाम

سُرکارے مَدِینَةِ مُنَبِّهٰ، سَرداَرے مَكَكَاءِ مُكَرَّمَاءِ  
صلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى عَبْدِهِ وَسَلَّمَ کی دس دूध دेनے والی بکری�ां�ीں :  
**(1)** اجْوَه **(2)** جَمْ جَمْ **(3)** سُوكْيَا **(4)** بَرَكَت **(5)** وَرْسَت  
**(6)** إِتْلَالَال **(7)** إِتْرَافَ **(8)** كُومَرَه **(9)** غُوشَه يَا غُوشَيَّه  
**(10)** اُور اُک بکری کا نام یومنِ ثہا ।

(**سل الهدى والشاد**، الباب السادس في شاهده، ومتناهيه عليه السلام ٤١٢/٧)

हुजूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक  
صلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की तलवार जिस का दस्ता और दस्ते का

二三

**١: الجامع الصغير، جزء ٢، ص ٤٢٥، حدیث: ٦٨٥٥**

<sup>٢</sup>: فیض القدیر، حرف الكاف، باب کان و هم، شمائل شریفه، ۲۲۵ / ۵۰، حدیث: ۶۸۵۶

کینارا دوںوں چاندی کے ثے اس کا نام ”جُلُفِیکھار“ تھا، کمان کا نام ”سدااد“، ترکش (تیر رکھنے کے خول) کا نام ”جُمَاعَ“ جیرہ جو تابے سے مुजھھن ثیہ اس کا نام ”جَاتُل فُجُول“، ”نَبْذَا“ نامی نےزا، اک دال کا نام ”جَكْنَ“ اور اک سفید رنگ کی دال جس کا نام ”مُجِيزَ“ تھا، چتاہ کا نام ”کَجَزَ“ چڈی کا نام ”نَمِيرَ“ مسکیجے کا نام ”سَادِيرَ“ اور آئینے کو ”مُدِيلَلَة“ کہا جاتا تھا، کنچی کا نام ”جَامِعَ“ اور تلواہ کا نام ”مَسْكُوكَ“ تھا ।

(معجم کبیر، ۹۲/۱۱، حدیث: ۱۱۰۸، و مجمع الزوائد ۴/۹۵، حدیث: ۹۶۰۸)

### ہujar کے مुبارک بارتاروں کے نام

اک بडی سا پیوالا جس کا نام ”سَأْهَ (کوشادا)“ تھا، دوسرا پیوالا جو بہت بडی تھا جسے چار آدمی ٹھاتے تھے اس کا نام ”گَرْرَ (چمکدار)“ تھا ।

(الجامع الصغير، جزء ۲، ص ۴۲۵، حدیث: ۶۸۰۹)

تیسرا پیوالے کا نام ”رَخْيَانَ (بھرا ہووا)“، چوتھے کا نام ”مُغَرِّبَ (مدادگار)“ اور پانچوں کا نام ”مُجَبَّبَ (چاندی چढی ہووا)“ تھا جس پر چاندی کے تار لگے ہوئے تھے ।

(فیض القدیر، حرف الکاف، باب کان وہی شمال شریفہ، ۲۲۶/۵، حدیث: ۶۸۵۷)

صَلَوَاتُ اللَّهِ عَلَى الْحَمِيدِ !  
بَدْ شُعَاظُونِي كَيْ وَجَاهَ سَيْ نَامَ نَ بَدَلَنَ

اگر کوئی شاخہ جیسا دیماں رہتا ہو، تاں دست ہو، مusalسل ناکامیوں نے اسے بھر رکھا ہو تو شہزاد اسے وسخسا

दिलाता है कि येह सारी मुसीबतें तुम्हारे नाम की वजह से हैं लिहाज़ा तुम अपना नाम तब्दील कर लो हालांकि उस का नाम बड़ी अच्छी निस्बत वाला होता है, बा'ज़ अवकात येह बात अमलियात करने वाले भी कह देते हैं चुनान्चे, वोह शख्स अपना शरअून जाइज़ और अच्छे मा'ना वाला बल्कि अच्छी निस्बत वाला नाम भी तब्दील कर देता है। ऐसा करना नाम से बद शुगूनी लेने के मुतरादिफ़ है और बद शुगूनी लेना शैतानी काम है जैसा कि रसूलؐ अकरम، نُورِ مُجَسَّمٍ حَلَّ اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَالْهُوَ وَسَلَّمَ ने इरशाद ف्रमाया : يَا'نِي أَصْحَّ يَا بُرَا شُغُونَ لَنِي كَلِيلٌ وَالْعَيْنَةُ وَالْطِبْرُ وَالْجُبْتُ مِنَ الْجُبْتِ लेने के लिये परन्दा उड़ाना, बद शुगूनी लेना और तर्क (या'नी कंकर फेंक कर या रैत में लकीर खींच कर फ़ाल निकालना) शैतानी कामों में से है। (ابو داؤد، ४/ २२، حديث: ३९०७)

صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ صَلَوَاتُ اللَّهِ عَلَى الْحَبِيبِ!

## તारीखी नाम रखना

کہہ لوگ تاریخ کے ہیساں سے نام رکھنے پر بہت جوڑ دے رہے ہیں یا 'نی بچھا جس تاریخ و سین میں پیدا ہوا اس کا ہیساں لگا کر نام رکھا جاتا ہے । اگرچہ یلمول آ'داد کے لیہاڑ سے نام رکھنا بوجوں سے شایستہ ہے لیکن بوجوں نے دین اپنا تاریخی نام اسلام نام سے اعلان رکھتے ہے । باہر ہال اگر کوئی تاریخ کے ہیساں سے نام رکھنا چاہے تاکہ سینے ویلادت بھی مہفوڑ ہو جائے تو رکھ سکتا ہے لیکن اس کی کوئی فوجیلٹ نہیں ہے، بہتر یہی ہے کہ کسی نبی عَلَيْهِ السَّلَامُ، کسی سہابی یا کسی ولی کے با برکت نام پر نام رکھنے । آ'لا ہجرت رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ سے کسی نے ارجوں کی : ہڈجور ! میرے

भतीजा پैदا हुवा है, इस का कोई तारीखी नाम तजवीज़ फ़रमा दें। इरशाद फ़रमाया : तारीखी नाम से क्या फ़ाइदा ? नाम वोह हों जिन के अहादीष में फ़ज़ाइल आए हैं। मेरे और भाइयों के जितने लड़के पैदा हुवे मैं ने सब का नाम “मुहम्मद” रखा, येह और बात है कि येही नाम तारीखी भी हो जाए। हामिद रज़ा ख़ां का नाम मुहम्मद है और इन की विलादत सि. 1292 हि. में हुई और इस नाम मुबारक के अदद भी बानवे हैं। एक दिक्कत (या’नी दुश्वारी) तारीखी नाम में येह है कि अस्माए हुस्ना से एक या दो जिन के आ’दाद मुवाफ़िके अददे नामे क़ारी (या’नी पढ़ने वाले के नाम के आ’दाद के मुताबिक़) हों। अददे नाम दो चन्द (या’नी दुगने) कर के पढ़े जाते हैं। वोह क़ारी को इस्मे आ’ज़म का फ़ाइदा देते हैं, तारीखी नाम से मिक़दार बहुत ज़ियादा हो जाएगी मषलन अगर किसी की विलादत इस सि. 1329 हि. में हुई तो इस के मुताबिक़ अदद के अस्माए हुस्ना 2658 बार पढ़े जाएंगे और मुहम्मद नाम होता तो एक सो चौरासी (184) बार, दोनों में किस क़दर फ़र्क़ हुवा ! (मल्फूज़ाते आ’ला हज़रत, स. 73)

صَلُّوْعَلَى الْحَبِيبِ! صَلُّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّدٍ

**कुरआन से नाम निकालना**

बा’ज़ लोग कुरआने मजीद से बच्चों का नाम निकालते हैं, अगर वोह नाम कुरआने पाक में किसी नबी या नेक व सालेह आदमी का है तब तो कोई हरज नहीं लेकिन बा’ज़ अवक़ात वोह कुरआने पाक से कोई ऐसा लफ़्ज़ नाम के लिये मुन्तख़ब कर लेते हैं जिसे मा’नवी ख़राबी की वजह से नाम के तौर पर इस्त’माल

नहीं किया जा सकता। मषलन पाकिस्तान के एक देहात में एक औरत जो ज़रा कुरआने करीम पढ़ना जानती थी उस के यहां यके बा'द दीगरे तीन बेटियां पैदा हुईं उस ने खुद को पढ़ा लिखा समझते हुवे बच्चों के नाम तजवीज़ करने के लिये कुरआने करीम से सूरए कौषर का इन्तिख़ाब किया चुनान्चे, बड़ी बच्ची का नाम कौषर रखा, दूसरी का नाम वनहर तजवीज़ किया और तीसरी का नाम अबतर मुकर्रर किया। कौषर के मा'ना तो ब हैषिय्यते नाम किसी हृद तक दुरुस्त भी हैं लेकिन वनहर का मा'ना है “और तुम कुरबानी करो” जब कि आखिरी लफ़्ज़ अब्तर के मा'ना हैं : “ख़ैर से महरूम रहने वाला” जो किसी भी तरह नाम रखने के लिये मुनासिब ही नहीं मगर जहालत का क्या इलाज ? इसी तरह एक बच्ची का नाम रखा गया मुज़बज़बीन। पूछा गया : ये ह क्या नाम है ? जवाब मिला : कुरआन शरीफ में है, हालांकि मुज़बज़बीन का लफ़्ज़ उन लोगों के लिये इस्त’माल हुवा जो कुफ़्रो ईमान के बीच में डगमगा रहे हैं, न ख़ालिस मोमिन और न खुले काफ़िर हैं। (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, स. 196)

दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत (दा'वते इस्लामी) के एक इस्लामी भाई का बयान है कि मुझे किसी ने फ़ोन पर बताया कि उस ने अपनी बेटी का नाम कुरआन से निकाल कर रखा है। जब नाम पूछा तो कहा : “ज़ानिया” (عُوْدُ بِاللَّهِ مِنْ بَعْدِكَ) इसी तरह एक शख्स ने अपने बेटे का नाम “ख़नास” रखा। (وَالْعَيْذُ بِاللَّهِ تَعَالَى)

बहर हाल ऐसे लोगों को बताएँ इस्लाह कुछ कहा जाए तो समझते हैं कि कुरआने करीम से रखे हुवे नामों पर ए'तिराज़

کیا جا رہا ہے ! ہالانکی کورآنے کریم سے نام تجھیج کرنے کے بھی کوچھ ڈسول ہے ورنہ تو کورآن میں ہیمار (گدھا), کللب (کوتا), خینجیر (سुوار), بکرہ (گاہ), فیراؤن (خودا ایک دا'�ا کرنے والہ مسحور بادشاہ), ہاماں (مسحور کافیر) وغیرہ کے الفاظ بھی آئے ہے تو کیا ان کے ما'نا اور نیست جاننے کے بآ'd بھی کوئی ان الفاظ کو اپنے بچھے یا بچھی کا نام رکھنے کے لیے اسٹی'مال کرنے پر تھیار ہوگا ? یکینن نہیں ।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلُّ اللَّهُ عَالِيٌ عَلَى مُحَمَّدٍ

### نےک شاخہ کے نام پر نام رکھنے کی بحث

ہجڑتے ساییدنہا ابیلیل مرتضیٰ رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ سے ریوایت ہے :

مَا مِنْ قَوْمٍ يَكُونُ فِيهِمْ رَجُلٌ صَالِحٌ فَيَمُوتُ فَيُخْلَفُ فِيهِمْ بِمَوْلَوِهِ

فَيُسْمُوْنَهُ بِرَسْمِهِ إِلَّا خَلَفَهُمُ اللَّهُ بِالْحُسْنَى

یا'نی : جس کوئی میں کوئی نےک شاخہ اینٹیکال کر جائے، اس کے انٹیکال کے بآ'd اس کوئی میں کوئی بچھا پیدا ہو، اور وہ اسی بوجرگ شاخہ ایت کے نام پر اس بچھے کا نام رکھے، تو **اللّٰہ** اس اچھے نام رکھنے کے سبب ان لوگوں کے لیے اس بچھے میں بھی وہی نےک سیفیات پیدا فرمائے گا । (ابن عساکر، ۴۲/۴۴)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلُّ اللَّهُ عَالِيٌ عَلَى مُحَمَّدٍ

### نےک لوگوں کے نام پر نام رکھو

تممیل موسیٰ بن حجڑتے ساییدنہا ابیشہ سیدیکا رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ سے ریوایت ہے کہ رسویللہ رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ نے فرمایا : نےک لوگوں کے نام پر نام رکھو اور اپنی ہاجتے اچھے چہرے والوں (یا'نی نےک لوگوں) سے تعلب کرو ।

(المسند الفردوس، حدیث ۵۸/۲، ۲۳۲۹)

## नवियों के नाम पर नाम रखें

अम्बियाएँ किराम عَلَيْهِمُ الصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ के अस्माएँ मुबारका  
और सहाबएँ किराम व ताबेईने इज्ज़ाम और औलियाएँ किराम  
رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِمْ के नाम पर नाम रखने चाहिये, जिस का एक फ़ाइदा  
तो येह होगा कि बच्चे का अपने अस्लाफ़ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِمْ से रुहानी  
तअल्लुक़ क़ाइम हो जाएगा और दूसरा इन नेक हस्तियों से मौसूम  
होने की बरकत से बच्चे की ज़िन्दगी पर मदनी अषरात मुरत्तब  
होंगे। तमाम नबियों के सरदार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ  
ने फ़रमाया : “अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ” के नाम पर नाम रखो  
और **अब्लाह** عَزَّوَجَلٌ के नज़्दीक नामों में ज़ियादा प्यारे नाम  
अब्दुल्लाह व अब्दुर्रहमान हैं और सच्चे नाम हारिष और हमाम  
हैं और “हर्ब” व “मूरा” बुरे नाम हैं।”

(ابو داؤد،كتاب الادب،باب في تغيير الاسماء،٣٧٤/٤٤،حديث: ٤٩٥٠)

इस عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْهَادِي हज़रते अल्लामा अब्दुर्रज्जूफ़ मनावी के عَلَيْهِمُ الصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ हृदीष के तहूत लिखते हैं : अम्बियाए किराम नामों पर नाम रखने की तरगीब इस लिये दिलाई गई क्यूंकि येह हज़रात इन्सानों के सरदार हैं, इन के अख़्लाक़ सब से बेहतर, इन के आ'माल तमाम आ'माल से अच्छे और इन के नाम तमाम नामों से अफ़ज़ूल हैं लिहाज़ा इन के नाम पर नाम रखना शरफ़ व सआदत का बाइष है ।

मुफस्सिरे शहीर हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ्ती अहमद  
यार खान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ इस हृदीषे पाक के तहूत लिखते हैं : हारिष  
के मा'ना हैं कमाऊ। हर्ष कहते हैं कमाई को। “हमाम” के मा'ना

हैं क़स्द व इरादा करने वाला और हम्म कहते हैं इरादे को । कोई शख्स कमाई या इरादे से ख़ाली नहीं होता लिहाज़ा येह नाम बहुत सच्चे हैं, नाम मुत्ताबिक़ काम के हैं । (मुफ्ती साहिब मज़ीद लिखते हैं :) हर्ब के मा'ना हैं जंग व ख़ून रैज़ी, मुर्रा के मा'ना हैं जगड़ालू या कड़वी तबीअत का आदमी । मुर्रा शैतान का नाम भी है ।

(मिरआतुल मनाजीह, 6/425)

صَلُّوٰ عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلُّوٰ اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّدٍ

**महबूबाने खुदा के नामों पर नाम रखना मुस्तहब है**

फ़ी ज़माना येह रवाज भी ज़ोर पकड़ चुका है कि अपने बच्चों का नाम रखने के लिये नाविलों, टीवी डिरामों और फ़िल्मों के अदाकारों के नाम भी चुन लिये जाते हैं, हालांकि मुस्तहब येह है कि **अल्लाह** वालों के नाम पर नाम रखा जाए, चुनान्चे, آ'ला हज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلٰيْهِ लिखते हैं : हृदीष से षाबित कि महबूबाने खुदा अम्बिया व औलिया عَلٰيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ के अस्माए तथियबा पर नाम रखना मुस्तहब है जब कि इन के मख्सूसात से न हो ।<sup>(1)</sup> (फ़तावा रज़िविया, 24/685) बहारे शरीअत में है : अम्बियाए किराम के अस्माए तथियबा और सह़बा व ताबेर्इन व बुजुर्गने दीन के नाम पर नाम रखना बेहतर है । उम्मीद है कि इन की बरकत बच्चे के शामिले हाल हो । (बहारे शरीअत, 3/356)

صَلُّوٰ عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلُّوٰ اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّدٍ

1 ....मषलन मुहर्रिम : हराम करने वाला

## نوازیوں کا نام ہسنان اور ہوسنے کا

ہدیہ میں ہے ساییدونا امامہ ہسنان رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی ویلادت پر ہو جوڑے اکڈس صَلَّی اللہُ تَعَالَیٰ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّمَ تشریف لے گا اور ایرشاد فرمایا : مुझے مera بستا دیخاؤ ! تum نے us کا کya نام رخا ? مولانا ابھی (کَرَمَ اللَّهُ تَعَالَى وَجْهُهُ الْكَرِيمُ ) نے ابھی کی : ہرب . فرمایا : نہیں بلکہ وoh ہسنان ہے । Fir ساییدونا امامہ ہوسن رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی ویلادت پر تشریف لے گا اور فرمایا : مुझے مera بستا دیخاؤ ! Tum نے us کا کya نام رخا ? مولانا ابھی (کَرَمَ اللَّهُ تَعَالَى وَجْهُهُ الْكَرِيمُ ) نے ابھی کی : ہرب . فرمایا : نہیں بلکہ وoh ہوسن ہے, fir امامہ موسیٰ حسین کی ویلادت پر وoh فرمایا تو مولانا ابھی (کَرَمَ اللَّهُ تَعَالَى وَجْهُهُ الْكَرِيمُ ) نے وoh ابھی ابھی کی । فرمایا : نہیں بلکہ وoh موسیٰ حسین ہے fir فرمایا : main نے اپنے بستوں کے نام دا وود (عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ ) کے بستوں پر رخے ।

(مسند امام احمد بن حنبل، مسند علی ابن ابی طالب، حدیث: ۲۱۱۹ و ۲۷۶۹، واسد الغایۃ، ۷۷۰، رقم: ۴۶۸۸)

شابر، شuber، موشبر، ہسنان، ہوسن، موسیٰ حسین ان سے ہم وہ کوئی نہ مار سکتے ہیں، اس سے مولانا ابھی (کَرَمَ اللَّهُ تَعَالَى وَجْهُهُ الْكَرِيمُ ) کو تسلیم ہوئی کہ اولاد کے نام اخبار کے ناموں پر رخنے چاہیے لیہا جا۔ ان کے باد اپنے ساہبیوں کے نام ابوبکر، ڈمر، ڈسماں، اببا س وغیرہ رخے । (فتواویٰ رجیفیا، 29/80)

**صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّی اللہُ تَعَالَیٰ عَلَیْ مُحَمَّدٍ**

اپنے شہزادے کو نام حضرتے ہبھاہیم علیہ السلام کے نام پر رکھا

حضرت سعید دُنہ ان سے رضی اللہ تعالیٰ عنہ بیان فرماتے ہیں کہ  
شہنشاہ مادینا، کارے کلبو سینا صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم نے ارشاد  
فرمایا : رات میرے ہاں بیٹا ہو گا ہے، میں نے اپنے باپ (یا' نی  
خُلیلِ لُلّاہ) علیہ السلام کے نام پر اس کا نام  
**ہبھاہیم** (رضی اللہ تعالیٰ عنہ) رکھا ہے ।

(مسلم، کتاب الفضائل، باب رحمتہ علیہ السلام الصیبان - الخ ص ۱۲۶، حدیث: ۲۳۱۵)

جب کی حضرت سعید دُنہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ ابू موسیٰ اش اعری  
بیان کرتے ہیں کہ میرے ہاں بچے کی ولادت ہوئی، میں اسے نبی یہ  
اکرام صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم کے پاس لایا، آپ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم  
نے اس کا نام **ہبھاہیم** رکھا، اسے خجور چبا کر بھوپلی دی، اس  
کے لیے بارکت کی دعا کی اور میرے ہوابالے کر دیا । حضرتے  
ہبھاہیم رضی اللہ تعالیٰ عنہ حضرت سعید دُنہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے  
سب سے بडے بیٹے ہے ।

(بخاری، کتاب العقیقۃ، باب تسمیۃ المولود غدا یولد لمن لم یعق وتحنیکه، ۴۶۷: ۵۰۴)

**صلوٰعَلِ الْحَبِیبِ ! صَلَّی اللہُ تعالیٰ عَلٰی مُحَمَّدٍ**

**کٹلہ ساٹو کیتاں**

✿ بچے کا اچھا نام رکھنا چاہیے ✿ میڈانے مہاجر میں دُنیا  
میں رکھے گए نام سے پوکارا جائے گا ✿ ساتوں دن نام رکھنا  
بہتر ہے پہلے بھی رکھنا جا سکتا ہے ✿ نام رکھنا والید کی  
زیمدادی ہے ✿ بچے کا نام مُونتھب کرتے وکٹ شارڈ اہکام

کو پेशے نج़र رکھنا چاہیے ﴿ نام رکھنے سے پہلے اچ्छی اچ्छی نیت کر لئی چاہیے ﴿ کुछ نام اسے ہیں جن کا رکھنا اپنے، کुछ کا رکھنا جائیز، کुछ نام نا مुناسیب اور کुछ ناجائز ہے ﴿ اگر کیسی مددگار مونے کا نام ”ابد” سے شروع کرنا ہو تو سب سے اپنے نام ابدالاہ اور ابدال رہمان ہے ﴿ مُحَمَّد نام بड़ا پ्यारा ہے یہ نام رکھنے کے بड़ے فَوَّاِد وَ شَمَرَات ہے ﴿ مُحَمَّد بَرْخَا، اہماد بَرْخَا، گُلَامِ نبی وَغَرَا نام رکھنا جائیز ہے ﴿ مُحَمَّد نبی، اہماد نبی، نبیِ یُوسُف مان، مُحَمَّد رَسُول، اہماد رَسُول، نام رکھنا جائیز نہیں ﴿ مُعْذِنْجُوَدِیَن کے ما’نا ہے ”دین کو پناہ دئے والوں“ اور اپنا نام اسے رکھنا سخت اُجُمِ تَجْكِيَّة نَفْس وَ خُود سرتائی ہے اور وہ هر رہا ہے (فُتاوا رجُلیٰ، 24/671) ﴿ تاہا، یاسین نام بھی ن رکھے جائے ﴿ گُفرانِ دین (نام) بھی سخت کبھی ہے و شنی اے ہے ﴿ ناموں کی اک کیسم کوپکار سے مुखِتسر ہے جیسے جیسے، پُتُرُس اور یوہننا وَغَرَا اس نواع (یا’نی کیسم) کے نام مُسلمانوں کے لیے رکھنے جائیز نہیں ﴿ بُرے نام کو بدل دئے چاہیے ﴿ اپنے بھر، مہلکے، دُکان اور فکٹری وَغَرَا کا نام بھی اچھا رکھنا چاہیے ﴿ اسے نام نہیں رکھنے چاہیے جن میں خود سرتائی بहت نعمایاں ہوتی ہے ﴿ نکوں کے نام پر نام رکھنا بائیسے برکت ہے ﴿ ہر لال مکڑا بُرُجُونَی دین سے نام رکھوانا چاہیے ﴿ لوگوں کے بُرے نام رکھنا جائیز نہیں ہے ﴿ کُنْتَ رَحْمَةً سُنْنَتْ ہے ।

صَلُّوا عَلَى الْحَمِيمِ! صَلُّوا عَلَى مُحَمَّدٍ

बच्चों और बल्डिलों के लिये 538 प्यारे प्यारे नाम

बच्चों के लिये 391 प्यारे प्यारे नाम

“अब्द” की इजाफ़त के साथ 59 रहमत भरे नाम

عَبْدُ اللَّهِ	(अब्दुल्लाह = अल्लाह का बन्दा)
عَبْدُ الرَّحْمَنِ	(अब्दुर्रह्मान = “बहुत मेहरबान” का बन्दा)
عَبْدُ الْاَحَدِ	(अब्दुल अहद = वाहिद व यक्ता का बन्दा)
عَبْدُ الْبَارِيِّ	(अब्दुल बारी = बनाने वाले का बन्दा)
عَبْدُ الْبَاسِطِ	(अब्दुल बासित = कुशादगी वाले का बन्दा)
عَبْدُ الْبَاقِيِّ	(अब्दुल बाकी = हमेशा रहने वाले का बन्दा)
عَبْدُ الْبَصِيرِ	(अब्दुल बसीर = देखने वाले का बन्दा)
عَبْدُ التَّوَابِ	(अब्दुत्तव्वाब = तौबा क़बूल करने वाले का बन्दा)
عَبْدُ الْجَبَارِ	(अब्दुल जब्बार = अज़मत वाले का बन्दा)
عَبْدُ الْجَلِيلِ	(अब्दुल जलील = बुजुर्गी वाले का बन्दा)
عَبْدُ الْحَسِيبِ	(अब्दुल हसीब = काफ़ी होने वाले का बन्दा)
عَبْدُ الْحَفِيظِ	(अब्दुल हफीज़ = हिफ़ाज़त करने वाले का बन्दा)
عَبْدُ الْحَقِّ	(अब्दुल हक़ = खुदाई के लाइक़ का बन्दा)
عَبْدُ الْحَكْمِ	(अब्दुल हक्म = फ़ैसला करने वाले का बन्दा)

- |              |   |
|--------------|---|
| عبدالحکیم    | (अब्दुल हूकीम = हिक्मत वाले का बन्दा)   |
| عبدالحلیم    | (अब्दुल हूलीम = हिल्म (या'नी ज़ब्त व तहम्मुल) वाले का बन्दा)  |
| عبدالحمید    | (अब्दुल हूमीद = ख़ुबियों वाले का बन्दा)   |
| عبدالحَیٰ    | (अब्दुल हूस्य = हमेशा ज़िन्दा रहने वाले का बन्दा)   |
| عبدالخالق    | (अब्दुल ख़ालिक = पैदा करने वाले का बन्दा)   |
| عبدالرَّافع  | (अब्दुर्रफ़ेअ = बुलन्द करने वाले का बन्दा)  |
| عبدالرَّحِيم | (अब्दुर्रहीम = “रहमत वाले” का बन्दा)  |
| عبدالرَّزَاق | (अब्दुर्रज़ाक = रिज़क देने वाले का बन्दा)   |
| عبدالرَّشِيد | (अब्दुर्रशीद = सिधी तदबीर वाले का बन्दा)  |
| عبدالرَّءُوف | (अब्दुर्रऊफ़ = निहायत मेहरबान का बन्दा)   |
| عبدالسَّلَام | (अब्दुस्सलाम = सलामती देने वाले का बन्दा)   |
| عبدالسَّمِين | (अब्दुस्समीअ = सुनने वाले का बन्दा)   |
| عبدالشَّكُور | (अब्दुशश्कूर = कद्र फ़रमाने वाले का बन्दा)  |
| عبدالصَّبُور | (अब्दुस्सबूर = बुर्दबार (या'नी बा वुजूद कुदरते कामिला के गुनाहों पर जल्दी सज़ा न देने वाले) का बन्दा) |
| عبدالصَّمد   | (अब्दुस्समद = बे नियाज़ का बन्दा)   |
| عبدالعزِيز   | (अब्दुल अज़्जीज = इज्जत वाले का बन्दा)  |
| عبدالعَظِيم  | (अब्दुल अज़्जीम = अज़्जमत वाले का बन्दा)  |
| عبدالعَلِيم  | (अब्दुल अलीम = इल्म वाले का बन्दा)  |
| عبدالغَفار   | (अब्दुल गफ़कार = बहुत बख्शने वाले का बन्दा)   |

عبدالْفَعُور	(ابدُل غُفرُور = بِرَحْمَانِهِ وَالْوَالِيَّةِ)
عبدالْغَنِيٰ	(ابدُل غُنِيٰ = هَرَى الْقِيَّامَةِ مِنْهُ)
عبدالْفَتَّاح	(ابدُل فَتَّاح = بِرَحْمَانِهِ وَالْوَالِيَّةِ)
عبدالْقَادِير	(ابدُل قَادِير = كُوَّذَرَاتُهُ)
عبدالْقَدُوس	(ابدُل قَدُوس = هَرَى الْقِيَّامَةِ مِنْهُ)
عبدالْقُرْيٰ	(ابدُل قَرِيٰ = كُوَّذَرَاتُهُ)
عبدالْكَبِيرٰ	(ابدُل كَبِيرٰ = سَبَبَتُهُ الْأَكْبَرُ)
عبدالْكَرِيمٰ	(ابدُل كَرِيمٰ = بِرَحْمَانِهِ وَالْوَالِيَّةِ)
عبداللطیفٰ	(ابدُل لَطِيفٰ = لُطْفُهُ)
عبدالمَاجِد	(ابدُل مَاجِدٰ = بِرَحْمَانِهِ وَالْوَالِيَّةِ)
عبدالمَمِتِينٰ	(ابدُل مَمِتِينٰ = كُوَّذَرَاتُهُ)
عبدالمُجِبٰ	(ابدُل مُجِبٰ = دُعَا إِلَيْهِ وَلَمْ يُؤْمِنْ)
عبدالمَجِيدٰ	(ابدُل مَجِيدٰ = إِذْجَاهُ)
عبدالملِكٰ	(ابدُل مَلِكٰ = بَادِشَاهُ)
عبدالمُؤْمِنٰ	(ابدُل مَؤْمِنٰ = أَمْنَهُ)
عبدالنَّافِعٰ	(ابدُل نَافِعٰ = نَافِعٌ)
عبدالنُّورٰ	(ابدُل نُورٰ = نُورٌ)
عبدالواجِدٰ	(ابدُل وَاجِدٰ = كُوَّذَرَاتُهُ)
عبدالواحِدٰ	(ابدُل وَاحِدٰ = جَمِيعُ الْكَوَافِرِ)

عبدالوارث

(अब्दुल वारिष = वारिष (या'नी हमेशा बाकी रहنे वाले) का बन्दा)

عبدالواسع

(अब्दुल वासिअ = वुस्अत देने वाले का बन्दा)

عبدالودود

(अब्दुल वदूد = बहुत दोस्त रखने वाले का बन्दा)

عبدالوكيل

(अब्दुल वकील = कारसाज़ (या'नी काम बनाने वाले) का बन्दा)

عبدالولى

(अब्दुल वली = हिमायती का बन्दा)

عبدالوهاب

(अब्दुल वहाब = बहुत देने वाले का बन्दा)

عبدالهادى

(अब्दुल हादी = हिदायत देने वाले का बन्दा)

صلواتُ اللہِ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّمَ عَلَیْہِ الرَّحِیْمِ!

**سارکوارے مادینا** ﷺ کو نامے اکڈس

अर्ज़ : हुज़रे अक्डस ﷺ का नामे अक्डस क्या है ?

इरशाद : हुज़र के इस्मे ज़ात (ज़ाती नाम) दो हैं : कुतुबे साबिका में अहमद है और कुरआने करीम में मुहम्मद ﷺ के अस्माएँ हैं और हुज़र ﷺ ने पांच सो जम्म फ़रमाए ।

(المواهب اللدنی، الفصل الاول فی ذکر اسمائی الشریفہ ..... الخ ، ۱/۳۶۲)

سیرتے شामी में तीन सो और इज़ाफ़ा किये और मैं ने छे सो और मिलाए । कुल चौदह सो हुवे और हुज़र के अस्मा हर त़बके में मुख़الिफ़ हैं और हर हर जिन्स में जुदागाना है, दरया में और नाम हैं पहाड़ों में और ।

अर्ज़ : येह कषरते अस्मा कषरते सिफ़ात पर दलालत करते हैं ?

इरशाद : हाँ :

(ملفوظاتِ آ'लا هज़रत، س. 92)

شَاهِيْ خَلِيلُ الْبَرَّ نَامَ مَسْلِيْلُ اللَّهِ عَلَيْهِ وَاللَّهُ وَسَلَّمَ کے 119 بَرَکَاتِ وَالْوَالِیْ نَامَ

**اَحْسَن** (احسن = وो جات جیس مئ اچھی سیفیت جسے ہونے)

**اَحْشَم** (احشم = جیسا دا وکار و ایسا میںان والا)

**اَزْهَر** (ازھر = سفید رنگت والا)

**اَعْظَم** (اعظم = برتار)

**اَكْرَم** (اکرم = بہت مہربان، بہت سخھی)

**اَمَان** (امان = پناہ، ہیفا جات)

**اَمْجَد** (امجاد = بوجوگی اور شرف والا)

**اَمِين** (امین = امانتدار)

**بَدْر** (بدر = مुکتمل چاند)

**بُرْهَان** (برہان = ہدیت، دلیل جیس مئ شک شعبا ن ہونے)

**بَشِير** (بشير = خوش خبری دئے والا)

**جَوَاد** (جواد = سخھی) (1)

**حَاتِم** (حاتم = فیصلہ کرنے والا)

**حَامِد** (حامد = ہمد کرنے والا)

**حَبِيب** (حبیب = پ्यارا)

**حَسِيب** (حسیب = کافری، ہدیت و شرف والی هستی)

**حَكِيم** (حکیم = ساہیبے ہیکمتو)

**حَلِيم** (حلیم = بُرْدَبَار، بَرَدَاشْتَ وَالْوَالِیْ)

(1) .... سخھی ووہ جو خود خاۓ اور ائم کو بھی خیلائے، جواد ووہ جو خود ن خاۓ اور ائم کو خیلائے ایسی لیے رک **غَرَوْجَل** کو سخھی نہیں کہتے جواد کہتے ہیں ।

(میر آتول منانیہ، 2/199)

**حَمَاد** (ہمّاد = کشورت سے **آللاؤں** کی ہمّد کرنے والा)

**حَنِيفٌ** (ہنیف = اسلام پر شایستہ کردہ)

**دَاعِعٌ** (داعی = باتیل کی سرکوبی کرنے والा)

**رَاغِبٌ** (راغب = مائل، خواہیش مند)

**رَحِيمٌ** (رہیم = رحم والا)

**رَشِيدٌ** (رشید = سیधا، ایسٹکامت والा)

**رَفِيقٌ** (رفیق = بہت جیسا دوست مہربانی فرمانے والा)

**رَءُوفٌ** (رُؤوف = نرم دل)

**رَاهِيدٌ** (ج़اہید = دنیا سے بے راغب)

**زَاهِرٌ** (جَاہیر = چمکدار رنگت والا، روشن چہرے والा)

**زَيْنٌ** (ژین = سورت سیرت دونوں اُتیباً سے کامیل و خوب سورت)

**سَاجِدٌ** (ساجید = سجدہ کرنے والा)

**سَخِيٌّ** (سخی = سخاوت کرنے والा)

**سَدِيدٌ** (سدید = دوسرست کرنے والा)

**سِرَاجٌ** (سراج = سورج)

**سَعِيدٌ** (سعید = سعادت مند، خوش نسبی)

**سُلْطَانٌ** (سلطان = بادشاہ، ہوجھت، کوئی دلیل)

**سَبَّـفٌ** (سپف = تلواہ)

**شَـاڪِرٌ** (شاکر = شوکت ادا کرنے والा)

- شَاهِد** (شَاهِد = گواہی دے نے والਾ)
- شَرِيف** (شَرِيف = بੁਲਨਦ ਮਰਿਆ)
- شَفِيع** (شَفِيع = شਫ਼ਾਅਤ ਕਰਨੇ ਵਾਲਾ)
- شَفِيق** (شَفِيق = ਮੇਹਰਬਾਨ)
- شَهِير** (شَهِير = ਸ਼ੋਹਰਤ ਵਾਲਾ)
- صَابِر** (صَابِر = ਸਭ ਕਰਨੇ ਵਾਲਾ)
- صَادِق** (صَادِق = ਸਚਾ)
- ضِيَاء** (ضِيَاء = ਰੋਸ਼ਨੀ, ਚਮਕ)
- ظَاهِر** (ظَاهِر = ਪਾਕ)
- طَبِيب** (طَبِيب = ਬੀਮਾਰੋں ਕਾ ਇਲਾਜ ਕਰਨੇ ਵਾਲਾ)
- طَيِّب** (طَيِّب = ਪਾਕ)
- ظَاهِر** (ظَاهِر = ਵਾਜੇਹ ਔਰ ਰੋਸ਼ਨ)
- عَابِد** (عَابِد = ਇਕਾਦਤ ਗੁਜ਼ਾਰ)
- عَادِل** (عَادِل = ਅਦਲ ਕਰਨੇ ਵਾਲਾ)
- عَارِف** (عَارِف = ਪਹਚਾਨਨੇ ਵਾਲਾ)
- عَاقِب** (عَاقِب = ਸਥਾਨ ਵਿਖੇ ਆਖਿਰ ਮੈਂ ਆਨੇ ਵਾਲਾ, ਜਾਨਸ਼ੀਨ)
- غَزِيز** (غَزِيز = ਗੁਲਿਬ)
- عَظِيم** (عَظِيم = ਬੁਜੁਰ੍ਗੀ ਔਰ ਅੱਜਮਤ ਵਾਲਾ)
- عِمَاد** (عِمَاد = ਸੁਤੂਨ, ਕਾਬਿਲੇ ਏਤਿਮਾਦ ਸਰਦਾਰ, ਸਖ਼ਿਤਾਂ ਮੈਂ  
ਲੋਗ ਜਿਸ ਕੀ ਤਰਫ ਭਾਗ ਕਰ ਆਏ)

**غِيَاث** (गियाष = कषीर बारिश)

**فَاتِح** (फ़ातिह = खोलने वाला, शुरू करने वाला)

**فَاضِل** (फाज़िल = कामिल इल्म वाला, कषीर फ़ज़ीलत वाला)

**قَاسِمٌ** (क़ासिम = तक़्सीम करने वाला)

قمر (کُمَر = چاند)

كَامِلٌ (कामिल = मुकम्मल)

**کریم** (کریم = سخن)

**کَفِيلٌ** (کفڑیل = کفڑا لات کرنے والہ)

کُوب (کौकब = रोशन तारा)

**لَبِيبٌ** (لَبِيبٌ = اُخْرَى مَنْدَدٍ، دَانَا)

**ماجد** (माजिद = क़ाबिले एहतिराम, मोअ़्ज्ज़ज़ आदमी)

**مَامُونٌ** (मामून् = जिस के पास अमानत रखने पर ए'तिमाद हो)

مبارک (मुबारक = बाइषे बरकत, नेक, सईद)

(मुबशिर = खुश ख़बरी सुनाने वाला)

**مُبِينٌ** (मुबीन = रोशन, ज़ाहिर)

**مَتِينٌ** (مُتَّيْن = مَجْبُوتٌ)

**مُجَاهِد** (مُجَاہِد = जिहाद करने वाला)

**مُجَتَبِي** (مُعْجَاتَبَا = مُنْتَخَبَ شُدَا)

**مُجِيب** (مُجِيب = جواب دेने والा, ہاجت روا� کرنے والा)

**مَحْفُوظ** (مَحْفُوظ = وہ شیخیت جس کی حفاظت کی گई)

**مُحَمَّد** (مُحَمَّد = جس کی تاریخ کی جائے)

**مَحْمُود** (مَحْمُود = تاریخ کے کاibil)

**مُختار** (مُختار = چونا ہو، مختار)

**مُدَبِّر** (مُدَبِّر = چادر آؤڈنے والा)

**مُرْتَضٰ** (مُرْتَضٰ = بارگزیدا، بوجوگی والा)

**مُزَمِّل** (مُزَمِّل = کامل پوشن)

**مُسْتَحِبٍ** (مُسْتَحِبٍ = انتہا اٹھانے والा)

**مُسْتَقِيمٍ** (مُسْتَقِيمٍ = سیधے راستے پر چلنے والा)

**مَسْعُود** (مَسْعُود = سआدات مند)

**مَشْهُود** (مَشْهُود = گواہی دیا گयا)

**مُصْبَاح** (مُصْبَاح = چراغ)

**مُصَدِّق** (مُصَدِّق = تصدیک کرنے والा)

**مُصْطَفٰى** (مُصْطَفٰى = چونا ہو)

**مُطِيع** (مُطِيع = انتہا اٹھانے والے)

**مُظَفِّر** (مُظَفِّر = وہ ہستی جسے دشمنوں پر فتح اٹھا کی گई ہے)

**مُعَظَّم** (مُعَظَّم = بوجوگ، واجیب تر جیم)

**مُعَلِّم** (مُعَلِّم = سیخانے والा)

**مُعِین** (مُعِین = مددگار)

**مُقْصِد** (مُقْصِد = درمیانی چال چلنے والा)

**مُكَرّم** (مُكَرّم = احترم والہ)

**مُنْصِف** (مُنْصِف = انصاف کرنے والہ)

**مَنْسُور** (مَنْسُور = مدد یافتہ، نصر یافتہ)

**مُنْيَب** (مُنْيَب = ہوکم ماننے والہ)

**مُنْبِر** (مُنْبِر = روشان کرنے والہ)

**نَاسِك** (نَاسِك = ایجاد کرنے والہ)

**نَاسِر** (نَاسِر = کیسی چیز کے لپेट لئے کے با'د اسے جاہیر کرنے والہ)

**نَاصِب** (نَاصِب = دین کے احکام کو بیان کرنے والہ)

**نَاصِح** (نَاصِح = نصیحت کرنے والہ)

**نَاصِر** (نَاصِر = مدد کرنے والہ)

**نَجْم** (نَجْم = سیتارا)

**نَجِيب** (نَجِيب = اچھے نسب والہ، پسندیدا)

**نَجِيد** (نَجِيد = راہنما، ماهر)

**نَذِير** (نَذِير = ڈرانے والہ)

**نَقِيب** (نَقِيب = سردار، کफالات کرنے والہ)

**نُور** (نُور = روشنی)

**هُمَام** (هُمَام = با ارجمند بادشاہ)

وَاجِد (वाजिद = आलिम, गृनी)

وَاسِط (वासित = दरमियाना)

وَاسِع (वासिअ = कषरत से देने वाला)

وَاعِد (वाइद = वा'दा करने वाला)

وَسِيم (वसीम = हँसीन चेहरे वाला, खूब सूरत)

وَلِي (वली = **अल्लाह** का दोस्त)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلُّوا عَلَى مُحَمَّدٍ

## 25 آٹمکیاٹ کیستام عَلَيْهِ السَّلَامُ کے آجھمتوں वाले नाम

سادرुश्शरीआ, بدرुत्तरीका हजरते **अल्लामा** मौलाना मुफ्ती मुहम्मद अमजद अली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الرَّقِيْبِ लिखते हैं : हजरते आदम عَلَيْهِ السَّلَامُ से हमारे हुजूर सच्चिदे **आलम** عَلَيْهِ السَّلَامُ तक **अल्लाह** तआला ने बहुत से नबी भेजे, बा'ज़ का सरीह ज़िक्र कुरआने मजीद में है और बा'ज़ का नहीं ।

(बहारे शरीअत, 1/48)

مُحَمَّد (मुहम्मद = जिस की बहुत ता'रीफ़ की जाए)

آدم (आदम = मिट्टी से पैदा होने वाले)

إِبْرَاهِيم (इब्राहीम = मेहरबान बाप)

إِدْرِيس (इदरीस = दर्स देने वाला)

إِسْحَاق (इस्हाक = बहुत मुस्कुराने वाला)

إِسْمَاعِيل (इस्माईल = **अल्लाह** तआला की इताअत करने वाला)

إِلْيَاس (इल्यास = न भागने वाला बहादुर शख्स)

- ابیوب (अब्यूब = फ़रमां बरदार)
- دaniel (दानियाल = फैसलए इलाही)
- داود (दावूद = महबूबे इलाही)
- ذوالکفل (ज़ुलकफ़ل = ज़िम्मा लेने वाला)
- زَكَرِيَا (ज़करिया = **الْبَلَاغ** का ज़िक्र करने वाला)
- سُلَيْمَان (सुलैमान = बे ऐब शख्स)
- شَعِيب (शोएब = छोटी जमाअत)
- صالح (सालेह = नेक, बा अ़मल)
- عَزِيز (उज़ैर = मददगार)
- عِيسَى (ईसा = शरीफुन्फ़स)
- لُوط (लूٹ = दिली महब्बत, छुपा हुवा)
- مُوسَى (मूसा = वोह बच्चा जिसे दरख़्त और पानी के दरमियान डाला गया हो क्यूंकि किंबती ज़बान में पानी को “मू” और दरख़्त को “सा” कहते हैं)
- نُوح (नूह = खाँफे खुदा से بکھरत रोने वाला)
- هارون (हारून = हर दिल अज़ीज़ और महबूब)
- فُود (हूद = तौबा कर के हक़ की तरफ़ रुजूअ़ करने वाला)
- يَحْيَى (यह्या = ज़िन्दगी वाला)
- يَعْقُوب (याकूब = तआकुब करने वाला)
- يُوسُف (यूसुफ़ = निहायत ख़ूब सूरत)
- يُونُس (यूनुस = उन्स वाले, मछली वाले)

صَلَوٰةٌ عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّدٍ

## شاہِ اనام صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰیہِ وَاللہِ وَسَلَّمَ کے ۳ شاہزادوں کے مُبارک نام

قاسِم (کَاسِم = تکسیم کرنے والا)

عبدالله (ابدُلَّاہ = اَبْدُلَّاہ کا بندा)

ابراهیم (ابرَاهِیم = مہربان بابا)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّدٍ

## شراکرے ماریگا کے ۵ نواریوں کے مُکَدّس نام

عبدالله (ابدُلَّاہ = اَبْدُلَّاہ کا بندा)

حسَن (هَسَن = اچھا)

حسَین (هَسَيْن = خوب سُورت)

مُحسِن (مَوْهَسِن = بخوبی کرنے والا)

علی (اَلَّی = بولند)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّدٍ

## ڈاشارٹ مُباشرہ

(�ا' نی جنات کی خوشبوی بیشتر پانے والے دس سہا بائی کیرام)

## کے پ्यارے پ्यارے نام

ابو بُکر (ابو بُکر = اب و لفیحیت والے یا' نی افسوس لیتھیت والے)

عُمر (عُمر = زندگی)

عثمان (عثمان = کوشش کرنے والा)

علی (علی = بولند)

طلحہ (طلحہ = خالی پست)

زبیر (زبیر = تاکتک)

عبد الرحمن (عبد الرحمن = بہت مہربانی کرنے والے کا بندہ)

سعد (سعد = خوش نسب)

سعید (سعید = مبارک)

ابو عییدہ (ابو عییدہ = چوٹی کنیج والہ)

صلواتُ اللہِ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖہ وَسَلَّمَ!

## راہب اور کرام کے 135 پاکیزہ نام

آخرم (آخرم = وہ ٹیلا جو کسی نشوب میں ڈھرتا ہے)

ازہر (ازہر = چمکدار و ساف رنگ والہ)

اسد (اسد = شور)

اسعد (اسعد = بہت کامیاب)

اسلم (اسلم = جیسا دا سلامتی والہ)

اسپید (اسپید = چوٹا شور)

اشرف (اشرف = جیسا دا شرافت والہ)

- آنس** (انس = جس سے ٹنس ہاسیل کیا جاتا ہو، ٹلپٹ، سوکونے کلب)
- آنیس** (آنیس = مانوس، ٹنسیت (یا' نی مہبعت) دے نے والा)
- بدر** (بدر = چوہدھری رات کا مुکتمل چاند)
- بلال** (بلال = پانی، ہر وہ چیز جس سے ہلکھلے کو تار کیا جائے)
- ثابت** (ثابت = مُسْتَكِيل میجاہ)
- شمامہ** (شمامہ = بھری شاخوں والा اک پاؤدا)
- ثوبان** (ثوبان = توبہ کرنے والा)
- جابر** (جابر = جوڑ والा)
- جعیر** (جعیر = جباردست)
- جعفر** (جعفر = بہت وسیع نہر)
- حابس** (حابس = روکنے والा)
- حاتم** (حاتم = بولند ہوسلا، سخھی، فسلا کرنے والा)
- حاجب** (حاجب = ہیفا جھٹ کرنے والा)
- حارت** (حارت = کمانے والा)
- حازم** (حازم = دور انداز، تے� نجیر والा)
- حاطب** (حاطب = درخٹ کاٹ کر لکھیاں جمیں کرنے والा)
- حباب** (حباب = مہبوب، دوست)
- حجان** (حجان = نورانی چہرے والा)
- حذیفہ** (حذیفہ = بے اے ب)

**حُرْ** (ہُر = خالیس، ہر کیس کی آمیزش سے پاک، آجڑا، شاریف)

**حَسَانٌ** (ہسپان = بہت ہسپانیوں جمیل)

**حَكِيمٌ** (ہکیم = دانا، تبیب، ہوشیار)

**حَمَادٌ** (ہمماڈ = بہت جیسا تاریخ کرنے والा)

**حُمَرَانٌ** (ہومران = سुखنے والے)

**حَمْزَه** (ہمزا = شر)

**حُمَيْدٌ** (ہومید = بوجوگ)

**حَنْظَلَة** (ہنچلا = اک دارخٹ کا نام)

**حُنَيْفٌ** (ہونف = شر سے خیر کی تاریخ مایل ہونے والے، سیधا جس میں کوئی تدبیح نہ ہے)

**خَالِدٌ** (خالید = دیرپا)

**خَبَابٌ** (خباہ = تےج تےج چلنے والے)

**خُبِيبٌ** (خوبیب = گھرا گدھا)

**خُفَافٌ** (خوفاٹ = ہوشیار و جھین)

**خَلَادٌ** (خلالاڈ = مکان میں تبیل اسرائیل ایکاٹ ایکھیاڑ کرنے والے)

**دَارِمٌ** (دارم = جس کی ہڈی کو گوشت نے ڈک دیا ہے)

**دَيْلَمٌ** (دلیم = معاشر مالا فہم اور بسیرت رکھنے والے شاخ)

**ذَابِلٌ** (ذابل = دلبلا پتلا)

**ذَكُورَانٌ** (ذکوان = ہوشیار اور جھین)

**رَاشِدٌ** (راشید = ہدایت یافتہ)

- زارع** (ज़ारे अ = काश्तकार)
- زاهر** (ज़ाहिर = रोशन)
- زبیر** (ज़ुबैर = जानदार, ताक़तवर आदमी)
- زياد** (ज़ियाद = इज़ाफ़ा, बढ़ोतरी, कषरत)
- زيد** (ज़ैद = इज़ाफ़ा, बढ़ोतरी, कषरत)
- ساريہ** (सारिया = रात में चलने वाला)
- سالف** (सालिफ़ = फ़ज़्लो कमाल या उम्र में बढ़ा हुवा)
- سالم** (सालिम = आफ़त व अमराज़ से चुटकारा पाने वाला)
- سائب** (साइब = खुले दिल से सख़ावत करने वाला)
- سفیان** (सुफ़्यान = जल्दी परवाज़ करने वाला)
- سلمان** (سَلْمَان = فَرِمان بَردار, हर ऐब से पाक)
- سلیم** (سُلَيْمَ = बे ऐब, सहीह व सालिम, साफ़ सुथरा, आफ़त से बचा हुवा)
- سمّاک** (سِمَاك = بुलन्द चीज़)
- سمّعان** (سَمْعَان = मुतीअ व फ़रमां बरदार)
- سمیر** (سُمَيْر = रात को साथी से बातें करने वाला, क़िस्सा कहानी कहना)
- سنان** (سِنَان = नेज़ा)
- سہل** (سَهْل = नर्म मिज़ाज, آسान)
- سُھیل** (سُھَلَ = नर्म बरताव करने वाला)
- سیف** (سَفْ = तल्वार)

**شَجَاعٌ** (شُجَاعٌ = بہادر)

**شَدَادٌ** (شَدَادٌ = بہوت کوئی رکھنے والा بہادر شاخ)

**شُرِيحٌ** (شُرِيحٌ = گوشت کے پتلے ٹوکڈے کرنے والा، مہفوظ،  
جس کا سینا خوکل دیا گया ہو، واجہ)

**شَرِيكٌ** (شَرِيكٌ = ہمیشہ)

**شَمْعُونٌ** (شَمْعُونٌ = موتی اور فرمائی باردار)

**شَيْبَانٌ** (شَيْبَانٌ = سफید، ٹنڈا، برف)

**صُبَيْحٌ** (صُبَيْحٌ = روشن چہرے والा)

**صَفْوانٌ** (صَفْوانٌ = چیکنا پستھر، چیکنی چٹاں)

**ضَمْضَمٌ** (ضَمْضَمٌ = دلائر)

**طَارِقٌ** (طَارِقٌ = روشن سیتارا)

**طُفَيْلٌ** (طُفَيْلٌ = وسیلہ)

**ظُهَيرٌ** (ظُهَيرٌ = مددگار)

**عَاصِمٌ** (عَاصِمٌ = مuhanafiq، بچانے والा)

**عَاقِلٌ** (عَاقِلٌ = اکل والہ، هوشیار)

**عَبَادٌ** (عَبَادٌ = بندہ، ڈبادت گujar)

**عَبَاسٌ** (عَبَاسٌ = وہ شیر جسے دेख کر دوسرے شیر بھاگ جاتے ہوں)

**عَنِيقٌ** (عَنِيقٌ = شاریف، آجڑا)

**عُرُوهٌ** (عُرُوهٌ = شیر، کابیلے اُتیماں)

**عَفَانٌ** (عَفَانٌ = بہوت زیادا پاک دامن)

- عَقِيلٌ** (उँकैल = दाना, ज़हीन आदमी)
- عَمَارٌ** (अँम्मार = तहम्मुल मिज़ाज, बा वक़ार)
- عَمِيرٌ** (उँमैर = लबरैज़)
- غَسَانٌ** (गँस्सान = दिल की गहराई)
- فَضِيلٌ** (फुज़ैल = फ़ज़ीलत वाला)
- قَارِبٌ** (क़ारिब = छोटी कश्ती)
- قَتَادَهُ** (क़तादा = एक दरख़्त)
- قُطْبَهُ** (कुतूबा = सरदार)
- كَثِيرٌ** (कषीर = बहुत, वाफ़िर, ज़ियादा)
- كَوْكَبٌ** (कौकब = रोशन सितारा, कौम का सरदार)
- كَهْمَسٌ** (कहमस = शेर)
- لَاحِبٌ** (लाहिब = खुला और वाज़ेह रास्ता)
- لَاحِقٌ** (लाहिक = मिलने वाला)
- لَبِيدٌ** (लबीद = मकान में क़ियाम करने वाला)
- لُقْمانٌ** (लुक़मान = बड़ा दाना आदमी, निहायत तजरिबा कार आदमी)
- مَاتِعٌ** (मातेअ = बहुत उम्दा चीज़)
- مَازِنٌ** (माज़िन = बारिश बरसाने वाला बादल)
- مَالِكٌ** (मालिक = मिल्क्यत रखने वाला)
- مِدْلَاجٌ** (मिदलाज = जो रात में चलने या सफ़र करने का आदी हो)

**مَرْزُوقٌ** (مرزاک = خوشحال)

**مَسْعُودٌ** (مسعود = خوش نسبی، کامیاب)

**مُصْعِبٌ** (مصعب = برداشت کرنے والا)

**مُطَرِّفٌ** (مترف = کینارے والا)

**مَظَاهِرٌ** (مظہر = مञ्ज़र، شکل، ج़ाہیر होने का مकाम)

**مُعَاذٌ** (معاذ = پناہ کی جگہ)

**مُعَاوِيَةٌ** (معاویہ = آواجُ خینچنے والا)

**مَعْقَلٌ** (ماکل = پناہگاہ)

**مُعْوَذٌ** (معوذ = پناہ کی دुआ دے نے والा)

**مُغِيثٌ** (مغیث = فریاد سوننے والا)

**مِقْدَادٌ** (مقداد = اک چیز کو دو ہیسٹوں مें تکسیم کرنے والा)

**مِقْدَامٌ** (مقدام = بہادور، لڈائی مें سب سے آगے رہنے والा)

**مَكْحُولٌ** (مکھول = جیس کی آنکھों مें سुर्पا لگا हो)

**مُنِيبٌ** (منیب = خود کی ترک رنجूअ کرنے والा)

**مُنْدِرٌ** (مندر = ڈرانے والा)

**مُنْكَدِرٌ** (منکدر = جھپٹنے والा)

**مِنْهَالٌ** (منہال = انٹیہاری ساخی)

**مُؤْنِسٌ** (مؤنس = دوست، گم�وار)

**مَيْمُونٌ** (میمون = بارکت، خوش بخشن)

- ناعِم** (ناؤم = خुشہاں جیٽنگی بسرا کرنے والा)
- نافع** (نافع = نفڑھ دے نے والा)
- نصیب** (نسیب = ہیسسا)
- نعمان** (نومان = نے' مत پانے والा)
- نُعیم** (نۇعىم = ساھیب نے' مات)
- نَوْفَل** (ناؤفَل = فُلّیا ج، سخی، داریا دیل)
- واسع** (واسع = وسعت دے نے والा)
- وَقِدْ** (واکید = آگ روشن کرنے والा)
- وَائِل** (واڈل = پناہ میں آنے والा)
- هَلَال** (ھلال = پہلی تاریخ کا چاند)
- يَا سِر** (یاسیر = آسانی و نمری)
- يَامِين** (یامین = با برکت)
- يَسَار** (یسار = دللت مند، امیر کبیر)
- يَمَان** (یمان = برکت والा)

صَلَوَاتُ اللَّهِ عَلَى الْحَمِيدِ ! صَلَوَاتُ اللَّهِ عَالَى مُحَمَّدٍ

### بُوچُوراً نی دین رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى کے 27 مُبَارک نام

(ارسلان - شر | هجڑتے ساییدونا مُہمّد بین ارسلان  
 میسری عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَدِیْرِ کے والید جو خود بھی بہت بडے بُوچُوراً�ے،  
 مجاڑے مُبَارک میسر میں ہے)

(तकिय्यी - परहेज़गार। आ'ला हज़रत के दादा के सगे भाई इमामुल उल्लामा मौलाना तकी अली ख़ान (عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ)

(जमाल - हुस्न। आ'ला हज़रत के ख़लीफ़ा शैख़ मुहम्मद जमाल (عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ) जो अरब के बाशिन्दे थे)

(जुनैद - छोटा लश्कर। मशहूर वलियुल्लाह हज़रते सय्यिदुना जुनैद बग़दादी (عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ)

(जीवन - ज़िन्दगी, हयात, वुजूद। नूरुल अन्वार और तफ़्सीराते अहमदिय्या के मुसनिफ़ जो मुल्ला जीवन के नाम से मशहूर हैं, अस्ल नाम शैख़ अहमद बिन अबी सईद (عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ) है)

(हाकिम - सरदार। हडीष की मशहूर किताब अल मुस्तदरक अलस्सहीहैन के मुअल्लिफ़ हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह (عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ) जो इमाम हाकिम के नाम से मशहूर हैं)

(हशमत - बुजुर्गी, शानो शौकत। शेर बेशए अहले सुन्नत मौलाना हशमत अली ख़ान (عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ)

(ख़लील - सच्चा दोस्त। मशहूर सुन्नी अलिम ख़लीले मिल्लत मुफ़्ती मुहम्मद ख़लील ख़ान बरकाती (عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ)

(दीदार - जल्वा, नज़ारा। ख़लीफ़ए आ'ला हज़रत मौलाना सय्यिद मुहम्मद दीदार अली शाह अल्वरी (عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ)

(रज़ीन - बा वक़ार, बुर्दबार, सन्जीदा। जलीलुल क़द्र मुह़द्दिष हाफ़िज़ रज़ीन अब्दरी (عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ)

(रैहान - गुलाब के इलावा तमाम फूलों को रैहान कहते हैं। रैहाने मिल्लत मौलाना मुहम्मद रैहान रज़ा ख़ान (عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ)

(ज़मील - रदीफ़, पिछला सुवार। ताबेर्ई बुजुर्ग हज़रते सच्चिदुना  
ज़मील बिन अब्बास (رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ))

(सरफ़राज़ = मुअ़ज्ज़ज़। ख़लीफ़ए आ'ला हज़रत मौलाना  
सरफ़राज़ अहमद (رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ))

(शरीफ़ = बुजुर्ग, आली ख़ानदान। ख़लीफ़ए आ'ला हज़रत  
मौलाना मुहम्मद शरीफ़ कोटलवी (عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِيُّ))

(शहबाज़ = शाहीन। मशहूर सूफ़ी बुजुर्ग शहबाज़ क़लन्दर (رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ))

(अ़दनान = हज़रते सच्चिदुना इस्माईल عَلَيْهِ السَّلَامُ की अवलाद  
में से हमारे नबी صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ के जद्दे आ'ला का नाम)

(इरफ़ान = शनाख़त, पहचान। ख़लीफ़ए आ'ला हज़रत मौलाना  
इरफ़ान अहमद बैसलपूरी (عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِيُّ))

(अ़ता = बख़िशाश, इन्धाम। मशहूर ताबेर्ई बुजुर्ग हज़रते सच्चिदुना  
अ़ता बिन यसार (عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْعَفَّارُ))

(अ़कील = दाना, ज़की। शाम के एक बा करामत वलिय्युल्लाह  
हज़रते सच्चिदुना अ़कील (رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ))

(इमरान = हज़रते सच्चिदुना ईसा عَلَيْهِ السَّلَامُ के नाना का नाम)

(ज़फ़र = कामयाबी। ख़लीफ़ए आ'ला हज़रत मलिकुल उ़-लमा  
हज़रते अ़ल्लामा मौलाना ज़फ़रुद्दीन क़ादिरी रज़वी (عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِيُّ))

(मुजाहिद = अ़ल्लाहू ग़र्बूज़ عَزَّوَجَلَّ की राह में लड़ने वाला। मशहूर  
ताबेर्ई बुजुर्ग हज़रते सच्चिदुना इमाम मुजाहिद (عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَاحِدُ))

(मा'रूफ़ = मशहूर वलिय्युल्लाह हज़रते सच्चिदुना मा'रूफ़  
करख़ी (عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِيُّ))

(नकी = पाक, साफ़, खालिस । आ'ला हज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِ के वालिद मौलाना नकी अली खान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّبِّ)

(हाशिम = रोटियों के छोटे छोटे टुकड़े करने वाला । सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ के पर दादा हाशिम बिन अब्दे मनाफ़ जिन का अस्ली नाम अम्र था)

(वारिष = मददगार, हिमायती । मशहूर सूफी बुजुर्ग हज़रते सय्यिदुना वारिष शाह رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِ)

(वहब = अत्ता व बख्शाश । हमारे नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ के नाना का नाम)

### صَلُّواعَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَى مُحَمَّدٍ निख्बतों वाले 8 मुतपर्फिक् नाम

(आसफ़ = हज़रते सय्यिदुना सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَامُ के वज़ीर का नाम, मजाज़न हर लाइक वज़ीर)

(उहुद = एक आशिके रसूल पहाड़ का नाम)

(अच्याज़ = महमूद बादशाह के एक ज़हीन और नेक गुलाम का नाम)

(हुनैन = सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ के एक गुलाम का नाम, मक्कए मुअज्ज़मा और ताहफ़ के दरमियान एक वादी का नाम जहां ग़ज़बए हुनैन वाकेअ हुवा)

(ज़ुल फ़िक़ार = मोहरों वाली तल्वार । हज़रते सय्यिदुना अलियुल मुर्तज़ा كَرَمُ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهُهُ الْكَرِيمُ की तल्वार का नाम)

(रमज़ान = हिजरी साल का नवां महीना, नुज़ूले कुरआन का महीना)

(रथ्यान = जन्त के एक दरवाज़े का नाम जिस में से रोज़ादार दाखिल होंगे)

(अरफ़ात = मक्कए पाक में वाकेअ एक मैदान जहां हाजी 9 जुल हिज्जा को वुकूफ़ करते हैं)

**بच्चियों کے لिये 150 प्यारे प्यारे نام  
سارکरे مदीनا ﷺ کی अमीर जान**

**कव मुबारक نाम**

**آمِنہ** (आमिना = مُتَمَّن और बे खौफ़)

**رसूले बे मिषाल, बीबी आमिना के लाल  
करी رजाई माडों (या' नी जिन्हों  
ने سارकर ﷺ करो दूध पिलाया था)  
के मुबारक नाम (۱)**

**امِ این** (उम्मे ऐमन = बरकत व कुब्वत वाली, इन का अस्ल  
नाम बरकत था)

**ثُوبیه** (षुवैबा = रुजूअ़ करने वाली, लौटने वाली)

**حَلِيمَة** (हलीमा = बुर्दबार, मुतहम्मिल मिजाज खातून)

**11 उम्मुहातुल मोअमिनीن** رضي الله تعالى عنهم **के मुक़द्दस नाम**

**خَدِيجَة** (ख़दीजा = वक्त से पहले पैदा होने वाली बच्ची)

**سُودَه** (सौदा = सियाह रंगत वाली)

**عائِشَه** (आइशा = खुशहाल)

**حَفْصَه** (हफ्सा = खूब सूरत)

**أُم سَلَمَه** (उम्मे सलमा = ए'तिराफ़ करने वाली की मां)

**أُم حَبِيبَه** (उम्मे हबीबा = महबूब हस्ती की मां)

**1.....** ساییدे اُالمام ﷺ کو جیتنی بیبیوں نے دूध  
پیلایا سبِّ اسلام لای ।

(السیرة الحلبية، ۱، فتاوى ضوابط، ۲۹۶/۳۰)

**زَيْب** (जैनब <sup>(1)</sup> = एक हँसीन खुशबूदार पौदा)

**زَيْب** (जैनब <sup>(2)</sup> = एक हँसीन खुशबूदार पौदा)

**مَيْمُونَةٌ** (मैमूना = बरकत वाली)

**جُوَيْرِيَّةٍ** (जुवैरिया = छोटी लड़की)

**صَفِيَّةٍ** (सफिया = चुनी हुई)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلُّوا عَلَى مُحَمَّدٍ!

سَرَّكَارَةِ مَدْرَيْنَا كी 4 شَاهِجَادِيَّوْنَ کے مُبَاہِرَک نَام

**زَيْب** (जैनब = एक हँसीन महक दार पौदा)

**رُقِيَّةٍ** (रुक्क्या = तरक्की करने वाली)

**أُمُّ كُلُوم** (उम्मे कुलषूम = पुरगोश्त चेहरे वाली की मां)

**فَاطِمَةٍ** (फ़ातिमा = आतशे जहन्म से छुड़ाने वाली)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلُّوا عَلَى مُحَمَّدٍ!

سَرَّكَارَةِ مَدْرَيْنَا کی 3 مُوکَد्दس کنیجوں کے نَام

**مَارِيَّةٍ** (मारिया = गोरी और चमक दमक वाली)

**رَيْحَانَةٍ** (रैहाना = एक खुशबूदार पौदा)

**نَفِيْسَةٍ** (नफीसा = पाक व साफ़्)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلُّوا عَلَى مُحَمَّدٍ!

دینے

1 .... بਿਨ੍ਤੇ ਜਹੂਸ | 2 .... ਬਿਨ੍ਤੇ ਖੁਜੈਮਾ

رَسُولُ اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰیہِ وَآلِہٖ وَسَلَّمَ کی 4 نَوَافِیْسِیَّوں کے نَام

أُمَّامَة (عَمَّامَة = اِرَادَة کرنے والی)

رُقَيْه (رُقَيْه = تَرَكْبَتی کرنے والی)

أُمُّ کُلْثُوم (عَمَّمَهُ کُلْثُوم = پُرَغَوْشَتَهُ چَهَرَهُ والی کی مان)

زَيْب (زَيْب = اک ہَسَنَ مَهَکَ دَارَ پَوَادَهَ)

صَلَوٰۃُ عَلٰی الْحَمِیْبِ! صَلَوٰۃُ عَلٰی مُحَمَّدٍ

59 سَاهِبِیَّاتِ کے نَام

آسِیَہ (آسِیَہ = سُوتُون)

اُنْیَلَه (اُنْیَلَه = شَرَفُ اور بُوچُوری والی)

أَرْوَى (اَرْوَى = ہَسَنَوْ جَمِیْلَهَ)

أَسْمَاء (اسْمَاء = نِیْشَانِی، اَلَامَاتِ)

أُمِیْمَه (عَمِیْمَه = پَثَثَرَ)

أُمَّیَہ (عَمَّیَہ = چُوٹی سی کَنَیْجَه)

أَنْیَسَہ (اَنْیَسَہ = رَهْنُ مَارِی کرنے والی، مَهَرَبَانَی کرنے والی)

أَیْمَن (اَیْمَن = سَدِیَہ، دَاهِنَی)

بَرِیْرَہ (بَرِیْرَہ = اک دَرَخْتَ کا فَل)

بُسْرَہ (بُسْرَہ = کُنْپَل)

بَشِیرَہ (بَشِیرَہ = خُوش خَبَرَی دَنَے والی)

**بُهیہ** (بُھوٰی = جممال)

**جمیلہ** (جَمِیلًا = حُسْنَی، خُوبِ سُورت)

**حَبِیبہ** (حَبِیْبًا = پ्यारी)

**حَرْمَلہ** (حَرْمَلًا = چوٹی پوشاک)

**حَسَنہ** (حَسَنًا = نے' مत)

**حَکِیمہ** (حَکِیْمًا = اُکُلِمَنْدِ خَاتُون)

**حَمْنَہ** (حَمَنَا = تَابِعُوں کی اُنگُروں کی ایک کِسْم جو سیاہ  
سُرخیں مایل ہوتے ہیں)

**خالِدہ** (خَالِدًا = دُر تک رہنے والی)

**خَوْلَہ** (خَوْلًا = ہیرنی، خُوبِ سُورت)

**خَیْرَہ** (خَيْرًا = آ'لا اور مُمْتَازِ خَاتُون)

**ذَفَرَہ** (ذَفَرًا = کشیر نبَاتات والہ خُوشانُما باغ)

**رَبَاب** (رَبَاب = سَفَدِ بَادَل)

**رُزَيْنَہ** (رُزْيَنَا = اُکُلِمَنْد اور پارسا خَاتُون)

**رُفِیدہ** (رُفِیدًا = مددگار خَاتُون، اُتیٰی)

**رُقَیْقَہ** (رُقَیْقًا = نرمِ دل)

**رَمَلَہ** (رَمَلًا = جَمِین کا بُولِنْدِ ہیسسا)

**رُمیشہ** (رُمیشًا = جَرَبِیْجِ جَمِین)

**رُمیصاء** (رُمیصَاء = اک سیتاڑے کا نام)

**زُرَیْنَہ** (زُرَئِنَا = سُنْہری)

- سائزہ** (سایرا = سیر کرنے والی)
- سبیعہ** (سوبیعہ = سات)
- سراء** (سراء = خوشحالی، ڈمدا جنمیں)
- سعدی** (سو'دا = مubarak، خوش بخوبی)
- سعیدہ** (سوسیدہ = خوش بخوبی خاتون)
- سکینہ** (سُکِینَة = وکار، تمنانیت، سُکُون)
- سلمنی** (سلمنی = آفتاب وگری سے محفوظ، نجات پانے والی)
- سمیہ** (سمیہ = اعلامت)
- سُبُل** (سُبُل = اک کیسم کی خوشبو دار گھاس)
- سیما** (سیما = نیشان والی، اعلامت والی)
- شفاء** (شیفڑا = تندروست، سیحہ)
- عاتیکہ** (عاتیکہ = بہت خوشبو ملنے والی)
- غفراء** (غفراء = کم رفتار)
- عقلیہ** (عقلیہ = اکٹل والی، سمجھدار)
- عطیہ** (عطیہ = انعام دی ہری چیز)
- فارعہ** (فارعہ = لامبے بالوں والی)
- قرصافہ** (کیرسا فرا = تے� رفتار چیز، بھونے والی چیز)
- فریعہ** (فریعہ = توبیل کڈ والی، لامبے بالوں والی، پھاڈ کا بولند حصہ)
- قرۃ العین** (کورتول ائن = انخوں کی ٹنڈک )

- کبشہ** (کبشا = ہی فاجت کا کام ان جام دے نے والی)
- کریمہ** (کریما = مُعْجَزٌ خَاتُون)
- لُبَابِه** (لُبَابَا = ہر چیز کا خالیس اور بہترین ہی سسا)
- لُبْنی** (لُبَنَا = خُلُبُودار، خُلُب سُورت خَاتُون)
- مُطِیعہ** (مُتَّرِیَّا = فرمان باردار خَاتُون)
- مُعاذہ** (مُعَاذَا = پناہ گاہ)
- مُلِیکہ** (مُلَائِکَا = ملیکا)
- نَسِیْہ** (نَسَبَا = ہسبو نسب میں مشہور شریف خَاتُون)
- هُجَيْمَه** (هُجَيْمَا = مشکیج کا دوچ جو ابھی پورا ن جما ہو، موتی)
- یُسَرِّہ** (یُسَرِّا = آسان، سیدھی)

صَلَوَاتُ اللَّهِ عَلَى الْحَمِيدِ! صَلَوَاتُ اللَّهِ عَلَى مُحَمَّدِ

## 49 دیوار بُرُوجُور خواتین کے نام

**آنیقہ** (آنیکا = خوش آئند، خوب । اک کول کے معتابیک  
ہجرتے ساییدونا ان سے رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی والیدا مہاجرتے  
تمے سولیم انساریہ کا نام مبارک)

**بُرْدَہ** (بُرْدَہ = کنیج، باندی، اک تا برد بُرُوجُور ہجرتے ساییدونا  
جا' فر بین بُرکان رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی والیدا کا نام)

**بلفیس** (بلفیس = ملیکا سبا کا نام، اسلام کبول  
کرنے کے با'd ہجرتے ساییدونا سولیمان علیہ السلام کی جاؤزا بُری)

**تَحِيَّہ** (تحییہ = سلام، سلامی، تحییہ بینتے سلامان،  
اُلیما خَاتُون جنہیں لاخ سے جا اید اہمادیہ یاد ہیں)

**جَبْلَه** (जबला = کیم کی سردار, اُلیما, شابیت کردم, اک تا بے ای بُرُوج هِ جُرَّاتے ساییدُ دُنَا سَفَرْہ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ کی بُتی کا نام)

**حَنِيفَه** (ہنیفہ = مژہبی اُکریدے کی پُرخٹا, دین مें سच्ची। “بی بی ہنیفہ” نبیں سدی ہیجری کی شوہر اُفراک, اُلیما, مُہدِیسا, جن کو امام جلال الدین سعیدتی عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ أَنْوَری نے اپنے شیوخ مें شومار کیا ہے)

**حَمَادَه** (ہمادہ = ہمد کرنے والی, شُوك کرنے والی, هِ جُرَّاتے ساییدُ دُنَا امام مالیک رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ کی بُتی کا نام)

**حَوَّاء** (ہووا = جِندگی, هِ جُرَّاتے ساییدُ دُنَا آدم عَلَيْهِ السَّلَامُ کی جُو جے مُہتارما کا نام)

**رَابِعَه** (رabi'ah = چوथی, شافعیت کرنے والی, ریضا ایلہا پر راجی رہنے والی। اک مسحور والی خاتون هِ جُرَّاتے ساییدُ دُنَا رابیا بس ریسا) (رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہا)

**رَئِيسَه** (ریسہ = داؤلت مند। راویہ ایلہیش جن سے هِ جُرَّاتے ساییدُ دُنَا سا'د بین اُلیی جُنْجَانی شافعیہ رَحْمَةُ اللَّهِ أَنْوَری ریوایت کرتے ہیں)

**رُبْدَه** (جُوبدا = کسی چیز کا بہترین ہیسپا, بارگویڈا, مسحور بُرُوج هِ جُرَّاتے ساییدُ دُنَا بیشار ہافی رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ کی بہن کا نام)

**رَجْلَه** (جُ JL = لोگوں کی آواج, شُور, جُ JL بینتے مُنْجُور هِ جُرَّاتے ساییدُ دُنَا مُعاویہ رَضِیَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْہُ کی آجا د کردا کنیج کا نام)

**رِیْت** (جُنیت = خُوب سُورتی, سجادہ, راویہ ایلہیش هِ جُرَّاتے ساییدُ دُنَا جُنیت بینتے ابی تُلائے) (رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہا)

**سَارَه** (سارہ = سردار, شاریف, مُعْجَزَج, هِ جُرَّاتے ساییدُ دُنَا ابراہیم رَضِیَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْہُ کی جُو جے مُہتارما کا نام)

**سَارِيَه** (ساریہ = رات مें चलने वाली, हज़रते आइशा رضي الله تعالى عنها की सहेली थीं)

**سِدْرَه** (سیدرہ = बैरी का दरख़्त, हज़रते सय्यिदुना उमर ف़ारूक की बहू का नाम)

**سَفَيْنَه** (سفینہ = नाव, कश्ती, रावियए हृदीष हज़रते सफ़ीना बिन्ते शैबा رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہا)

**سُكِينَه** (سکینہ = सुकून, इत्मीनान, हज़रते सय्यिदतुना सुकैना बिन्ते हुसैन رضي الله تعالى عنها)

**سَكِينَه** (سکینہ = सुकून, इत्मीनान, मशहور سन्दूक “ताबूते सकीना” का नाम जिस का ज़िक्र कुरआने पाक में भी है, इस सन्दूक में मुक़द्दस तबरुकात मौजूद थे और इस के तुफ़ेल बनी इसराईल को फुतूहात हासिल होती थीं)

**سَنِيَّه** (سنیہ = रोशन, बुलन्द रूत्बा, ख़ूब सूरत । हज़रते सय्यिदतुना उम्मे ख़ालिद رضي الله تعالى عنها का लक़ब जो हुज़रे अकरम صَلَّى اللہُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّمَ نे इन्हें एक हुल्ला पहना कर अ़ता फ़रमाया था)

**شَمْسَه** (شمسہ = रोशनदान । एक ताबेइ़या ख़ातून رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہا जो हज़रते सय्यिदुना हसन बिन अ़ली رضي الله تعالى عنها के हाथ पर इस्लाम लाई)

**سُوَيْدَه** (سوئیدہ = सरदार, सानूली, सहाबिये रसूल हज़रते सय्यिदुना जाविर رضي الله تعالى عنه की बेटी का नाम)

**شَعْوَانَه** (شاونہ = घने बिखरे हुवे बाल, एक बुजुर्ग ख़ातून رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہا का नाम)

**صُغْرَه** ( صغیرہ = छोटी । इमामे आली मक़ाम इमामे हुसैन رضي الله تعالى عنها की साहिबज़ादी का नाम)

**صَفُورَه** (صفورہ = हज़रते सय्यिदुना शोऐب کी बेटी और हज़रते सय्यिदुना مूसा علیہ السلام की ज़ौजा का नाम)

**طافियہ** (ताफ़िया = खोशए अंगूर में नुमायां और उभरा हुवा दाना, एक आबिदा खातून رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهَا का नाम)

**طَيِّبَة** (तथ्यिबा = उम्दा, पाक। हज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अशअरी رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ की वालिदए मोहतरमा का नाम तथ्यिबा बिन्ते वहब رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا था)

**عَلِيٰكَه** (आतिका = शरीफ़ औरत, खुशबूदार, क़बीलए बनी सुलैम से तअल्लुक़ रखने वाली तीन पाकीज़ा बीबियों के नाम जिन्हों ने सरकारे मदीना صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ को बचपन में दूध पिलाने की सआदत हासिल की थी)

**عَاطِفَة** (आतिफ़ा = मेहरबानी करने वाली। हज़रते सय्यिदुना जुनून मिस्री عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ التَّقِيُّ की बहन जो कि निहायत साबिरा, ज़ाहिदा, और इबादत गुज़ार खातून थीं)

**عَالِيه** (आलिया = हर चीज़ का बुलन्द हिस्सा, हज़रते सय्यिदुना अब्दुल मुत्तलिब رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ की पोती का नाम)

**عُبْدَه** (अब्दा = बन्दी, हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ की पोती का नाम)

**عَجْرَدَه** (अजरदा = तेज़ व सख्त, हल्की फुलकी, बसरा की एक इबादत गुज़ार खातून رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهَا का नाम)

**عَزِيزَه** (अजीजा = महबूब, क़रीबी रिश्तेदार, दोस्त। रावियए हृदीष हज़रते सय्यिदतुना अजीजा رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهَا)

**غُرِيبَه** (गुज़िय्या (गृज़िय्या = इरादा करने वाली, हज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ की बेटी का नाम)

**عَالِيه** (आलिया = बुलन्द, बुजुर्ग। रावियए हृदीष हज़रते सय्यिदतुना आलिया बिन्ते ऐफ़अ़ बिन शराहील رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا, ये हज़रते सय्यिदतुना आइशा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا से रिवायत करती हैं)

**فَسِيلَه** (फ़सीला = खजूर की क़लम, हज़रते सय्यिदुना वाषिला बिन अस्क़अُبُر رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ की बेटी का नाम)

**قُرَيْبَه** (कुरैबा = क़राबत वाली, खुशनूदी हासिल करने वाली, हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ की पोती का नाम) **مَاجِدَه** (माजिदा = क़विले ता'ज़ीम, सख़ी, बहुत उम्दा, क़बीलए कुरैश से तअल्लुक रखने वाली एक इबादत गुज़ार ख़ातून)

**مَرْجَانَه** (मर्जाना = मूंगा, मोती, एक सब्ज़ी का नाम, हज़रते सय्यिदुना अल्कमा رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ की वालिदा का नाम, ताबेइय्या हैं)

**مَرْيَم** (मरयम = इबादत गुज़ार ख़ातून, हज़रते सय्यिदुना ईसा عَلَيْهِ السَّلَامُ की वालिदए मोहतरमा का नाम)

**مُنِيبَه** (मुनीबा = तौबा करने वाली, फ़रमां बरदार ख़ातून, बसरा की एक इबादत गुज़ार ख़ातून का नाम)

**مُنِيفَه** (मुनीफा = हसीन व खुश क़ामत औरत, मुनीफा बिन्ते अबी तारिक, बहरैन की एक इबादत गुज़ार ख़ातून का नाम)

**مُنِيهَه** (मुन्या = तमन्ना, ख़्वाहिश, सहाबिये रसूल हज़रते सय्यिदुना अबू बरज़ा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ की पोती का नाम)

**مُوَافِقه** (मुवाफ़िका = मुनासबत वाली, मिली हुई, एक इबादत गुज़ार ख़ातून का नाम)

**نُدَبَه** (नुदबा = फ़सीह कलाम करने वाली, सहाबिये रसूल हज़रते सय्यिदुना खुफ़ाफ़ बिन नुदबा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ की वालिदा का नाम)

**وَجِيهَه** (वजीहा = ख़ूब सूरत। उम्मुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदतुना उम्मे सलमा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا की आज़ाद कर्दा कनीज़ का नाम)

**هَالَه** (हाला = चांद के चारों अतःराफ़ का रोशन दाइरा। सय्यिदुश्शोहदा हज़रते सय्यिदुना हम्जा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ की वालिदा का नाम)

**ہاجرہ** (ہاجیرا = نیہایت گرم دوپھر کا وکٹ । ہجڑتے ساییدونا اسماہ ایل عَلَيْهِ السَّلَامُ کی والیدا کا نام) **یاسمین** (یاسمین = چمبلی کا فول । اک بوجوگ اور راویयہ ہدیہ ہجڑتے ساییدوتونا تمہے ابڈوللہاہ یاسمین بینے سالیم رحمة اللہ تعالیٰ علیہا کا نام)

### تکریب 16 مُوْتَفَرِّكُ جَنَانًا نَام

**ارم** (درم = اک کول کے موتاوبک کجنات کا نام)

**اُقصیٰ** (اکسپا = بہت دور । مولکے شام میں ہجڑتے ساییدونا داکوڈ کی بنائی ہوئی مسجد بیتوں مکہدش کا نام)

**بَتُولُ** (بتول = ساییدا فاطمہ کا لکب)

**تَسْنِيم** (تسنیم = جنات کی اک نہر کا نام)

**حرَا** (ہیرا = مککا مکررمہ کی پہاڑیوں میں مژود گار کا نام)

**حرَمَن** (حرامن = مککا ممعزہ مسجد اور مادینہ مونبھرا دوں کو ہرامن کہتے ہیں)

**حرِیم** (ہریم = گھر کی چار دیواری، خانہ کا'بہ کی بیرونی دیوار، مکان، گھر)

**حُمَيْرَا** (ہومیرا = سुख رنگ کی । ہمہل مومینین ہجڑتے ساییدوتونا آیشہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا کا لکب)

**زَهْراء** (زہرا = رoshan اور سفید چہرے والی । بیبی فاطمہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا کا لکب)

**زَيْتُونُ** (جیتوں = اک مشہور درخت کا نام جس کا جیکھ کر آنے پاک میں ہے)

**سَعْدِيَة** (سا'دیہ = شیراچ کی میڈا فات میں وہ مکام جہاں شیخ سا'دی شیراچی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ کا مجاہر ہے)

**سیدیقہ (سیدیقہ) =** نیہا یت سچوی । ہجڑتے ساییدتُونا آڈیشا  
**سیدیقہ اور ہجڑتے ساییدتُونا ماریم (رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا)** کا لکب

**طاهرہ (طاهرہ) =** پاک । ٹمُول مُو امینیں ہجڑتے ساییدتُونا  
**آڈیشا سیدیقہ (رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا)** کا لکب

**طوبی (طوبی) =** خوش خبری । اک کول کے موتا بیک جنات کا  
 نام، دوسرا کول کے موتا بیک جنات میں اک درخت کا نام)

**عذرنا (عذرنا) =** کنواری، ہجڑتے ساییدتُونا ماریم (رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا) کا لکب

**کوثر (کوثر) =** بہیشت کی اک نہر، جنات کا ہیج، کو رانے  
 پاک کی اک سوچت کا نام)

صَلُّوا عَلَى الْحَمِيْدِ! صَلُّ اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

## سات اُمیکیاٹو کی کوئی کوئی تھے

مدنی آکا احمد مودودی موجتبا، صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم	ابوالکرسیم، ابو ابراہیم
ہجڑتے ساییدتُونا آدم علی نبیتا وعلیہ الصلوٰۃ والسلام	ابوالبشر، ابو محمد
ہجڑتے ساییدتُونا ابراہیم علی نبیتا وعلیہ الصلوٰۃ والسلام	ابوال اجیاپ
ہجڑتے ساییدتُونا داکود علی نبیتا وعلیہ الصلوٰۃ والسلام	ابو سلیمان
ہجڑتے ساییدتُونا اسحاق علی نبیتا وعلیہ الصلوٰۃ والسلام	ابو یاکوب
ہجڑتے ساییدتُونا یاکوب علی نبیتا وعلیہ الصلوٰۃ والسلام	ابو یوسف
ہجڑتے ساییدتُونا خیز علی نبیتا وعلیہ الصلوٰۃ والسلام	ابوال ابیاس

## 71 सहाबतु किराम ﷺ की कुन्यतें

हज़रते सय्यिदुना सिद्दीके अकबर ﷺ	अबू बक्र
हज़रते सय्यिदुना फ़ारूके आ'जम ﷺ	अबू हफ्स
हज़रते सय्यिदुना उषमान बिन अःफ़कान ﷺ	अबू अब्दिल्लाह, अबू अब्दरहमान, अबू अम्र
हज़रते सय्यिदुना अलियुल मुर्तजा ﷺ	अबुल हसन, अबू तुराब
हज़रते सय्यिदुना तलहा बिन उबैदुल्लाह ﷺ	अबू मुहम्मद
हज़रते सय्यिदुना जुबैर बिन अव्वाम ﷺ	अबू अब्दिल्लाह
हज़रते सय्यिदुना अबुरुहमान बिन औफ़ ﷺ	अबू मुहम्मद
हज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्कास ﷺ	अबू इस्हाक
हज़रते सय्यिदुना सईद बिन जैद ﷺ	अबुल आ'वर
हज़रते सय्यिदुना आमिर बिन जराहे ﷺ	अबू उबैदा
हज़रते सय्यिदुना उसामा बिन जैद ﷺ	अबू मुहम्मद, अबू जैद, अबू यजीद, अबू खारिजा
हज़रते सय्यिदुना अस्लाम राई ﷺ	अबू सलमा
हज़रते सय्यिदुना उसैद बिन हुज़ेर ﷺ	अबू यह्या, अबू ईसा, अबू अतीक, अबू हुज़ेर, अबू अम्र
हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक ﷺ	अबू हम्जा

हज़रते सय्यिदुना बरा बिन आजिब	अबू अम्र, अबू अम्मारा
हज़रते सय्यिदुना जाविर बिन	अबू अब्दिल्लाह,
अब्दुल्लाह बिन हराम	अबू अब्दिरहमान
हज़रते सय्यिदुना अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब	अबुल फ़ज़्ल
हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन जुबैर	अबू बक्र, अबू खुबैर
हज़रते सय्यिदुना उषमान बिन हुनैफ़	अबू अम्र, अबू अब्दिल्लाह
हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन उमर	अबू अब्दिरहमान
हज़रते सय्यिदुना अरकम बिन अबू अरकम	अबू अब्दिल्लाह
हज़रते सय्यिदुना अशअष बिन कैस	अबू मुहम्मद
हज़रते सय्यिदुना अन्जशा	अबू मारिया
हज़रते सय्यिदुना जाविर बिन समुरा	अबू अब्दिल्लाह, अबू ख़ालिद
हज़रते सय्यिदुना जाविर बिन अब्दुल्लाह	अबू अब्दिल्लाह, अबू अब्दिरहमान, अबू मुहम्मद
हज़रते सय्यिदुना जाफ़र बिन अबू तालिब	अबुल मसाकीन
हज़रते सय्यिदुना हकीम बिन हिज़ाम	अबू ख़ालिद
हज़रते सय्यिदुना सुराक़ा बिन मालिक	अबू सुफ्यान
हज़रते सय्यिदुना समुराह बिन जुनुब	अबू सुलैमान

हज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद ﷺ	अबू सुलैमान
हज़रते सय्यिदुना सईद बिन आस ﷺ	अबू उहैद़
हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन जा'फ़ ﷺ	अबू हाशिम
हज़रते सय्यिदुना फ़ज़्ल बिन अब्बास ﷺ	अबुल अब्बास, अबू अब्दिल्लाह, अबू मुहम्मद
हज़रते सय्यिदुना मा'क़िल बिन यसार ﷺ	अबू अली, अबू अब्दिल्लाह, अबू यसार
हज़रते सय्यिदुना मिक़दाद बिन अस्वद ﷺ	अबू अस्वद
हज़रते सय्यिदुना नो'मान बिन बशीर ﷺ	अबू अब्दिल्लाह
हज़रते सय्यिदुना अब्दुर्रहमान बिन अबू बक्र ﷺ	अबू अब्दिल्लाह
हज़रते सय्यिदुना तमीम दारी ﷺ	अबू रुक्या
हज़रते सय्यिदुना इकरिमा ﷺ	अबू उषमान
हज़रते सय्यिदुना उषमान ﷺ (वालिदे सिद्दीके अकबर)	अबू कहाफा
हज़रते सय्यिदुना नुफ़ेअ़ बिन हारिष ﷺ	अबू बक्र
हज़रते सय्यिदुना अस्लम या इब्राहीम ﷺ	अबू रफ़ेअ़
हज़रते सय्यिदुना सा'द बिन मालिक ﷺ	अबू सईद (खुदरी)
हज़रते सय्यिदुना सख़र बिन हर्ब ﷺ	अबू सुफ़्यान
हज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन सहल ﷺ	अबू त़ल्हा (अन्सारी)

हज़रते सच्चिदुना हारिष बिन रबई ﷺ	अबू क़तादा
हज़रते सच्चिदुना अब्दुर्रहमान बिन सखर ﷺ	अबू हुरैरा
हज़रते सच्चिदुना अनस बिन मालिक ﷺ	अबू हम्जा
हज़रते सच्चिदुना अब्दुल्लाह बिन बुस्र ﷺ	अबू बुस्र, अबू सफ़वान
हज़रते सच्चिदुना सुदय बिन अज्जलान ﷺ	अबू उमामा (बाहिली)
हज़रते सच्चिदुना इमरान बिन हुसैन ﷺ	अबू नुजैद
हज़रते सच्चिदुना ख़ालिद बिन ज़ैद ﷺ	अबू अय्यूब (अन्सारी)
हज़रते सच्चिदुना अब्दुल्लाह बिन कैस ﷺ	अबू मूसा (अशअरी)
हज़रते सच्चिदुना उँवैमिर बिन आमिर ﷺ	अबू दरदा
हज़रते सच्चिदुना अम्र बिन अबसा ﷺ	अबू नजीह
हज़रते सच्चिदुना इरबाज़ बिन सारिया ﷺ	अबू नजीह
हज़रते सच्चिदुना राफ़ेअ़ बिन ख़दीज ﷺ	अबू अब्दिल्लाह
हज़रते सच्चिदुना उहबान बिन सैफ़ी गिफ़री ﷺ	अबू मुस्लिम
हज़रते सच्चिदुना जन्दरा बिन ख़ैशना ﷺ	अबू क़िरसाफ़
हज़रते सच्चिदुना हस्सान बिन शाबित ﷺ	अबुल वलीद
हज़रते सच्चिदुना हकीम बिन हिज़ाम ﷺ	अबू ख़ालिद

हज़रते सय्यिदुना उबय बिन का'ब	अबुल मुन्ज़िर, अबुतुफ़ेल
हज़रते सय्यिदुना जुरहुम बिन नाशिब	अबू षा'लबा
हज़रते सय्यिदुना ख़ब्बाब बिन अरत	अबू अब्दिल्लाह
हज़रते सय्यिदुना मिक्�दाद बिन अस्वद	अबू मा'बद, अबुल अस्वद
हज़रते सय्यिदुना हसन बिन अ़्ली	अबू मुहम्मद
हज़रते सय्यिदुना हुसैन बिन अ़्ली	अबू अब्दिल्लाह
हज़रते सय्यिदुना سलमान फ़ारसी	अबू अब्दिल्लाह
हज़रते सय्यिदुना साइब बिन यज़ीद	अबू यज़ीद
हज़रते सय्यिदुना जुन्दुब बिन जुनाद	अजू ज़र (गिफ़ारी)
हज़रते सय्यिदुना मुआज़ बिन जबल	अबू अब्दिल्लाह

### 13 सहाबिय्यात رضي الله تعالى عنهم

उम्मुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना ख़दीजतुल कुब्रा	उम्मुल हिन्द
उम्मुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना سौदा बिन्ते जम़अ	उम्मुल अस्वद
उम्मुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना आइशा सिदीक़ा	उम्मुल अब्दिल्लाह
उम्मुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना जैनब बिन्ते जहूश	उम्मुल हक्म

उम्मुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदतुना जैनब बिन्ते खुजैमा	उम्मुल मसाकीन
उम्मुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदतुना रमला	उम्मे हबीबा
हज़रते सय्यिदतुना हिन्द बिन्ते अबी उमय्या	उम्मे सलमा
हज़रते सय्यिदतुना हम्ना बिन्ते जहश	उम्मे हबीबा
हज़रते सय्यिदतुना खैरा बिन्ते अबी हदरद	उम्मुद्वरदा
हज़रते सय्यिदतुना फ़तिमा बिन्ते हमज़ा बिन अब्दुल मुत्तलिब	उम्मुल फ़ज़्ल
हज़रते सय्यिदतुना फ़तिमा बिन्ते ख़त्ताब	उम्मे जमील
हज़रते सय्यिदतुना फ़खिता बिन्ते अबी तालिब	उम्मे हानी
हज़रते सय्यिदतुना नुसैबा बिन्ते का'ब	उम्मे अम्मारा

## दीवार 65 बुजुर्गनि दीन की कुन्ध्यतें

हज़रते सय्यिदुना इमाम जैनुल आविदान (अली बिन हुसैन) رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا	अबू मुहम्मद, अबुल हसन, अबुल कासिम, अबू बक्र
हज़रते सay्यidुnā īmām muhmmad bākīr رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ	अबू जा'फ़र
हज़रते सay्यidुnā īmām ja'fār sādīk رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ	अबू अब्दुल्लाह, अबू इस्माईल
हज़रते सay्यidुnā īmām mūsā kājīm رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ	अबुल हसन, अबू इब्राहीम
हज़रते सay्यidुnā īmām ḥālid rājā رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ	अबुल हसन, अबू मुहम्मद
हज़रते सay्यidुnā shaykh mā'rūf karrakhī عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْعَظِيمِ	अबू महफूज

ہجرتے ساییدونا سی رہیں (سیری سکھی)	علیہ رحمۃ اللہ العلیٰ	ابوالحسن
ہجرتے ساییدونا جنید باغدادی	علیہ رحمۃ اللہ العلیٰ	ابوالحسین
ہجرتے ساییدونا جا' فر (ابو بکر شبلی)	علیہ رحمۃ اللہ العلیٰ	ابو بکر
ہجور گپتول آج م شیخ عبدالدیر جیلانی	علیہ رحمۃ اللہ العلیٰ	ابو محمد
ہجرتے ساییدونا آالہ مہماد مارہاروی	علیہ رحمۃ اللہ العلیٰ	ابوالبرکات
ہجرتے ساییدونا ابراہیم بن ادھم	علیہ رحمۃ اللہ الکریم	ابو اسحاق
ہجرتے ساییدونا امام مہماد بن اسماعیل بخاری	علیہ رحمۃ اللہ العلیٰ	ابو عبداللہ
ہجرتے ساییدونا امام مسیلم بن حجاج	علیہ رحمۃ اللہ الرضا	ابوالحسن
ہجرتے ساییدونا امام مہماد بن اسما	علیہ رحمۃ اللہ القی	ابو اسما
ہجرتے ساییدونا امام مہماد بن یحییٰ	رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ	ابو عبداللہ
ہجرتے ساییدونا سولیمان بن اش ابی سجستانی	علیہ رحمۃ اللہ العلیٰ	ابو داؤد
ہجرتے ساییدونا امام احمد بن شاہ اسرا	علیہ رحمۃ اللہ العلیٰ	ابو ابدی رہمان
ہجرتے ساییدونا امام کاظمؑ	علیہ رحمۃ اللہ العلیٰ	ابوالفضل
ہجرتے ساییدونا امام یحییٰ بن شرف نవوی	علیہ رحمۃ اللہ العلیٰ	ابو یکریہ
ہجرتے ساییدونا نو' مان بن شاہیت امام اج	علیہ رحمۃ اللہ الکریم	ابو ہنفیہ
ہجرتے ساییدونا امام مہماد بن ادریس شافعی	علیہ رحمۃ اللہ العلیٰ	ابو عبداللہ

ہجرتے سیمیدونا اسمام احمد بن حبیل <small>رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِ</small>	ابو عبدیلہ
ہجرتے سیمیدونا مالیک بن انس (اسماء مالیک) <small>عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَاحِدِ</small>	ابو عبدیلہ
ہجرتے سیمیدونا اسمام یا کعب بن ابراہیم <small>عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْكَرِيمِ</small>	ابو یوسف
ہجرتے سیمیدونا اسمام مسیم <small>عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْصَّمَدِ</small>	ابو عبدیلہ
ہجرتے سیمیدونا اسمام مسیم بن تھاوسی <small>عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِيِّ</small>	ابو جابر
ہجرتے سیمیدونا رفیع بن مہراون <small>عَلَيْهِ رَحْمَةُ النَّعَانِ</small>	ابوالعلیا
ہجرتے سیمیدونا ابراہیم نخری <small>عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِيِّ</small>	ابو عمران
ہجرتے سیمیدونا اسمام آمش <small>عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْأَخَدِ</small>	ابو مسیم
ہجرتے سیمیدونا عبدالرحمن بین ابری (اسماء اوزای)	ابو ابری
ہجرتے سیمیدونا عبداللہ بین سائب <small>رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِ</small>	ابو مسلم (خولانی)
ہجرتے سیمیدونا عبداللہ المکافی <small>عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْكَافِيِّ</small>	ابو کیلابا
ہجرتے سیمیدونا احمد بین ابلی راجی <small>عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْأَنْجَنِيِّ</small>	ابو بکر (جسساس)
ہجرتے سیمیدونا احمد بین ہوسن (اسماء بہکی)	ابو بکر
ہجرتے سیمیدونا ہسن بسری <small>عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِيِّ</small>	ابو سید
ہجرتے سیمیدونا احمد بین ابلی (خوبی بگداوی) <small>عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْأَعْدَادِ</small>	ابو بکر
ہجرتے سیمیدونا داود بین نصرت رائے <small>عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِيِّ</small>	ابو سلیمان

ہجرتے ساییدونا ابلی بین عمر (یمام دار کوتنی) عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْعَظِيْمِ	ابوالحسن
ہجرتے ساییدونا مہماد بین مسیلم (یمام جوہری) عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْعَظِيْمِ	ابوبکر
ہجرتے ساییدونا سالم بین ابڈللاہ بین عمر عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْأَكْبَرِ	ابو عمر
ہجرتے ساییدونا سعفیان بین سرید شیری عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْعَظِيْمِ	ابو ابدللاہ
ہجرتے ساییدونا سعفیان بین علیہ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ	ابو مہماد
ہجرتے ساییدونا مہماد بین مہماد (یمام جوہری) عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْعَظِيْمِ	ابوالخیر
ہجرتے ساییدونا ڈربا بین جوہر بین ابکام عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ السَّلَام	ابو ابدللاہ
ہجرتے ساییدونا عمر بین ابڈل ابجیج عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْأَكْرَمِ	ابو حفیض
ہجرتے ساییدونا ابڈللاہ بین مبارک عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْأَكْرَمِ	ابو ابدرہمان
ہجرتے ساییدونا فوجل بین دیباچ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الرَّزِيقِ	ابو ابلی
ہجرتے ساییدونا احمد بین مہماد (یمام کوہری) عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْعَظِيْمِ	ابوالحسن
ہجرتے ساییدونا مہماد بین ابلی (مہماد ہنفیہ) رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ	ابوالکاسیم
ہجرتے ساییدونا ابڈللاہ بین حسین (یمام کرخی) عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْعَظِيْمِ	ابوالحسن
ہجرتے ساییدونا ایمام مہماد بین سرین عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ السَّلِیْمِ	ابوبکر
ہجرتے ساییدونا وہب بین مونبہہ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ	ابو ابدللاہ
ہجرتے ساییدونا یہود بین مردین عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ السَّلِیْمِ	ابو جکریہ

کुتبے جمانا اعلیٰ مسلمان سعید محدث بین سلیمان جزوی	اعلیٰ رحمۃ اللہ العالیٰ	ابو ابید للاہ
آں لہا حضرت مولانا شاہ اسماعیل احمد رضا خاں	اعلیٰ رحمۃ اللہ العالیٰ	ابو محدث
اسماعیل محدث شیخ مولانا سعید محدث دیدار اعلیٰ شاہ	اعلیٰ رحمۃ اللہ العالیٰ	ابو محدث
محدث آجھ پاکستان مولانا محدث سردار احمد کادیری	اعلیٰ رحمۃ اللہ العالیٰ	ابوالفضل
فضلیٰ ہے آجھ مولانا محدث شریف کوٹلواری	اعلیٰ رحمۃ اللہ العالیٰ	ابو یوسف
سุلطان نعل واڈیں حضرت مولانا محدث بشیر	اعلیٰ رحمۃ اللہ العالیٰ	ابونور
عسٹاچوں لے لاما حضرت مولانا سعید احمد	اعلیٰ رحمۃ اللہ العالیٰ	ابوالبرکات
شارہے کرسی دے بُردہ حضرت مولانا سعید محدث احمد کادیری	اعلیٰ رحمۃ اللہ العالیٰ	ابوالحسنات
امیر اہل سنت اعلیٰ مسلمان سعید محدث احمد کادیری	دامت برکاتہم العالیٰ	ابوبیلال
شہزادے امیر اہل سنت مولانا عبید رضا احمد مدنی	دامت برکاتہم العالیٰ	ابو عسید
شہزادے امیر اہل سنت حاجی بیلال رضا احمد مدنی	دامت برکاتہم العالیٰ	ابو ہلال

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

## 18 سہابؑ کی رام علیہم الرضوان کے انلکھبات

हजरते सच्चिदुना अबू बक्र <small>رض</small>	सिद्धीक़ (हमेशा तस्दीक़ करने वाला)
हजरते सच्चिदुना उमर <small>رض</small>	फ़ारूक़ (बातिल से हक़ को मुमताज़ करने वाला)
हजरते सच्चिदुना उषमाने गुर्नी <small>رض</small>	जुनूरैन (दो नूरों वाला)

हज़रते सय्यिदुना अ़ली ﷺ	असदुल्लाह (अल्लाह का शेर)
हज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद ﷺ	सैफुल्लाह (अल्लाह की तल्वार)
हज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा बिन यमान ﷺ	साहिबु सिरि रसूलिल्लाह ﷺ (रसूलुल्लाह ﷺ के राज़दार)
हज़रते सय्यिदुना अबू उबैदा बिन जर्हा॑ ﷺ	अमीन (दियानतदार)
हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन अब्बास ﷺ	अल बहूर वल हिब्र (बहुत बड़ा आलिम)
हज़रते सय्यिदुना खुज़ैमा बिन घा�वित ﷺ	जुश्शाहदतैन (दो गवाहियों वाले)
हज़रते सय्यिदुना हस्सान बिन घा�वित ﷺ	हुस्साम (तेज़ तल्वार)
हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक ﷺ	जुल उजुनैन (दो कानों वाले)
हज़रते सय्यिदुना जा॑फ़र बिन अबी तालिब ﷺ	जुल जनाहैन (दो बाजूओं वाले)
हज़रते सय्यिदुना हसन व हुसैन رضي الله عنهما	रैहानता रसूलिल्लाह ﷺ (रसूलुल्लाह ﷺ के दो फूल)
हज़रते सय्यिदुना बिलाल ﷺ	साबिकुल हबशा (हबशा के बाशिन्दों में सब से पहले जन्त में जाने वाले)
हज़रते सय्यिदुना सुहैब	साबिकुरुम (रुम के बाशिन्दों में सब से पहले जन्त में जाने वाले)
हज़रते सय्यिदुना सलमान ﷺ	साबिकुल फ़रस (फ़रस के बाशिन्दों में सब से पहले जन्त में जाने वाले)
हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन मसऊद	साहिबुन्ना॑'लैन (हुजूर ﷺ के मुबारक ना॑'लैन उठाने वाले)

## 9 ताबेर्दून व मुहद्दिषीन के अल्कबात

हज़रते सय्यिदुना सईद बिन मुसय्यब رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ	अपृलुत्ताबिईन (ताबेर्दून में सब से ज़ियादा फ़ज़ीलत वाले)
हज़रते सय्यिदुना उवैस करनी رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ	ख़ेरुत्ताबिईन (ताबेर्दून में सब से ज़ियादा भलाई वाले)
हज़रते सय्यिदुना ज़कवान رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ	ताऊस (ख़ूब सूरत चेहरे वाला)
हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद बिन ह़सन बसरी رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ	महबूब (दोस्त)
हज़रते सय्यिदुना उमर बिन अब्दुल अज़ीज عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَدِيرِ	उमरे घानी (दूसरे उमर)
इमाम अबू ज़करिया यह्या बिन शरफुद्दीन नववी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِيِّ	मुहय्युद्दीन (दीन को ज़िन्दा करने वाले)
हज़रते अल्लामा अब्दुर्रहमान सुयूती عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْغَنِيِّ	जलालुद्दीन (दीन का जलाल)
हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद ग़ज़ली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْعَادِي	हुज्जतुल इस्लाम (इस्लाम की दलील)
हज़रते अल्लामा मुल्ला अली कारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَالِي	नूरुद्दीन (दीन की रोशनी)

## 9 मशहूर बजुगनिे दीन के अल्कबात

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल कादिर जीलानी رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ	गौंधे आ'ज़म (बड़ा मददगार)
हज़रते सय्यिदुना दाता अली हिजवेरी رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ	गञ्ज बख्ता (बहुत बड़ा फ़व्याज़)
हज़रते सय्यिदुना बाबा फ़रीदुद्दीन رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ	गन्जे शकर (शकर का ख़ज़ाना)
हज़रते सय्यिदुना ख़वाजा मुईनुद्दीन عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِيِّ	गरीब नवाज़ (गरीबों की झोलियां भरने वाले)

हज़रते शैख़ अहमद मुजद्दिदे अल्फ़ेषानी	رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ बदरुदीन (दीन को रोशन करने वाला)
हज़रते सच्चिदुना अब्दुल्लाह शाह	رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ग़ाज़ी (काफ़िरों से लड़ने वाला मुसलमान)
शाह आले रसूल मरेहरवी	رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ख़ातमुल अकाबिर (बुजुर्गों की निशानी)
हज़रते अल्लामा मौलाना आले अहमद	رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ अच्छे मियां (अच्छे आदमी)
हज़रते अल्लामा मौलाना जियाउद्दीन अहमद मदनी	رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ कुतुबे मरीना (मरीने के कुतुब) (मुसलमानों के अ़कीदे में वोह वली जिस के सिपुर्द किसी अलाके या बस्ती का इनिज़ाम हो)

## पाकव हिन्द के 31 मशहूर ढ़-लमाए किराम के अल्क़बात

हज़रते अल्लामा मौलाना अब्दुल हक़ मुहर्रिमे देहलवी	शैख़-मुहर्रिमे (तहकीक करने वाले बुजुर्ग)
हज़रते अल्लामा मौलाना नक़ी अली ख़ान	رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ रईसुल मुतक़ल्लमीन (इल्मे कलाम के माहिर)
इमामे अहले सुन्नत इमाम अहमद रज़ा ख़ान	رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ आ'ला हज़रत (सब से बड़ी बारगाह)
मौलाना हसन रज़ा ख़ान	رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ उस्ताज़े ज़मन (अपने वक़्त के उस्ताद)
सच्चिद अली हुसैन अशरफी मियां	رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ शैखुल मशाइख़ (बुजुर्गों के बुजुर्ग)
हज़रते अल्लामा मौलाना मुस्तफ़ा रज़ा ख़ान	رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ मुफ़ितये आ'ज़मे हिन्द (हिन्द के सब से बड़े मुफ़्ती)
हज़रते अल्लामा मौलाना अमजद अली आ'ज़मी	رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ सदस्तशरीआ (दीन के मसाइल के जाने वालों में बुलन्द मक़ब्म रखने वाले)

हज़रते अल्लामा मौलाना जफ़रुदीन विहारी <small>عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْأَكْبَرِ</small>	मलिकुल उल्लमा (उल्लमा का बादशाह)
हज़रते अल्लामा मौलाना सय्यद अहमद सईद काज़मी <small>عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْأَكْبَرِ</small>	गज़ालिये ज़मान (अपने ज़माने के इमाम गज़ाली)
हज़रते अल्लामा मौलाना मुफ्ती अहमद यार ख़ान <small>عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْأَكْبَرِ</small>	हकीमुल उम्मत (उम्मत की इस्लाह करने वाले)
हज़रते अल्लामा सय्यद मुहम्मद नईमुदीन मुरादबादी <small>عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْأَكْبَرِ</small>	सदरुल अफ़्राज़िल (जय्यद आलिम)
हज़रते पौर सय्यद जमाअत अली शाह <small>رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ</small>	अमरी मिल्लत (दीन के अमरी)
हज़रते पौर सय्यद मुहम्मद मियां मारेहरवी <small>عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْأَكْبَرِ</small>	ताजुल उल्लमा (उल्लमा का सरदार)
हज़रते मौलाना सय्यद मुहम्मद किछौल्हवी <small>عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْأَكْبَرِ</small>	मुहम्मदिये आ'ज़मे हिन्द (हिन्द के सब से ज़ियादा अहादीष को ज़बानी करने वाले)
अल्लामा मौलाना सिराज अहमद ख़ानपूरी <small>رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ</small>	सिराजुल फ़ुक़ह (इसे फ़िक़ह जानने वालों की चमक)
हज़रते अल्लामा मौलाना हशमत अली ख़ान <small>عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْأَكْبَرِ</small>	शेर बेशहे अहले सुन्नत
हज़रते अल्लामा मौलाना सय्यद पुहम्मद अहमद क़ादिरी <small>عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْأَكْبَرِ</small>	ग़ाज़िये मिल्लत (क़ौम के ग़ाज़ी)
हज़रते अल्लामा मौलाना अब्दुल अज़ीज़ मुवाक़ पूरी <small>عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْأَكْبَرِ</small>	हाफ़िज़े मिल्लत (दीन के निगेहवान)
हज़रते अल्लामा मौलाना सरदार अहमद <small>عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَاحِدِ</small>	मुहम्मदिये आ'ज़म पाकिस्तान (पाकिस्तान के सब से बड़े हृदीष जानने वाले)
हज़रते अल्लामा मौलाना शरीफुल हक़ <small>عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَاحِدِ</small>	शारे हे बुखारी/फ़क़ीहे आ'ज़म (बुखारी की शहद करने वाले, सब से बड़े फ़क़ीह)
हज़रते अल्लामा मौलाना रैहान रज़ा ख़ान <small>عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْأَكْبَرِ</small>	रैहाने मिल्लत (मिल्लत के फूल)
हज़रते अल्लामा अब्दुल ग़फ़ूर हज़ारवी <small>عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْأَكْبَرِ</small>	शैखुल कुरआन (कुरआन के आलिम)
हज़रते अल्लामा मुफ्ती ख़लील अहमद बरकाती <small>عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْأَكْبَرِ</small>	ख़लीले मिल्लत (मिल्लत के दोस्त)

ہجرتے مولانا عبداللہ حکیم شارف کادیری <small>عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْأَوَّلِيٍّ</small>	شارفہ میللت (کوئی کی ایجات)
ہجرتے عبداللہ مولانا عمار ندیمی <small>عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِيِّ</small>	تاجعل دلما (یہم والوں کے تاج)
ہجرتے عبداللہ مولانا ارشاد علی کادیری <small>عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْأَوَّلِيٍّ</small>	ردیس عتھریر (تھریر کے بادشاہ)
ہجرتے عبداللہ مولانا محمد شافعی احمد اکاڈمی <small>عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِيِّ</small>	خاتمہ پاکستان (پاکستان کے نامور خاتم)
ہجرتے عبداللہ مولانا فیض احمد عہدی <small>عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِيِّ</small>	فیض میللت (کوئی کو فیض دنے والے)
ہجرتے عبداللہ مولانا مسٹر ابدر حسین بستواری <small>عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِيِّ</small>	مسٹر جعل فوکہا (یہم فیکہ جاننے والوں کے عسٹاد)
ہجرتے عبداللہ مولانا مسٹر ابدر حسین بستواری <small>عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِيِّ</small>	امیر اہل سنت (سونیوں کے امیر، رہنمایا)
مسٹر فارسک ابڑا <small>عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْأَوَّلِيٍّ</small>	مسٹر دا'�تے اسلامی (دا'وتے اسلامی کے مسٹر)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلُّوا عَلَى مُحَمَّدٍ

### چار چیजें ساردار بننا دेतی हैं

شہاب بودین ہجرتے سدیع الدین مسٹر احمد بین احمد  
ابوال فتح ابشنیہ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِيِّ "الل مسٹر تارف" مें  
नक्ल फरमाते हैं : चार चीजें इन्सान को सरदार बना देती हैं :  
 الْعِلْمُ وَالْأَدَبُ وَالصِّدْقُ وَالْأَمَانَةُ  
 या'नी یہم، ادب، صدقہ اور امانت ।

(المستطرف، ۱۰/۴۲)

# مأخذ و مراجع

نام کتاب	مصنف / مؤلف	مطبوعہ
قرآن مجید	کلام الہی	مکتبۃ المدیہ، باب المدیہ کراچی
کنز الایمان	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان، متوفی ۱۳۴۵ھ	مکتبۃ المدیہ، باب المدیہ کراچی
تفہیم خزانہ العرفان	صدر الافق ضلع مشقی قسم الدین مراد ابادی، متوفی ۱۳۶۷ھ	مکتبۃ المدیہ، باب المدیہ کراچی
تفہیم الحسینی	حکیم الاستقامتی احمد یارخان نسی، متوفی ۱۳۹۱ھ	ضیاء القرآن جبلی کشیر، لاہور
تفہیم صادقی	احمد بن محمد صادقی ناکی خلوی، متوفی ۱۴۲۱ھ	دار الفکر، بیروت ۱۴۲۱ھ
روح الحانی	ابو الفضل شہاب الدین سید محمود آلوی، متوفی ۱۴۲۰ھ	دار احیاء التراث العربی، بیروت ۱۴۲۰ھ
صحیح البخاری	امام ابو عبد اللہ محمد بن اسماعیل بخاری، متوفی ۱۴۱۹ھ	دارالكتب العلمية، بیروت ۱۴۱۹ھ
صحیح مسلم	امام ابو الحسن مسلم بن حجاج تجویزی بہترنی، متوفی ۱۴۱۹ھ	دار ابن حزم، بیروت ۱۴۱۹ھ
سنن الترمذی	امام ابو عیسیٰ محمد بن عیسیٰ ترمذی، متوفی ۱۴۱۴ھ	دار الفکر، بیروت ۱۴۱۴ھ
سنن ابی داؤد	امام ابو داؤد سليمان بن الحجاج بجھانی، متوفی ۱۴۲۱ھ	دار احیاء التراث، بیروت ۱۴۲۱ھ
سنن ابن ماجہ	امام ابو عبد اللہ محمد بن یزید ابن ماجہ، متوفی ۱۴۲۰ھ	دار الفکر، بیروت ۱۴۲۰ھ
مؤطراً امام مالک	امام مالک بن انس الحنفی، متوفی ۱۴۲۰ھ	دار المعرفة، بیروت ۱۴۲۰ھ
المسد	امام احمد بن حنبل، متوفی ۱۴۱۴ھ	دار الفکر، بیروت ۱۴۱۴ھ
لجمیح الکبیر	امام ابو القاسم سیمین بن احمد طبرانی، متوفی ۱۴۲۲ھ	دار احیاء التراث، بیروت ۱۴۲۲ھ
لجمیح الاوسط	امام ابو القاسم سیمین بن احمد طبرانی، متوفی ۱۴۲۰ھ	دارالكتب العلمية، بیروت ۱۴۲۰ھ
شعب الایمان	امام ابو بکر احمد بن حسین بن علی بختی، متوفی ۱۴۲۱ھ	دارالكتب العلمية، بیروت ۱۴۲۱ھ
الادب المشرد	امام ابو عبد اللہ محمد بن اسماعیل بخاری، متوفی ۱۴۲۰ھ	تاشقندیہ ۱۳۹۰ء
جمع انوار الدک	حافظ نور الدین علی بن ابو بکر بختی، متوفی ۱۴۲۰ھ	دار الفکر، بیروت ۱۴۲۰ھ
جمع الجوامع	امام جلال الدین بن ابی بکر سیوطی، متوفی ۱۴۲۱ھ	دارالكتب العلمية، بیروت ۱۴۲۱ھ
البیان الصغیر	امام جلال الدین بن ابی بکر سیوطی، متوفی ۱۴۲۱ھ	دارالكتب العلمية، بیروت ۱۴۲۱ھ
اتسییر بشرح جامع الصغیر	علام عبد الرؤف مناوی، متوفی ۱۰۰۳ھ	مکتبۃ الامام الشافعی، ریاض ۱۴۰۸ھ
مسند الفردوس	الحافظ شیریہ بن حصر دارالدینی، متوفی ۱۱۷۶ھ	دار الفکر، بیروت ۱۴۱۸ھ
مسند ابی زار	امام ابو بکر احمد عرب و بن عبد اللائق بزار، متوفی ۱۱۹۲ھ	مکتبۃ الحکیم، المدیہ لامورہ ۱۴۲۲ھ
النہایۃ فی غریب الحدیث والآثار	الامام محب الدین المبارک بن محمد الجزری، متوفی ۶۰ھ	دارالكتب العلمية، بیروت ۲۰۱۱ھ
الاذکار	الامام مکی بن شرف الانوی، متوفی ۶۷ھ	دارالكتب العلمية، بیروت ۱۴۲۰ھ

دارالكتب العلمية، بیروت ۱۴۲۴ھ	امام ابو محمد حسین بن مسعود بغوثی، متوفی ۱۵۱۶ھ	شرح الشیة
دارالكتب العلمية بیروت ۱۴۱۴ھ	محمد بن یوسف صالح شاما، متوفی ۹۴۲ھ	سلیل الہدی والرشاد
دارالكتب العلمیہ ۱۴۱۵ھ	امام ابو جعفر احمد بن محمد طحاوی، متوفی ۳۲۱ھ	مشکل الآثار
دارالكتب العلمیہ ۱۴۲۲ھ	شیخ امام علی بن محمد جبوبی، متوفی ۱۱۲۶ھ	کشف الخفاء
دارالكتب العلمیہ، بیروت ۱۴۱۹ھ	امام علی نقی بن حسام الدین ہنڈی، متوفی ۹۷۵ھ	کنز العمال
دارالكتب العلمیہ، بیروت ۱۴۲۰ھ	الامام القاضی سلیمان بن ظلف الباجی، متوفی ۴۹۴ھ	لمفتی شرح مؤطلاً امام ناک
دارالكتب العلمیہ، بیروت ۱۴۲۵ھ	شمس الدین محمد بن عمران الحسنی، متوفی ۹۵۶ھ	شرح الجخاری للسفری
دارالقادری، بیروت ۱۴۱۸ھ	امام پدر الدین ابو محمد محمود بن احمد عینی، متوفی ۸۵۰ھ	عدمۃ القاری
فرید بک اشال لاہور ۱۴۲۱ھ	علامہ مفتی شریف الحنفی محدث مجیدی، متوفی ۱۴۲۰ھ	مزحةۃ القاری
دارالكتب العلمیہ، بیروت ۱۴۲۰ھ	امام حافظ احمد بن علی بن حیر عقلانی، متوفی ۸۵۲ھ	فتح الباری
دارالقادری، بیروت ۱۴۱۴ھ	علامہ معاذی بن سلطان قاری، متوفی ۱۰۱۴ھ	مرقاۃ المذاق
دارالكتب العلمیہ، بیروت ۱۴۲۲ھ	علامہ محمد عبد الرؤوف مناوی، متوفی ۱۰۳۱ھ	فیض القدری
کوئٹہ ۱۳۳۲ھ	شیخ حقیق عبدالحق محدث دہلوی، متوفی ۱۰۵۲ھ	اشعة الملجمات
ضایاء القرآن پبلیکیشنز لاہور	حکیم الامت مفتی احمد یار خان، متوفی ۱۳۹۱ھ	مراقة النازح
دارالكتب العلمیہ بیروت ۱۴۱۷ھ	محمد بن عبد الباقی بن یوسف زرقانی، متوفی ۱۱۲۲ھ	شرح العلامۃ الزرقانی
دارالكتب العلمیہ بیروت ۱۴۱۹ھ	عبد الرحمن بن محمد بن سلیمان کلپیوی، متوفی ۱۰۷۸ھ	جحیج الانہر
دارالعرف، بیروت ۱۴۲۰ھ	علاۃ الدین محمد بن علی حنفی، متوفی ۱۰۸۸ھ	دُریٰ تخار
دارالعرف، بیروت ۱۴۲۰ھ	محمد امین ابن عابدین شامی، متوفی ۱۲۵۲ھ	رُواۃ تخار
رضافاؤنڈیشن، لاہور ۱۴۱۸ھ	اطلی حضرت امام احمد رضا خان، متوفی ۱۳۴۱ھ	فَادِی رَحْمَوْیہ (محرج)
مکتبۃ المدیینہ، باب المدینۃ کراچی	مفتی محمد محدث عظی، متوفی ۱۳۶۷ھ	بہماشریت
رضافاؤنڈیشن، کراچی ۱۴۱۷ھ	علام محمد احمد مصباحی اظفی، علامہ عبد الرحیم نعمانی مصلبی، مولانا مقبول احمد ساکن مصباحی،	جهان مفتی عظم
مکتبۃ المدیینہ، باب المدینۃ کراچی	شہزادہ اعلیٰ حضرت محمد مصطفیٰ رضا خان، متوفی ۱۴۰۲ھ	املفو ظا (ملفوظات اعلیٰ حضرت)
شہزادہ اعلیٰ حضرت محمد مصطفیٰ رضا خان، متوفی ۱۴۰۲ھ	شہزادہ اعلیٰ حضرت محمد مصطفیٰ رضا خان، متوفی ۱۴۰۲ھ	فتویٰ مصطفیٰ یہ
مکتبۃ المدیینہ، باب المدینۃ کراچی	امیر ایامست علامہ محمد الیاس عطار قادری مدظلہ العالی	کفریٰ کلمات کے بارے میں
دارالكتب العلمیہ، بیروت ۱۴۲۲ھ	ابو عمر یوسف عبد اللہ طبی، متوفی ۵۴۶۳ھ	سوال جواب
دارالكتب العلمیہ، بیروت ۱۴۱۷ھ	عز الدین ابو الحسن علی بن محمد الجزری، متوفی ۶۳۵ھ	الاستیعاب فی معرفۃ الاصحاب

تاجُ العُلَمَاءِ (علم والوں کے تاج)	حضرت علامہ مولانا عمر نجمی علیہ رحمۃ اللہ الغنی
رئیسُ التحریر (تحریر کے باوشاہ)	حضرت علامہ مولانا ارشد القادری علیہ رحمۃ اللہ الوالی
خطیب پاکستان (پاکستان کے نامور خطیب)	حضرت علامہ محمد شفیع اوکاڑوی علیہ رحمۃ اللہ القوی
فیض ملت (قوم کو فیض دینے والے)	حضرت علامہ مولانا فیض احمد اویسی علیہ رحمۃ اللہ القوی
استادُ الفقہاء (علم فقہ جانے والوں کے استاد)	حضرت علامہ مفتی عبد الرزیم بستوی علیہ رحمۃ اللہ القوی
امیرِ اہل سنت (سنیوں کا امیر، رہنمای)	حضرت علامہ مولانا محمد الیاس عطا قادری دامت برکاتہم العالیہ
مفتشِ دعوتِ اسلامی (دعوتِ اسلامی کے مفتش)	مفتش فاروق عطاری علیہ رحمۃ اللہ الوالی

## اُلِیٰم جاہل کو پہچانتا ہے ماگر جاہل اُلِیٰم کو نہیں

ہجڑتے ساییڈونا اسماعیل بُرْدُرُوكُھ منانوی علیہ رحمۃ اللہ القوی  
“فِی جُنُلِ کَدِیر” مें نک़ل فرماتے ہیں :

أَعْلَمُ يَعْرُفُ الْجَاهِلَ لِإِنَّهُ كَانَ جَاهِلًا وَالْجَاهِلُ  
لَا يَعْرُفُ الْعَالَمَ لِإِنَّهُ لَمْ يَكُنْ عَالَمًا

یا’ نی اُلِیٰم جاہل کو پہچانتا ہے کیونکی (ہوسوںے  
یہ علم سے پہلے) وہ بھی جاہل تھا لیکن جاہل اُلِیٰم  
کو نہیں پہچانتا کیونکی وہ کभی اُلِیٰم نہیں رہا ।

(فیض القدیر، ۳/۱۱)

फ़ेहरिस

उन्वान	संफ़ाल	उन्वान	संफ़ाल
इस किताब को पढ़ने की "11 नियतें"	3	रिज़क में बरकत हो जाती	24
दुरुद पढ़ने वाले का नाम बारगाहे		लफ़्ज़ "मुहम्मद" के बारे में ईमान अफ़्रोज़ मदनी	
रिसालत में पेश किया जाता है	6	फूल	24
नाम पूछा करते	6	"मुहम्मद" नाम रखा	28
नाम बच्चे के लिये पहला तोहफ़ा है	7	لَدُكْكَةٌ لَّا يَنْهَا	28
क्रियामत के दिन नाम से पुकारा जाएगा	9	बे अदबी न होने पाए	29
अपने कच्चे बच्चों का भी नाम रखें	9	आ'ला हज़रत का तरीक़ा कर	29
बच्चा फैल हो जाए तो ?	10	आशिके आ'ला हज़रत की अदा	29
नाम कब रखें ?	11	1000 डॉलर इन्झ़ाम	30
नाम कौन रखेगा ?	11	पुकारा जाने वाला नाम रखने की एक अहम एहतियात	31
मुआश़ेरे में नाम रखने के मुख्लिफ़ अन्दाज़	12	मुप्तिये आ'ज़म ने इस्लाह फ़रमाई	31
नाम कैसा होना चाहिये ?	13	बेटे का नाम मुहम्मद रखो तो उस की इज़्ज़त करो	32
कहीं हुब्बे जाह तो नहीं ?	14	नाम बदल दिया	33
नाम रखते बक्त अच्छी अच्छी नियतें कर लीजिये	14	मैं बे बुझ था	34
<b>अल्लाह</b> ﷺ के पसन्दीदा नाम	15	ऐसी सूत में "मुहम्मद" पर दुरुदे पाक नहीं लिखा जाएगा	34
"अब्दुर्रह्मान" और "अब्दुल्लाह" नाम		"मुहम्मद नबी, अहमद नबी" नाम न रखा जाए	35
मुकम्मल बोलने की आदत बनाएं	15	"मुहम्मद बाख़ा, अहमद बाख़ा" नाम रखना	
"अब्दुल्लाह" नाम रखा	16	जाइज़ है	36
एक "जिन" का नाम "अब्दुल्लाह" रखा	17	"गुलामे मुहम्मद, गुलामे सिद्दीक़" नाम रखना जाइज़ है	36
अब्दुर्रह्मान नाम रखा	18	"अब्दुल मुस्तफ़ा, अब्दुल्लाह" नाम रखना जाइज़ है	36
तुम "अबू राशिद अब्दुर्रह्मान" हो	18	"यासीन, ताहा" नाम रखना मन्थ है	37
अपने बेटे का नाम अब्दुर्रह्मान रखो	19	"गफुरुद्दीन" नाम रखना मन्थ है	37
ज़रूरी वज़ाहत	20	किसी बुजुर्ग को क़्यूमे ज़मां कहना कैसा ?	37
अस्पाए इलाहिया के साथ नाम रखने के मद्दी फूल	21	आदी को क़्यूम, कुहूस और हमाम कह कर न पुकारिये	38
"जब्बार" नाम तबदील कर के "अब्दुल जब्बार" रखा	22	अब्दुल कादिर को क़ादिर कहना कैसा ?	39
नामे मुहम्मद की बरकतों पर मुस्तमिल 6 फ़ारमाने मुस्तमिल	23	"अब्दुल क़्यूम" नाम रखा	40

उन्वान	संफ़़दा	उन्वान	संफ़़दा
बुजुगनि दीन से नाम रखवाना	40	अवलाद न होने की सूरत में भी कुन्यत रखना	57
बच्चे का नाम “अब्दुल्लाह” रखा	41	अपने बच्चों की कुन्यत रखें	58
“इब्राहीम” नाम रखा	42	कुन्यत याद करने की बरकत	59
“अब्दुल मलिक” नाम रखा	42	कुन्यत शरीआत के मुताबिक़ होनी चाहिये	60
“सिनान” नाम रखा	42	बडे बेटे या बेटी के नाम पर कुन्यत इस्खियार	
“मुसरिख” नाम रखा	43	करना बेहतर है	61
“यहूया” नाम रखा	44	हज़रते सच्चियदुना आदम ﷺ की कुन्यत	61
हज़रते सच्चियदुना यहूया ﷺ का नाम		कुन्यत अतः फ़रमाया करते	62
किस ने रखा ?	44	हज़रते उपमाने ग़र्नी ﷺ को कुन्यत अतः फ़रमाइ	63
“मरयम” नाम अतः फ़रमाया	45	औरत भी अपनी कुन्यत रखे	63
पीर खाने से नाम अतः हुवा	45	मदीने के पहले बच्चे के बालिद की कुन्यत	64
लोगों के बुरे नाम रखना	46	बेटी के नाम पर भी कुन्यत रखी जा सकती है	64
फ़िरिस्ते ला’न न करते हैं	48	अमीरे अहले सुन्त और कुन्यत	65
किसी को बे वुकूफ़ या उल्लू कहने का हुक्म	48	कुन्यत की सुन्त जिन्दा कीजिये	66
महब्बत भरे नाम से पुकारना	50	जब किसी का नाम याद न हो तो कैसे पुकारते ?	67
तुम “सफ़ीना” हो	51	पुकारने और ज़िक्र करने का अन्दाज़	68
लक़ब किसे कहते हैं ?	51	जनत में मदीना आका ﷺ की	
तख़ल्लुस की ता’रीफ़	52	रफ़ाक़त पाने का नुस्खा	69
12 अकाबिरीने अहले सुन्त के तख़ल्लुस	52	सरकारे मदीना ﷺ को पुकारना	69
महब्बत बढ़ाने का सबब	53	सहाबए किराम ﷺ का पुकारने का अन्दाज़	70
अच्छे नाम और कुन्यत से पुकारो	53	या रसूलल्लाह क्यूं न कहा ?	71
कुन्यत किसे कहते हैं ?	54	आ’ला हज़रत ﷺ का अन्दाज़	72
कुन्यत में “अबू” के मा’ना	54	अमीरे अहले सुन्त का मा’मूल	72
अबू हुसैरा (छोटी बिल्ली वाले)	54	अभियाए किराम ﷺ को पुकारना	73
अबू तुग़ब (मिट्टी वाले)	55	सहाबए किराम ﷺ को पुकारना	74
अबू ज़र (च्यूटियों वाला)	56	बुजुगनि दीन ﷺ को पुकारना	75
कुन्यत की अहमियत	57	उ-लमाए किराम व मुफितयाने इज़्जाम को पुकारना	76

उन्वान	सफ़ा	उन्वान	सफ़ा
दीनी असतिज़ा को पुकारना	77	बस्तियों और अलाकों के नाम भी तब्दील	
सादाते किराम को पुकारना	78	फ़रमा देते	106
बुड़े इस्लामी भाइयों को पुकारना	79	नाम के साथ अलाके का नाम भी बदल दिया	106
मां-बाप को पुकारना	79	चश्मे का नाम तब्दील फ़रमा दिया	108
रिश्तेदारों को पुकारना	79	कुंवे का नाम तब्दील फ़रमा दिया	108
मियां बीबी का एक दूसरे को बुलाना	80	"क़दिरी अगरबत्ती" से "कौमी अगरबत्ती"	109
हम उम्रों को बुलाना	82	लिबास का भी नाम रखते	110
बिला ज़रूरत दो तीन नाम मिला कर न रखें	83	चश्मे का नाम रखा	110
नाम रखने में मुज़क्कर और मुअन्नष का भी ख़्याल रखें	83	रहमते कौनैन <small>كُلَّ اللَّهُ أَعْلَمْ عَنِيهِ وَالْبَشَّرُونَ</small> की मुबारक	
गैर मुस्लिमों के लिये मध्यूस नाम न रखिये	83	सुवारियों के नाम	111
बुरे नाम का अपर	84	मुबारक बकरियों के नाम	111
अच्छे नाम वाले से काम लिया	84	हुज़ूरे अनवर <small>كُلَّ اللَّهُ أَعْلَمْ عَنِيهِ وَالْبَشَّرُونَ</small> की मुख़तलिफ़	
नाम तब्दील फ़रमा दिया करते	86	हुज़ूर <small>كُلَّ اللَّهُ أَعْلَمْ عَنِيهِ وَالْبَشَّرُونَ</small> के मुबारक बरतनों	
बुरे नाम को बदल देते *	87	के नाम	112
वोह बा'ज़ नाम जो सरकारे मदीना <small>كُلَّ اللَّهُ أَعْلَمْ عَنِيهِ وَالْبَشَّرُونَ</small>		बद शुगूनी की वजह से नाम न बदलें	112
ने तब्दील फ़रमा दिये	88	तारीखी नाम रखना	113
अब तक सख़्ती पाई जाती है	95	कुरआन से नाम निकालना	114
जिन नामों से अपनी ता'रीफ़ निकलती हो वोह न रखे जाएं		नेक शख्स के नाम पर नाम रखने की बरकत	116
अमरे अहले सुनत का खुद को फ़ूरी अहले सुनत कहा	96	नेक लोगों के नाम पर नाम रखो	116
बुरा नाम तब्दील कर के जुरैरिया रखा	98	नवियों के नाम पर नाम रखो	117
जिन नामों में कम तज़किया हो वोह रख सकते हैं	99	महबूबाने खुदा के नामों पर नाम रखना	118
तीन क़िस्म के नाम न रखें	102	मुस्तहब है	118
येह नाम रखना बेहतर नहीं है	103	नवासों का नाम हसन और हुसैन रखा	119
मन्ध करने की ख़ाहिश थी लेकिन मन्ध नहीं किया	104	अपने शहज़ादे का नाम हज़रते इब्राहीम <small>كَلِيلُ اللَّهِ</small>	
बस्ती का नाम पसन्द आता तो खुश होते	105	के नाम पर रखा	120
		खुलासा किताब	120

उन्वान	सफ़ा	उन्वान	सफ़ा
बच्चों और बच्चियों के लिये 538 प्यारे प्यारे नाम	122	मुकद्दस नाम	146
बच्चों के लिये 391 प्यारे प्यारे नाम	122	सरकारे मदीना ﷺ की 4	
“अूब्द” की इजाफ़त के साथ 59 रहमत भरे नाम	122	शहजादियों के मुबारक नाम	147
सरकारे मदीना ﷺ का नाम	122	सरकारे मदीना ﷺ की 3	
अक्दस	125	मुकद्दस कनीजों के नाम	147
शाहे ख़ैरुल अनाम ﷺ के		सरकारे मदीना ﷺ की 4	
119 बरकत वाले नाम	126	नवासियों के नाम	148
25 अम्बियाएं किराम ﷺ के		59 सहाबियात رضي الله تعالى عنها	
अज़्मत वाले नाम	132	के नाम	148
शाहे अनाम ﷺ के 3 शहजादों के मुबारक नाम	132	49 दीगर बुजुर्ग ख़वातीन के नाम	151
सरकारे मदीना ﷺ के 5 नवासों के मुकद्दस नाम	134	तक़ीबन 16 मुतफ़रिक़ ज़नाना नाम	156
अंशरए मुवश्शारा के प्यारे प्यारे नाम	134	7 अम्बियाएं किराम ﷺ	
सहाबए किराम ﷺ के 135 पाकीज़ा नाम		की कुन्यतें	157
ताबेर्इन व बुजुगाने दीन के 27 मुबारक नाम	135	71 सहाबए किराम ﷺ की	
निस्वतों वाले 8 मुतफ़रिक़ नाम	142	कुन्यतें	158
बच्चियों के लिये 150 प्यारे प्यारे नाम	145	13 सहाबियात رضي الله تعالى عنها की	
सरकारे मदीना ﷺ की अम्मी जान का मुबारक नाम	146	कुन्यतें	162
सरकारे मदीना ﷺ की रज़ाई माओं के नाम	146	दीगर 65 बुजुगाने दीन की कुन्यतें	163
11 उम्महातुल मोअमिनीन رضي الله تعالى عنها के	146	18 सहाबए किराम ﷺ के	
		अल्क़ाबात	167
		9 मशहूर ताबेर्इन व मुहद्दिशीन के अल्क़ाबात	169
		9 मशहूर बजुगाने दीन के अल्क़ाबात	169
		पाक व हिन्द के 31 मशहूर उल्लमाएं किराम के अल्क़ाबात	
		माख़ज़ो मराजेअ	170
		याद दाशत सफ़ा बराए मुतालआ	173
			180

याद द्राश्त

दौराने मुतालआ ज़स्करतन अन्डर लाइन कीजिये, इशारात लिख कर सफहा नम्बर नोट फ्रमा लीजिये । **इल्म** में तरक्की होगी ।

الحمد لله رب العالمين والصلوة والسلام على سيد المرسلين أَنَّا بَعْدَ فَاعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَنِ الرَّجِيمِ شَهِادَةُ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

## सुन्नत की बहारें

**تَبَلَّغَ كُورَآنُو سُونَّتَ كَيْ اَذَلَّمَانِي तद्दीक दा'वते**  
 इस्लामी के महके महके मदनी माहोल में ब कषरत सुन्नतें सोखी और सिखाई जाती हैं, हर जुमा'रात इशा की नमाज़ के बा'द आप के शहर में होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ में रिजाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी नियतों के साथ सारी रात गुज़ारने की मदनी इलिजाहै, आशिकाने रसूल के मदनी काफिलों में ब नियते घबाब सुन्नतों की तर्कियत के लिये सफ़र और रोजाना “फ़िक्रे मदना” के ज़रीए मदनी इन्डियामात का रिसाला पुर कर के हर मदनी माह के इबतिदाई दस दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के ज़िम्मेदार को ज़म्म करवाने का मा'मूल बना लीजिये, **أَنْ شَاءَ اللَّهُ فَعَلَ** इस की बरकत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और ईमान की हिकाजत के लिये कुढ़ने का ज़ेहन बनेगा।

हर इस्लामी भाई अपना येह ज़ेहन बनाए कि “मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह की कोशिश करनी है।” **أَنْ شَاءَ اللَّهُ فَعَلَ** अपनी इस्लाह की कोशिश के लिये “मदनी इन्डियामात” पर अमल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह की कोशिश के लिये “मदनी काफिलों” में सफ़र करना है। **أَنْ شَاءَ اللَّهُ فَعَلَ**



ISBN 978-969-631-382-3



0101940



**MAKTABATUL MADINA**

421, URDU MARKET, MATYA MAHAL, JAMA MASJID

DELHI - 110006, PH : 011-23284560

email : maktabadelhi@gmail.com

web : [www.dawateislami.net](http://www.dawateislami.net)